सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 202, नई दिल्ली, सोमवार 29 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

03 किसने किया था ट्रैफिक सिग्नल का आविष्कार, क्या है इतिहास....

06 पृथ्वी की 'पवन' गुप्त रूप से चंद्रमा को जंग दे रही है

08 कमीश्नरेट पुलिस अमृतसर ने सक्रिय बी.के.आई. मॉड्यूल का पर्दाफाश किया

राजीव वर्मा दिल्ली के नए मुख्य सचिव नियुक्त, 1 अक्टूबर को संभालेंगे कार्यभार एजीएमयूटी कैडर के आईएएस अधिकारी चंडीगढ़ और पुडुचेरी के मुख्य सचिव रह चुके हैं

संजय बाटला

नई दिल्ली। गृह मंत्रालय (एमएचए) ने रविवार को 1992-एजीएमयूटी (अरुणाचल प्रदेश-गोवा-मिजोरम और केंद्र शासित प्रदेश) कैडर के आईएएस अधिकारी राजीव वर्मा को दिल्ली का नया मुख्य सचिव नियुक्त किया। वह 1 अक्टूबर से कार्यभार संभालेंगे। वर्मा पिछले साल से चंडीगढ़ के मुख्य सचिव के रूप में कार्यरत हैं। इससे पहले, वह पुडुचेरी के मुख्य सचिव के पद पर तैनात थे।

आईआईटी से एमटेक की डिग्री प्राप्त वर्मा, धमेंद्र की जगह लेंगे, जिन्होंने पिछले सितंबर में दिल्ली के मुख्य सचिव का पदभार संभाला था। वह इसी महीने सेवानिवृत्त हो रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के मूल निवासी, उन्होंने 2018 से 2022 तक दिल्ली सरकार में वित्त एवं राजस्व सचिव के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने दिल्ली के परिवहन विभाग में भी महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। उन्होंने राजधानी के अन्य विभागों में सचिव और अतिरिक्त सचिव स्तर के पदों पर भी कार्य किया है।

दिल्ली के वित्त विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ₹वह बहुत अच्छे अधिकारी हैं और नियमों के साथ-साथ व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी चलते हैं।

अपने तीन दशक लंबे नौकरशाही करियर के दौरान, वर्मा ने केंद्र सरकार में रक्षा मंत्रालय, ऊर्जा मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में अन्य प्रमुख पदों पर भी कार्य किया है।

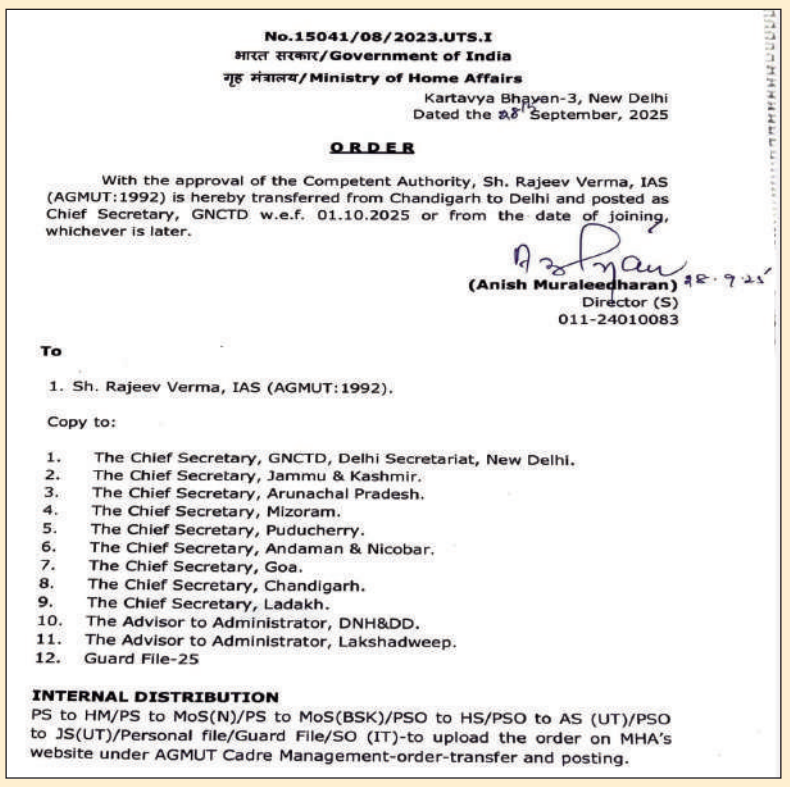

No.15041/08/2023.UTS.I
भारत सरकार/Government of India
गृह मंत्रालय/Ministry of Home Affairs
Kartavya Bhawan-3, New Delhi
Dated the 28th September, 2025

ORDER

With the approval of the Competent Authority, Sh. Rajeev Verma, IAS (AGMUT:1992) is hereby transferred from Chandigarh to Delhi and posted as Chief Secretary, GNCTD w.e.f. 01.10.2025 or from the date of joining, whichever is later.

(Anish Muraleedharan) 28.9.25
Director (S)
011-24010083

To

1. Sh. Rajeev Verma, IAS (AGMUT:1992).

Copy to:

1. The Chief Secretary, GNCTD, Delhi Secretariat, New Delhi.
2. The Chief Secretary, Jammu & Kashmir.
3. The Chief Secretary, Arunachal Pradesh.
4. The Chief Secretary, Mizoram.
5. The Chief Secretary, Puducherry.
6. The Chief Secretary, Andaman & Nicobar.
7. The Chief Secretary, Goa.
8. The Chief Secretary, Chandigarh.
9. The Chief Secretary, Ladakh.
10. The Advisor to Administrator, DNH&DD.
11. The Advisor to Administrator, Lakshadweep.
12. Guard File-25

INTERNAL DISTRIBUTION

PS to HM/PS to MoS(N)/PS to MoS(BSK)/PSO to HS/PSO to AS (UT)/PSO to JS(UT)/Personal file/Guard File/SO (IT)-to upload the order on MHA's website under AGMUT Cadre Management-order-transfer and posting.

गुंडा टैक्स पर रोक लगे, परिवहन हो स्वच्छ व उन्मुक्त वातावरण में – आर.जी.टी.ए. अध्यक्ष

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला। परिवहन सिंडिकेट के कारण राउरकेला से खिसकता बाजार, भविष्य के लिए उचित संकेत नहीं

राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन (आर.जी.टी.ए.) की एक आवश्यक बैठक आज राउरकेला में आयोजित हुई, जिसमें शहर एवं आसपास के परिवहन व्यवसायियों ने सिंडिकेट द्वारा चलाए जा रहे अवैध वसूली (गुंडा टैक्स) के विरुद्ध गहरी चिंता व्यक्त की।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. राजकुमार यादव (राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा - ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी एवं अध्यक्ष, आर.जी.टी.ए.) ने कहा—

> "परिवहन व्यवसायी जहाँ भारी-भरकम बैंक ऋण लेकर मुश्किल से 1–2 प्रतिशत लाभ कमा पाते हैं, वहीं कुछ यूनियनें आपस में मिलकर सिंडिकेट बनाकर अवैध वसूली कर रही हैं। इसके कारण राउरकेला जैसी प्रमुख लोहा मंडी का बाजार खिसककर क्योझर, रायगढ़, झारसुगुड़ा और बरही जैसे स्थानों पर स्थानांतरित हो चुका है। यह स्थिति व्यापार और स्थानीय अर्थव्यवस्था दोनों के लिए बेहद चिंताजनक है।"

बैठक में लिए गए प्रमुख निर्णय के तहत

* इस अवैध वसूली और सिंडिकेट प्रथा के खिलाफ प्रशासन को लिखित शिकायत प्रस्तुत की जाएगी।
* संलग्न सभी विभागों और प्राधिकरणों को पत्र लिखकर आवश्यक कार्रवाई की अपील की जाएगी।
* आने वाले समय में सिंडिकेट से जुड़े लोगों के साथ कार्य नहीं किया जाएगा।
* जो व्यवसायी इस सिंडिकेट को बढ़ावा देंगे और अनैतिक दरों पर गाड़ियाँ लेंगे, उन्हें भी आर.जी.टी.ए. के सदस्य ट्रांसपोर्टर अपनी गाड़ियाँ उपलब्ध नहीं कराएँगे।
* परिवहन व्यवसाय को स्वच्छ, निष्पक्ष और उन्मुक्त वातावरण में आगे बढ़ाने हेतु सामूहिक संघर्ष किया जाएगा।

राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर एसोसिएशन दशकों से पूरे भारत में परिवहन कार्यादेशों का सफलतापूर्वक निर्वहन करता आ रहा है। किंतु पिछले 3–4 वर्षों में कुछ यूनियनें सिंडिकेट का रूप लेकर स्थानीय गाड़ियों के हक की आड़ में प्रतिदिन 200–300 तक की वसूली सीधे व्यवसायियों और संयंत्रों से कर रही हैं।

दुर्भाग्यवश, संबंधित विभागों को इस अवैध प्रथा की जानकारी होने के बावजूद, लिखित शिकायत न होने से कार्रवाई अब तक नहीं हो पाई।

बैठक में उपस्थित सदस्यगण के रूप

में राममेहर शर्मा, बलविंदर सिंह बिल्लू, दिलीप अग्रवाल, अंबुज नायर, मोहम्मद सलीम, रामानंद झा, जसविंदर सिंह गोल्डी, शंकर लाल शर्मा, राकेश जयसवाल मुन्ना, बलजींदर सिंह बिट्टू, रामाशंकर प्रसाद, नंदकिशोर सिंह, चकित महाजन, संजीत सिंह, अंबुज शुक्ला, श्याम प्रसाद, संजय अग्रवाल, बिकास सिंह सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

बैठक का समापन संजीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत कर किया।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेबसाइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम्-20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम्-काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय

उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार).
बोधन

28 सितंबर 2025, (रविवार)
षष्ठी आमंत्रण और अधिबास

29 सितंबर 2025, (सोमवार)
सप्तमी पूजा

30 सितंबर 2025, (मंगलवार)
अष्टमी और संधि पूजा

1 अक्टूबर 2025, (बुधवार)
नवमी पूजा

2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार)
दशमी पूजा और विसर्जन

पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,

प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,

भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।

संध्या आरती- 7.00 बजे

श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थान:

कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

You're Invited!

Anandomela Food Fiesta 2025

Celebrate the spirit of Durga Puja with food, fun, and festivity!

Join us at our much-awaited Anandomela Food Fiesta, where the aroma of tradition meets the joy of celebration! Bring your favorite homemade delicacies, share your culinary skills, and enjoy a vibrant evening with your community.

Date: 28.09.2025
Venue: KALI BARI (uttam nagar)
Time: 7.00PM

Whether you're a seasoned cook or just love feeding people, we welcome your participation with open arms!

For stall bookings and participation details,
Please contact:
Mrs.Pinki Kundu- 7053533169
Mrs.Tithi Ghosh- 9013088489

Let's make this Durga Puja even more delicious and memorable!

Regards
Jayant Dey
General Secretary

तानाशाही ताकतों के खिलाफ संघर्ष तेज करने के आह्वान के साथ जलेस का राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

बांदा से लौटकर पूर्णचंद्र रथ

देश में सिर उठा रही नव-फासीवादी और तानाशाही ताकतों के खिलाफ लेखक समुदाय और संस्कृतिकर्मियों के संघर्ष को तेज करने के आह्वान के साथ जनवादी लेखक संघ का 11वां राष्ट्रीय सम्मेलन 19-21 सितंबर 2025 को उत्तरप्रदेश के बांदा में संपन्न हुआ। बड़ोखर खुर्द गांव में प्रेम सिंह की बगिया सभागार में आयोजित इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से आए हिंदी व उर्दू के लगभग 250 लेखकों ने इसमें भाग लिया।

सम्मेलन का उदघाटन देश के मशहूर सामाजिक कार्यकर्त्ता, कवि, वैज्ञानिक और फिल्मकार गौहर रजा ने किया। अपने सारगर्भित उदबोधन में उन्होंने कहा कि : "हम लेखक हैं, तो हर शब्द की अपनी एक जिम्मेदारी है। दुनिया भर के लेखकों ने इसे निभाया है। शब्दों की ताकत से सरकारें काँप जाती हैं। लेखक का समाज से शुरू से ही गहरा रिश्ता रहा है। साहित्य विचारों के टकराहट की यात्रा है, जिसमें समानता का द्वंद शामिल है।₹ उल्लेखनीय है कि ये वही गौहर रज़ा हैं, जिनका आईआईटी बीएचयू में विज्ञान, साहित्य और चेतना का संगम विषय पर होने वाला संबोधन संघी गिरोह ने उन्हें देशद्रोही कहते हुए रुकवा दिया है। जनवादी लेखक संघ ने कहा है कि यह वही अघोषित आपातकाल है, जहां बोलना मना है और लेखक समुदाय को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना है, जिसका आह्वान जलेस के राष्ट्रीय सम्मेलन ने किया है।

इस उदघाटन सत्र की अध्यक्षता चंचल चौहान, रेखा अवस्थी और इब्बार रब्बी के अध्यक्ष मंडल ने की और संचालन महासचिव संजीव कुमार ने किया। जन संस्कृति मंच के महासचिव मनोज कुमार सिंह और प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य खान अहमद फारुख ने भी सम्मेलन को अपनी शुभकामनाएं दीं। सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्त्ता और पूर्व सांसद सुभाषिनी अली ने विशिष्ट वक्ता के रूप में सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि उर्दू और हिंदी के भीतर तीन तरह के लेखक मौजूद हैं। एक वे जो भ्रमों के दायरे में हैं, दूसरे वे जो प्रगतिशील ख्वाब देखने वाले हैं और तीसरे वे जो संघर्षों में हैं। सच तो यह है कि हमने शब्दों की जिम्मेदारी नहीं निभाई। उन्होंने कहा कि बोलियों का महत्व भाषा की व्यापकता को बढ़ाता है। विचार व्यक्त करने की आजादी हमारे सरोकारों और संस्कारों की अभिव्यक्ति है। समानता हमारी सबसे कीमती धरोहर और जरूरत है।

जलेस राष्ट्रीय सम्मेलन के तीनों दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम और उत्तेजक विचार सत्रों में गंभीर विचार-विमर्श से भरपूर रहे। जहां पहले दिन का समापन स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नौटंकी से हुआ, वहीं समापन में बुंदेलखंड का शानदार देवारी नृत्य प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन के कविता सत्र की शुरुआत केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' पर कथक नृत्य से हुई, जिसे कथक गुरु श्रद्धा निगम की उपस्थिति में उनकी छात्राओं द्वारा पेश किया गया था। उसके बाद देश भर के आए कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सम्मेलन में 'अघोषित आपातकाल के हमले और प्रतिरोध' विषय पर विचार सत्र आयोजित हुआ, जिसे शुभा, कवि संपत सरल, भंवर मेघवंशी और नीतीशा खलको ने संबोधित किया। 'सरोकार का सिनेमा' विषय पर संजय जोशी ने सिनेमा के जन इतिहास से लेकर प्रतिरोध की अभिव्यक्ति पर चर्चा की और प्रोजेक्टर से अपनी प्रस्तुति दी।

सम्मेलन के सांगठनिक सत्र में जलेस महासचिव संजीव कुमार ने सांगठनिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में देश-दुनिया की राजनीति और इसके साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र पर पड़ रहे प्रभावों का विस्तृत विवेचन किया गया था। रिपोर्ट में रेखांकित किया गया है कि हमारे देश में मोदी राज में संविधान और उसके मूल्यों, नागरिक अधिकारों और मानवाधिकारों, प्रगतिशील और वैज्ञानिक सोच, संवैधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता और स्वतंत्रता, शिक्षा की वैज्ञानिक अंतर्वस्तु पर किस तरह हमले किए जा रहे हैं, जिसके चलते देश में नफरती वातावरण का निर्माण हो रहा है और देश की धर्मनिरपेक्ष बुनियाद कमजोर हो रही है। हमारी गंगा-जमुनी तहजीब पर हिंदुत्व की राजनीति के हमले के चलते सांस्कृतिक क्षेत्र में लेखक समुदाय के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का और इससे निपटने के उपायों का भी रिपोर्ट में जिक्र किया गया है। विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों के सार्थक और सकारात्मक बहस के बाद जो सुझाव सामने आए, उसे समाहित करते हुए रिपोर्ट सर्वसम्मति से पारित की गई। इस सम्मेलन में 11 प्रस्ताव भी पारित किए गए, जिनमें संवैधानिक मूलाधारों पर सतत हमलों के खिलाफ प्रस्ताव, अभिव्यक्ति की आज़ादी पर हमलों के ख़िलाफ़ प्रस्ताव, पाठ्यक्रमों के साम्प्रदायीकरण के विरुद्ध प्रस्ताव, लेबर कोड यानी गुलामी के दस्तावेज के विरोध में प्रस्ताव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रस्ताव, दलित समुदाय का उत्पीड़न तत्काल बंद करने, फिलिस्तीन की भयावह त्रासदी और उसके प्रति भारत का शर्मनाक रवैये के खिलाफ प्रस्ताव और साहित्य अकादमी के सचिव के निलंबन के लिए प्रस्ताव आदि शामिल हैं। इन प्रस्तावों के जरिए लेखक समुदाय और संस्कृतिकर्मियों से तानाशाही और नव-फासीवादी सत्ता द्वारा साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किए जा रहे हमलों का एकजुट होकर मुकाबला करने और कला और संस्कृति के क्षेत्र में प्रगतिशील, जनवादी और वैज्ञानिक नजरिए से रचनात्मक हस्तक्षेप का जोरदार आह्वान किया गया।

जलेस के राष्ट्रीय सम्मेलन ने आगामी सम्मेलन तक संगठन का काम करने के लिए नए पदाधिकारियों का भी चुनाव किया, जो इस प्रकार है : संरक्षक मंडल : मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, वकार सिद्दीकी, जीवन सिंह, मनमोहन और नरेन्द्र जैन

अध्यक्ष : चंचल चौहान

कार्यकारी अध्यक्ष : राजेश जोशी और संजीव कुमार

उपाध्यक्ष : इब्बार रब्बी, नमिता सिंह, रामप्रकाश त्रिपाठी, विष्णु नागर, डॉ. मृणाल, प्रह्लाद चंद्र दास, रेखा अवस्थी, नीरज सिंह, जवरी मल्ल पारख और हरीश चन्द्र पांडे

महासचिव : नलिन रंजन सिंह

संयुक्त महासचिव : बजरंग बिहारी तिवारी, संदीप मील और प्रेम तिवारी

सचिव : शुभा, अली इमाम ख़ान, राजीव गुप्त, हरियश राय, मनोज कुलकर्णी, बली सिंह, ख़ालिद अशरफ़, विनीताभ, बलवंत कौर, समीना खान

कोषाध्यक्ष : अशोक तिवारी

इसके साथ ही सम्मेलन में केंद्रीय कार्यकारिणी और केंद्रीय परिषद का भी चुनाव किया, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के हिन्दी-उर्दू लेखकों का प्रतिनिधित्व हैं। छत्तीसगढ़ से डॉ. सुखनन्दन सिंह 'ध्रुव', पूर्ण चन्द्र रथ (रायपुर) केंद्रीय कार्यकारिणी में और अजय चन्द्रवंशी (कवर्धा) और भास्कर चौधुरी (कोरबा) केंद्रीय परिषद के लिए निर्वाचित किए गए हैं। छत्तीसगढ़ से सम्मेलन में 25 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था।

रिपोर्टर स्वतंत्र पत्रकार और जनवादी लेखक संघ की छत्तीसगढ़ इकाई के सचिव है।

जब हम कोई अच्छा काम शुरू करते हैं या कर रहे होते हैं तो

हमारे मन में लोगों से "अच्छी प्रतिक्रिया" की आशा रहती है जिससे हमें उस काम को करने में प्रोत्साहन मिले। और यदि हमें 'बुरी प्रतिक्रिया' मिलती है तो हम हतोत्साहित हो जाते हैं। ध्यान रहे कि हतोत्साहित होने से पहले हमें यह देखने की आवश्यकता है कि यह प्रतिक्रिया दे कौन रहा है? अच्छे लोग तो अच्छे काम के प्रति अच्छी प्रतिक्रिया ही देते हैं। पर बुरे/दम्भी/पाखंडी, ईर्ष्यालु/क्रूर/कुटिल/कुविचारी/द्वेषी लोग, किसी भी अच्छे काम के प्रति सदैव बुरी प्रतिक्रिया ही देंगे। जब ऐसा हो तो हमें सदा प्रोत्साहित ही होना चाहिए यह समझकर कि हम सही मार्ग पर चल रहे हैं।

शक्तिशाली शत्रु के सामने नम्र होना बुद्धिमानी

एक बार महाराज युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा- भरतश्रेष्ठ ! राजा एक दुर्लभ राज्य को पाकर भी यदि सेना-खजाना आदि साधनों से रहित हो तो वह अपनेसे बल में सर्वथा बढ़े-चढ़े हुए शत्रु के सामने कैसे टिक सकता है ?

इसपर भीष्मजी ने कहा- युधिष्ठिर ! इस विषय में समुद्र और नदियों के संवादरूप प्राचीन इतिहास का उदाहरण दिया जाता है। एक समय की बात है, सरिताओं के स्वामी समुद्र ने सरिताओं से अपने मनका एक सन्देह इस प्रकार पूछा- 'नदियो ! मैं देखता हूँ, जब तुम लोगों में बाढ़ आती है तो बड़े-बड़े वृक्षों को जड़-मूल और डालियों सहित उखाड़कर तुम अपने प्रवाहमें बहा लाती हो, किंतु उनमें बेंत का कोई पेड़ नहीं दिखायी देता। बेंत का शरीर तो नहीं के बराबर - बहुत पतला होता है, उसमें कुछ दम भी नहीं होता और वह तुम्हारे खास किनारे पर जमता है; फिर भी तुम उसे न ला सकीं !

क्या कारण है? उसे कमजोर समझकर उपेक्षा तो नहीं कर देतीं? अथवा उसने तुम लोगों का कुछ उपकार तो नहीं किया है? क्यों बेंत का वृक्ष तुम्हारा तट छोड़कर नहीं आता ? इस विषय में मैं तुम सब लोगों का विचार जानना चाहता हूँ।'

यह सुनकर गंगाजी ने युक्तियुक्त, अर्थपूर्ण तथा दिल में बैठनेवाली बात कही- 'नाथ ! वे वृक्ष अपने स्थान पर अकड़कर खड़े रहते हैं, हमारे प्रबल प्रवाह के सामने सिर नहीं झुकाते, इस प्रतिकूल बर्ताव के कारण ही उन्हें अपना स्थान छोड़ना पड़ता है। किंतु बेंत ऐसा नहीं है। वह नदी के वेग को आते देखकर झुक जाता है, वह समय के अनुसार बर्ताव करना जानता है, सदा हमारे अधीन रहता है, अकड़ कर खड़ा नहीं होता; अतः अपने अनुकूल आचरण के कारण उसको स्थान छोड़कर यहाँ नहीं आना पड़ता। जो पौधे, वृक्ष या लता-गुल्म आदि हवा और पानी के वेग से झुक जाते तथा वेग शान्त होने पर सिर उठाते हैं, उनका कभी तिरस्कार नहीं होता।'

भीष्म जी कहते हैं- युधिष्ठिर ! इसी प्रकार जो राजा बल में बढ़े-चढ़े तथा विनाश करने में समर्थ शत्रु के पहले वेग को सिर झुकाकर नहीं सह लेता, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। जो बुद्धिमान् अपने तथा शत्रु के सार, असार, बल और पराक्रम को जानकर उसके अनुसार बर्ताव करता है, उसकी कभी पराजय नहीं होती। अतः जब शत्रु को बल में अपनेसे बहुत बढ़ा हुआ समझे तो विद्वान्‌पुरुष को बेंत की तरह नम्र हो जाना चाहिये। यही बुद्धिमानी का लक्षण है। नीति की यह बात मात्र राजाओं के लिये ही नहीं, सामान्य मनुष्य के लिये भी उतनी ही सत्य है।

नवरात्रि पूजन की प्रक्रिया पुनः स्पष्ट करती है कि सनातन वैदिक संस्कृति में मूर्ति पूजा नहीं की जाती है, वरन निराकार ईश्वरीय शक्ति की उपासना की जाती है,

जब हम घरों में घट स्थापना करते हैं तो वह ईश्वरीय शक्ति हमारे घरों में स्थापित घट में आविर्भूत होकर स्थापित होती है, और वही ईश्वरीय शक्ति अष्ट भुजा मातृ स्वरूप में हमारे सम्मुख आविर्भूत होती है जब हम उन्हें मूर्ति में आने का आवाहन करते हैं,

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयो अन्यः पिप्पलं स्वादु अत्ति, अनश्नन्न् अन्य, अभिचक्षीतिः।। -ऋग्वेद

वेदों में ईश्वर को हमारे सखा स्वरूप बताया गया है, वे हमारे अन्दर, हमारे साथ सदैव उपस्थित रहते हैं, जब जिस रूप में आवाहन करते हैं, उस रूप में आविर्भूत होते हैं,

जो ईश्वर घट में आविर्भूत होते हैं, जो ईश्वर पूजन किये जाने वाले श्रीविग्रह में आविर्भूत होते हैं, जो ईश्वर हमारे, हर जीव के अंदर स्थित हैं, वे एक निराकार शक्ति ही है।

विश्व हार्ट दिवस आज

आज हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां प्रदूषण, अनहेल्दी खान-पान, फिजिकल एक्टिविटी की कमी और स्ट्रेसफुल लाइफस्टाइल ने सेहत को गंभीर खतरे में डाल दिया है। खासकर युवाओं में दिल की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। हार्ट अटैक, स्ट्रोक और हार्ट फेलियर जैसी समस्याएं आज लाखों लोगों की जिंदगियां छीन रही हैं।

विश्व हार्ट दिवस का इतिहास

========================

दुनिया भर में हर साल 29 सितंबर को विश्व हृदय दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य मकसद लोगों को दिल की बीमारियों के बारे में बताना और उन्हें स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना है। यह दिन मनाने का विचार सबसे पहले विश्व हृदय महासंघ नामक एक संस्था के पूर्व अध्यक्ष एंटोनी बार्ड डी लूना को आया था। उन्होंने देखा कि बहुत सारे लोग दिल की बीमारियों से पीड़ित हैं। इसलिए उन्होंने दुनिया भर के लोगों को दिल की बीमारियों के बारे में बताने के लिए एक विशेष दिन मनाने का सुझाव दिया। साल 2000 में पहली बार विश्व हृदय दिवस मनाया गया था। पहले यह दिन सितंबर महीने के आखिरी रविवार को मनाया जाता था, लेकिन बाद में इसे 29 सितंबर को मनाने का फैसला किया गया।

विश्व हार्ट दिवस का महत्व

======================

आजकल हम बहुत ज्यादा काम करते हैं, तनाव में रहते हैं, और सही तरह का खाना नहीं खाते हैं। इस वजह से बहुत सारे लोग दिल की बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं। दुनियाभर में हर साल लाखों लोग दिल की बीमारी की वजह से मर जाते हैं। कोरोनावायरस के बाद से तो ये समस्या और भी बढ़ गई है। पहले तो बड़े लोग ही दिल की बीमारी से ज्यादा परेशान होते थे, लेकिन अब तो छोटे-छोटे बच्चे भी इससे पीड़ित हो रहे हैं। इसीलिए, हर साल 29 सितंबर को विश्व हृदय दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मकसद लोगों को हार्ट हेल्थ के प्रति जागरूक करने का है, जिससे सेहत को बेहतर किया जा सकता है।

विश्व हृदय दिवस का उद्देश्य क्या है?

===========================

विश्व हृदय दिवस का मुख्य उद्देश्य हृदय रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है, यह दिन लोगों को हृदय स्वास्थ्य को लेकर शिक्षित करने का एक अवसर है, हृदय रोगों की रोकथाम और प्रबंधन के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, यह एक वैश्विक पहल है जिसमें सभी आयु वर्ग के लोगों को शामिल किया जाता है, इसके माध्यम से हम स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

हृदय स्वास्थ्य को कैसे बनाए रखें?

===========================

हृदय स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम करना आवश्यक है, संतुलित आहार, जिसमें फल, सब्जियां, और पूरे अनाज शामिल हों, बहुत महत्वपूर्ण है, तनाव प्रबंधन के लिए योग और ध्यान जैसे उपाय अपनाने चाहिए, नियमित स्वास्थ्य जांच से किसी भी समस्या का समय पर पता लगाया जा सकता है, स्वस्थ आदतों को अपनाकर हम अपने हृदय को सुरक्षित रख सकते हैं।

थाइरॉइड का सफल कुदरती और देसी उपचार...

थाइरॉइड को साइलेंट किलर माना जाता है क्योंकि इस बीमारी के लक्षण बहुत धीरे-धीरे पता चलते हैं।

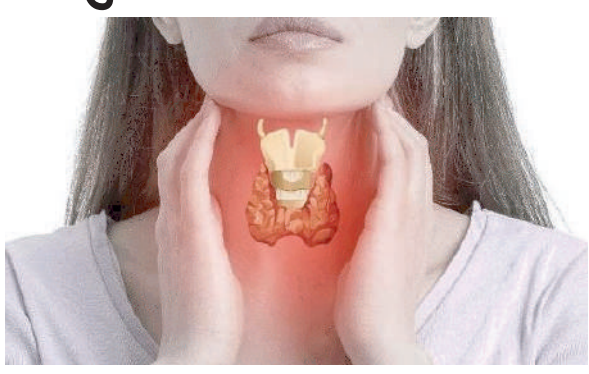

थाइरॉइड हमारी बॉडी में पाई जाने वाली अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (एंडोक्राइन ग्लैंड) में से एक है।

गले में मौजूद तितली जैसे आकार वाली यह ग्लैंड थायरॉक्सिन हॉर्मोन बनाती है जो हमारी बॉडी की ऊर्जा खर्च करने की क्षमता और कई क्रियाओं पर असर डालता है।

थाइरोइड के घरेलू उपाय

उपाय न.1

काली मिर्च से वजन और हाइपोथायरॉयड दोनो ठीक करें

पिपेराईन -

एक खास रसायन है जो काली मिर्च में खूब पाया जाता है और ये कमाल का फ़ैट बर्नर है। अक्सर महिलाओं में थायरॉक्सिन लेवल कम होने से तेजी से वजन बढ़ता है, पेपेराईन इस समस्या से छुटकारा दिला सकता है।

जिन्हें हाईपोथायरॉइड की समस्या है- सिर्फ 21 काली मिर्च कुचलकर 15 दिनों तक रोज सुबह एक बार में एक साथ खा लें, सकारात्मक परिणाम आना निश्चित है।

उपाय-2 25 ग्राम शुद्ध दालचीनी लें, यह जितनी तीखी हो उतना अच्छा रहेगा। इसे पीस कर चूर्ण बना एक चुटकी चूर्ण को प्याज के रस में मिला सेवन करें। यह प्रयोग बासी मुंह 21 दिन करें। 21 दिन सेवन से थाइरोइड सामान्य हो जाएगा- फिर कभी नहीं बढ़ेगा। 3 महीने बाद में प्रयोग दोहराइए- अचूक लाभ होगा।

उपाय न. 3

अगर किसी को थाईराईड से मुक्ति पानी है तो रसाहार थैरापी प्रयोग से 100% ठीक किया जा सकता है।

हाईपर थाईरोडीज़म का ईलाज

उपाय न.1

हाईपर थाईरोडीज़म मे अगर ग्रीन टी का प्रयोग, दिन मे 4 बार 2-2 कप लीया जाऐ तो 4-6 महिने मे तो थाईरोड से मुक्ति मिल सकती है।

रोज रात को 2 कप लौकी के रस मे 2 चम्मच अदरक का रस डालकर रोज रात को सोने से 1 घन्टे पहले ले।

धनिया 1 चम्मच+ सौंफ 1चम्मच+ जीरा 1चम्मच लेकर सुबह 3 ग्लास पानी मे उबाले।

जब 1 ग्लास पानी बचे तब छानकर सुबह पीले 30 मिनिट तक कुछ भी ना खाऐ।

रोज सुबह सहजन की फली (ड्रम स्टिक) 20 ग्राम लेकर 2 ग्लास पानी मे उबाले जब आधा बचे तब ठंडा होने पर छानकर सुबह पियें।

महान सनातनी योद्धा पुष्यमित्र शुंग

जिसके माथे पर तिलक ना दिखे उसका सिर धड़ से ही अलग कर दोः- सम्राट पुष्यमित्र शुंग।

यह बात आज से लगभग 2100 वर्ष पहले की है।

बिहार के एक किसान ब्राह्मण के घर एक पुत्र ने जन्म लिया,

जिसका नाम रखा गया पुष्यमित्र, अर्थात पुष्यमित्र शुंग और वह बना एक महान हिंदू सम्राट जिसने भारत देश को बौद्ध देश बनने से बचाया।

अगर पुष्यमित्र शुंग जैसा कोई राजा कंबोडिया मलेशिया या इंडोनेशिया में जन्म लेता तो आज भी ये देश हिंदू देश होते।

जब सिकंदर राजा पोरस से मार खाकर अपना विश्व विजय का सपना छोड़ कर उत्तर भारत से शर्मिंदा होकर मगध की ओर गया था तो उसके साथ आए हुए बहुत से यवन वहां बस गए थे।

सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म अपना लेने से उनके बाद उनके वंशजों ने भारत में बौद्ध धर्म लागू करवा दिया।

ब्राह्मणों के द्वारा इस नीति का विरोध होने पर उनका सबसे अधिक कत्लेआम हुआ। लाखो ब्राह्मणों की हत्याएं हुईं और हजारो मंदिर गिरा दिए गए।

(बिहार में अन्य राज्यों की अपेक्षा मंदिरों की संख्या इसी लिए कम हैं। बौद्धधर्म का उदय भी बिहार में ही हुआ था)

इसी समय पुष्यमित्र के माता-पिता को धर्म परिवर्तन के लिए कहा गया। जब उन्होंने मनाकर दिया तो छोटे से बालक पुष्यमित्र के सामने ही उसके माता-पिता का की गर्दन काट दी गयी।

बालक चिल्लाता रहा मेरे माता पिता को छोड़ दो, पर किसी ने नहीं सुनी माता-पिता को मरा देखकर पुष्यमित्र की आंखों में रक्त उतर आया।

उसे गांव वालों की संवेदना से नफरत हो गई और उसने प्रतिज्ञा ली कि वह इसका बदला बौद्धों से एक दिन जरूर लेगा और जंगल की ओर भाग गया।

ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण योग की सूक्ष्म क्रियाओं का ज्ञान पुष्यमित्र को था। अतः उसने महान योग क्रियाओं के द्वारा अपने शरीर को अत्यधिक बलवान बना लिया।

एक दिन बौद्ध राजा बृहद्रथ मौर्य वन में घूम रहा था अचानक वहां उसके सामने एक शेर आ गया। शेर सम्राट की ओर झपटा ही था तभी अचानक एक लंबा चौड़ा बलशाली भीमसेन जैसा बलवान युवक शेर के सामने आ गया और उसने अपनी मजबूत भुजाओ से उस शेर के जबड़े को पकड़कर उसके दो टुकड़े कर बीच से चीर दिया और सम्राट से कहा कि आप अब सुरक्षित हो।

सम्राट ने पूछा- "कौन हो तुम?

युवक-"ब्राह्मण हूं महाराज"

उसका पराक्रम देखकर सम्राट ने कहा,"मगध के सेनापति बनोगे ?

युवक आकाश की ओर देखकर रक्त से अपना तिलक कर बोला - "महाराज जी मातृभूमि को समर्पित है यह जीवन"।

उसी वक्त सम्राट ने उसे मगध का उप सेनापति घोषित कर दिया। जल्दी ही अपने शौर्य और पराक्रम के बल पर वह प्रधान सेनापति बन गया।

शांति का पाठ अधिक पढने के कारण मगध साम्राज्य कायर हो चुका था, लेकिन पुष्यमित्र के अंदर ज्वाला अभी भी जल रही थी। वह रक्त से स्नान करने और तलवार से बात करने में विश्वास रखता था।

पुष्यमित्र एक निष्ठावान हिंदू था और भारत को फिर से हिंदू राष्ट्र बनाने का सपना देख रहा था।

फिर आखिर वह दिन भी आ गया जब यवनों की लाखों की फौज ने मगध पर आक्रमण कर दिया।

पुष्यमित्र समझ गया कि अब मगध विदेशी गुलाम बनने जा रहा है। जब उसने यह बात सम्राट बृहद्रथ को बताई तो सम्राट बृहद्रथ ने कहा कि वह युद्ध द्वारा मगध की रक्षा करने के पक्ष में नहीं है। उसका कहना था की युद्ध से रक्तपात होता है और हम बौद्धों को शांति चाहिए युद्ध नहीं।

मगध के नागरिकों में यवनों का भय व्याप्त होने लगा क्योंकि युद्ध के बाद यवन लूटपाट, हत्याएं और स्त्रियों का शीलहरण करते थे।

पुष्यमित्र ने बिना सम्राट की आज्ञा लिए सेना को युद्ध के लिए तैयारी करने का आदेश दे दिया उसने कहा कि "इससे पहले कि दुश्मन के पैर हमारी मातृभूमि पर पड़े हम उसका शीश उड़ा देंगे"।

यह नीति तत्कालीन मौर्य साम्राज्य के बौद्ध धार्मिक विचारों के विरुद्ध थी, अतः सम्राट बृहद्रथ पुष्यमित्र के पास गया और गुस्से से बोला" किसके आदेश से तुम सेना को युद्ध के लिए तैयार कर रहे हो" ?

पुष्यमित्र ने कहा, "मातृभूमि की रक्षा के लिए मुझे किसी आज्ञा की आवश्यकता नहीं है और ब्राह्मण किसी की आज्ञा नहीं लेता है" यह कहकर पुष्यमित्र ने सम्राट का सर तलवार के एक ही प्रहार से धड़ से अलग कर दिया।

लाल आंखों वाले पुष्यमित्र ने सम्राट के रक्त से अपना तिलक किया और पुष्यमित्र ने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा,

"न तो बृहद्रथ महत्वपूर्ण है,और न ही पुष्यमित्र,.महत्वपूर्ण है तो हमारी मातृभूमि।

क्या तुम मातृभूमि के लिए रक्त बहाने को तैयार हो ?

पुष्यमित्र की शेर जैसी गरजती आवाज से सेना जोश में आ गई और सभी सैनिक आगे बढ़कर बोले, "हां सम्राट पुष्यमित्र हम तैयार हैं"।

पुष्यमित्र ने कहा- "आज मैं सेनापति हूं,"चलो काट डालो यवनों को जो मगध पर अपनी विजय पताका फहराने का स्वप्न पाले

हुए हैं और युद्ध में गाजर मूली की तरह ही बहुत बड़ी संख्या मे यवनों को काट दिया गया।

एक सेना जो कल तक दबी हुई, डरी हुई रहती थी आज युद्ध में हर हर महादेव और जय महाकाल के नारों से दुश्मन को थर्रा रही थी।

यवनों ने मगध तो छोड़ ही दिया, साथ ही साथ अपना राज्य भी खो दिया।

इसके बाद पुष्यमित्र का राज्याभिषेक हुआ।

सम्राट बनने के बाद पुष्यमित्र ने घोषणा की,"अब मगध में कोई बौद्ध धर्म नही मानेगा। हिंदू सनातन धर्म ही राजधर्म है और जिसके माथे पर तिलक ना दिखे वह सर ही धड़ से अलग कर दिया जाएगा"।

उसके बाद पुष्यमित्र ने वो किया जो आज तक नहीं हुआ।

हजारों की संख्या में बौद्ध मंदिरो को जो कि हिंदू मंदिरों को ही ध्वस्त कर कर बनाए गए थे उन्हें ध्वस्त करा दिया। बौद्ध मठों को तबाह कर दिया गया। चाणक्य काल के वापसी की घोषणा हुई और तक्षशिला विश्वविद्यालय का सनातन शौर्य फिर से स्थापित हुआ। जो लोग अपने सनातन धर्म को त्याग कर बौद्ध बन गए थे उन्होंने पुनः सनातन धर्म में वापसी की।

जिन लोगों ने सनातन धर्म का विरोध किया उनकी पुष्यमित्र ने हत्या करा दी।

पुष्यमित्र शुंग के पुत्र सम्राट अग्निमित्र शुंग ने अपना साम्राज्य तिब्बत तक फैला लिया और तिब्बत भारत का अंग बन गया वह बौद्धों को दौड़ाता हुआ चीन तक ले गया।

वहां चीन के सम्राट ने अपनी बेटी की शादी अग्निमित्र से करके संधि स्थापित की और इनके वंशज आज भी चीन में शुंग उपनाम नाम ही लिखते हैं।

पंजाब, अफगानिस्तान, सिंध की शाही ब्राह्मण वंशावली के बाद शुंग वंश सबसे बेहतरीन सनातन साम्राज्य था। शायद पेशवा से भी महान, जिसने सनातन धर्म को पुनः स्थापित करने का महान कार्य किया।

हमें गर्व करना चाहिए अपने पूर्वजों पर जिन्होंने अपने बलिदान से हमें आज सर उठा कर जीने का अधिकार दिलाया।

पुष्यमित्र जैसा सनातन धर्म का रक्षक आज तक कोई नहीं हुआ। वह जानता था कि बिना शास्त्र और शस्त्र के धर्म की रक्षा नहीं हो सकती।

हिमालय राज कृत शैलपुत्री स्तुति

हिमालय उवाच।
मातस्त्वं कृपयागृहे मम सुता जातासि नित्यापि यद्भाग्यं मे
बहुजन्मजन्मजनितं मन्ये महत्पु
ण्यदम्।
दृष्टं रूपमिदं परात्परतरां मूर्तिं भवान्या अपि माहेशी प्रति
दर्शयाशु कृपया विश्वेशि तुभ्यं नमः।।

श्रीदेव्युवाच।
ददामि चक्षुस्ते दिव्यं पश्य मे रूपमैश्वरम्।
छिन्धि हृत्संशयं विद्धि सर्वदेवमयीं पितः।।

श्रीमहादेव उवाच।
इत्युक्त्वा तं गिरिश्रेष्ठं दत्वा विज्ञानमुत्तमम्।
स्वरूपं दर्शयामास दिव्यं माहेश्वरं तदा।।

शशिकोटिप्रभं चारुचन्द्रार्धकृतशेखरम्।
त्रिशूलवर हस्तं च जटामण्डितमस्तकम्।।

भयानकं घोररूपं कालानलसहस्रभम्।
पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं च नागयज्ञोपवीतिनम्।।

द्वीपिचर्माम्बरधरं नागेन्द्रकृतभूषणम्।
एवं विलोक्य तद्रूपं विस्मितो हिमवान् पुनः।।

प्रोवाच वचनं माता रूपमन्यत्प्रदर्शय।
ततः संहृत्य तद्रूपं दर्शयामास तत्क्षणात।।

रूपमन्यन्मुनिश्रेष्ठ विश्वरूपा सनातनी।
शरच्चन्द्रनिभं चारुमुकुटोज्ज्वलमस्तकम्।।

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं नेत्रत्रयोज्ज्वलम्।
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।।

योगीन्द्रवृन्दसंवन्द्यं सुचारुचरणाम्बुजम्।
सर्वतः पाणिपादं च सर्वतोऽक्षिशिरोमुख

किसने किया था ट्रैफिक सिग्नल का आविष्कार, क्या है इतिहास, और आज इससे होने वाले फायदे और नुकसान, जानें

संजय बाटला

आप जब भी बाहर सड़क पर निकलते है तो जरूर किसी न किसी रेड लाइट पर रूकते होंगे। लाल, पीली और हरी लाइट वाली इस लाइट के बारे में कभी आपने सोचा है कि आखिर किसने इसका आविष्कार किया होगा।

इस लेख के माध्यम से हम इस लाइट के आविष्कार और इसके इतिहास के बारे में जानेंगे।

एक ब्रिटिश रेलवे प्रबंधक जॉन पीक नाइट ने रेल यातायात को नियंत्रित करने के लिए एक रेलमार्ग पद्धति अपनाने का सुझाव दिया। ऐसे में पहले ट्रैफिक सिग्नल का आविष्कार रेलवे सिग्नलिंग इंजीनियर जेपी नाइट ने किया था। रेलमार्गों ने एक सेमाफोर प्रणाली का उपयोग किया,

पहला संकेत यंत्र 'सेमाफ़ोर' (Semaphore) था, जिसका आविष्कार फ्रांस में लगभग 200 साल पहले मनुष्य की भुजाओं की विभिन्न स्थितियों से संकेत देने की एक प्रणाली के रूप में हुआ था। इसने रेलवे संकेतों के लिए एक यांत्रिक प्रणाली विकसित की, जो बाद में रंगों वाली ट्रैफिक लाइट में विकसित हुई।

सेमाफ़ोर एक यांत्रिक संकेत यंत्र था, जिसने विभिन्न संकेतों के लिए मनुष्य की भुजाओं की स्थिति का उपयोग किया। इसका आविष्कार फ्रांस में लगभग 200 साल पहले हुआ था। सेमाफ़ोर ने मनुष्य की बांहों या यांत्रिक भुजाओं की विभिन्न स्थितियों से अलग-अलग वर्णों और संदेशों को संकेत देने की एक पद्धति विकसित की । जिसमें एक खंभे से फैले छोटे बोर्ड यह संकेत देते थे कि कोई ट्रेन गुजर सकती है या नहीं। नाइट के अनुकूलन में दिन के दौरान ₹रुको₹ और ₹जाओ₹ का संकेत दिया जाता था, जबकि रात में लाल और हरी रोशनी का उपयोग किया जाता था। उस समय रात में गैस लैंप संकेत को रोशन किया करते थे। इन्हें संचालित करने के लिए सिग्नल के बगल में एक पुलिस अधिकारी तैनात किया जाता था।

दिसंबर 1868 को दुनिया का पहला ट्रैफिक सिग्नल लंदन के वेस्टमिंस्टर क्षेत्र में ब्रिज स्ट्रीट और ग्रेट जॉर्ज स्ट्रीट के चौराहे पर संसद भवन और वेस्टमिंस्टर ब्रिज के पास स्थापित किया गया था। यह उस समय के किसी भी रेलवे सिग्नल की तरह दिखता था। रात में उपयोग के लिए गैस द्वारा संचालित सेमाफोर आर्म्स और लाल-हरे लैंप का उपयोग किया जाता था।

क्या है ट्रैफिक लाइट का इतिहास अगर हम इतिहास पर नजर डालें, तो ट्रैफिक जाम की समस्या ऑटोमोबाइल के आविष्कार से भी पहले 1800 के दशक से चली आ रही है। उस समय लंदन की सड़कों पर घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ियों और पैदल यात्रियों की भीड़ लगी रहती थी।

पहली ट्रैफिक लाइट 1868 में संसद भवन के बाहर स्थापित की गई थी और यह उस समय के किसी भी रेलवे सिग्नल की तरह दिखती थी, जिसमें रात के उपयोग के लिए गैस द्वारा संचालित लाल-हरे लैंप थे।

गार्जियन द्वारा साझा किए गए शोध के अनुसार, आधुनिक ट्रैफिक लाइट एक अमेरिकी आविष्कार है। 1914 में क्लीवलैंड में रेड-ग्रीन सिस्टम स्थापित किए गए थे।

1925 में ब्रिटेन में इस प्रकार की पहली रोशनी सेंट जेम्स स्ट्रीट और पिकाडिली के बीच जंक्शन पर लंदन में दिखाई दी थी। इन्हें पुलिसकर्मियों द्वारा स्विच का उपयोग करके मैन्युअल रूप से संचालित किया जाता था।

1926 में वॉल्वरहैम्प्टन में एक समय अंतराल पर काम करने वाले स्वचालित सिग्नल स्थापित किए गए थे।

1932 में ब्रिटेन में पहला वाहन-संचालित सिग्नल शहर में ग्रेसचर्च स्ट्रीट और कॉर्नहिल के बीच जंक्शन पर हुआ।

ट्रैफिक सिग्नल, जिसे ट्रैफिक लाइट या यातायात संकेत भी कहते हैं, सड़क पर यातायात को नियंत्रित करने के लिए लाल, पीली और हरी बत्तियों का उपयोग करते हैं. लाल बत्ती का अर्थ रुकना, पीली बत्ती का अर्थ रुकने/चलने की तैयारी करना, और हरी बत्ती का अर्थ आगे बढ़ना होता है.। यह सिग्नल चौराहों पर यातायात के प्रवाह को व्यवस्थित करते हैं, दुर्घटनाओं को कम करते हैं और यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाते हैं.

ट्रैफिक सिग्नल के अर्थ

लाल बत्ती (Red Light): वाहन को रुकना होता है.

पीली बत्ती (Yellow Light): इसका मतलब है कि बत्ती जल्द ही लाल होने वाली है, इसलिए वाहन को रुकने की तैयारी करनी चाहिए या इसका अर्थ है हरी बत्ती होने वाली है सुरक्षित होने पर धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए.

हरी बत्ती (Green Light): वाहन को आगे बढ़ने की अनुमति होती है.

हरा तीर (Green Arrow): यह एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ने की अनुमति देता है, जबकि बाकी ट्रैफिक लाल बत्ती पर रुका रहता है.

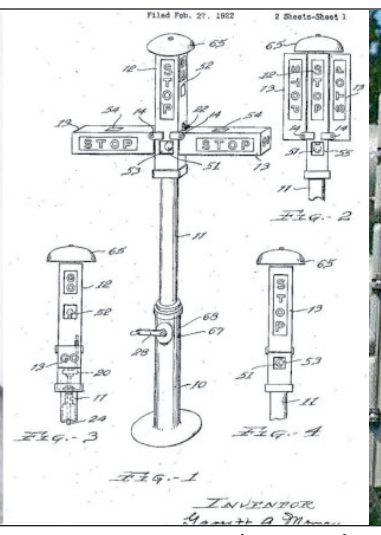

ट्रैफिक सिग्नल के लाभ

यातायात नियंत्रणः ये सिग्नल चौराहों पर परस्पर विरोधी यातायात धाराओं को एक व्यवस्थित तरीके से गुजरने की अनुमति देते हैं.

सुरक्षाः ये कोण (चौड़े किनारे से) वाली टक्करों जैसी कुछ दुर्घटनाओं को कम करके यात्रियों और पैदल चलने वालों की सुरक्षा में सुधार करते हैं.

दक्षता में वृद्धिः ये चौराहे की ट्रैफिक प्रबंधन क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे यातायात का प्रवाह अधिक सुचारू बनता है.

यातायात संकेतों के फायदे और नुकसान ट्रैफ़िक सिग्नल विद्युत चालित ट्रैफ़िक नियंत्रण उपकरण होते हैं जो ट्रैफ़िक को बारी-बारी से रुकने और आगे बढ़ने का निर्देश देते हैं। यह पृष्ठ उन सवालों के जवाब देता है जो ट्रैफ़िक इंजीनियरों द्वारा ट्रैफ़िक सिग्नल लगाने के फ़ैसले में शामिल होते हैं।

यातायात सिग्नल के क्या लाभ हैं? सिग्नल चौराहों पर अधिकतम नियंत्रण प्रदान करते हैं। ये सिग्नल क्या करें और क्या न करें, दोनों का संदेश प्रसारित करते हैं। किसी भी ट्रैफ़िक सिग्नल का प्राथमिक कार्य चौराहे पर यातायात की परस्पर विरोधी गतिविधियों को रास्ता देना होता है, और यह समय पृथक्करण के माध्यम से यातायात की परस्पर विरोधी धाराओं को एक ही चौराहे पर आने-जाने की अनुमति देकर ऐसा करता है।

विभिन्न यातायात गतिविधियों को बारी-बारी से रास्ता देकर, सिग्नल परस्पर विरोधी प्रवाहों को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ने में मदद करते हैं। ये अत्यधिक भारी प्रवाह को बाधित करके उन छोटी गतिविधियों को पार करने की अनुमति दे सकते हैं जो अन्यथा चौराहे से सुरक्षित रूप से नहीं गुजर सकतीं।

उचित समय पर लगाए जाने पर, ट्रैफ़िक सिग्नल चौराहे की ट्रैफ़िक प्रबंधन क्षमता को बढ़ाते हैं, और जब इन्हें उचित परिस्थितियों में लगाया जाता है, तो ये पैदल यात्रियों और वाहनों, दोनों के यातायात की सुरक्षा और दक्षता में सुधार के लिए एक मूल्यवान उपकरण बन जाते हैं। विशेष रूप से, ये सिग्नल कुछ प्रकार की दुर्घटनाओं को कम कर सकते हैं, खासकर कोण (चौड़े किनारे से) टक्कर से होने वाली दुर्घटनाओं को।

ट्रैफ़िक सिग्नल के क्या नुकसान हैं? हालाँकि बहुत से लोग जानते हैं कि ट्रैफ़िक सिग्नल चौराहे पर होने वाली दुर्घटनाओं को कम कर सकते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि सिग्नल अन्य प्रकार की दुर्घटनाओं में भी वृद्धि का कारण बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह अच्छी तरह से प्रमाणित है कि सिग्नल लगाने पर अन्य प्रकार की दुर्घटनाएँ, विशेष रूप से पीछे से टक्कर लगने की दुर्घटनाएँ आमतौर पर बढ़ जाती हैं।

आम तौर पर ट्रैफ़िक इंजीनियर ज़्यादा गंभीर कोणीय दुर्घटनाओं में कमी के लिए पीछे से टक्करों में वृद्धि को स्वीकार करने को तैयार रहते हैं; हालाँकि, जब किसी चौराहे पर कोणीय दुर्घटना की कोई समस्या नहीं होती तो कोई समझौता करने की ज़रूरत नहीं होती और ट्रैफ़िक सिग्नल लगाने से चौराहे पर समग्र सुरक्षा में गिरावट आ सकती है। ट्रैफ़िक सिग्नल को ट्रैफ़िक जाम की ₹सर्व-समाधान₹ नहीं माना जाना चाहिए और सभी ट्रैफ़िक इंजीनियरों का प्राथमिक लक्ष्य सबसे सुरक्षित और सबसे कुशल ट्रैफ़िक प्रवाह प्राप्त करना होता है।

दुर्घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि के अलावा, अनुचित यातायात सिग्नलों के कारण अत्यधिक देरी, सिग्नलों की अवज्ञा तथा यातायात का अपर्याप्त वैकल्पिक मार्गों की ओर मोड़ना भी हो सकता है।

ट्रैफ़िक सिग्नल आम तौर पर समझे जाने से कहीं ज़्यादा महंगे होते हैं, हालाँकि उचित होने पर ये एक ठोस सार्वजनिक निवेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक आधुनिक सिग्नल लगाने में करदाताओं का काफी पैसा खर्च आ सकता है, जो चौराहे की जटिलता और उस पर चलने वाले ट्रैफ़िक की विशेषताओं पर निर्भर करता है। इसके अलावा, सिग्नल वाले चौराहे को 24 घंटे चलाने में लगने वाली बिजली की निरंतर लागत भी होती है।

अनुचित ट्रैफ़िक सिग्नल के क्या प्रभाव होते हैं? यह व्यापक मान्यता है कि ट्रैफ़िक सिग्नल सभी चौराहों पर ट्रैफ़िक नियंत्रण और दुर्घटना संबंधी समस्याओं का समाधान प्रदान करते हैं। इसलिए देश भर में ऐसे कई सिग्नल लगाए गए हैं जहाँ कोई वैध संचालन वारंट मौजूद नहीं है। ट्रैफ़िक रिकॉर्ड स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उन दृष्टिकोणों और गलतफ़हमियों का विरोध किया जाना चाहिए जो कभी-कभी अनुचित स्थापनाओं का कारण बनते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इस ट्रैफ़िक नियंत्रण उपकरण के चयन और उपयोग से पहले ट्रैफ़िक और सड़क की स्थिति का गहन अध्ययन किया जाए और नियंत्रण के प्रकार और संचालन विधि का निर्धारण अध्ययन के आँकड़ों पर आधारित हो।

ट्रैफ़िक सिग्नल का इस्तेमाल सिर्फ़ वहीं किया जाना चाहिए जहाँ नियंत्रण के कमज़ोर तरीक़े अप्रभावी साबित हुए हों, क्योंकि सिग्नल लगभग हमेशा ₹कुल मिलाकर चौराहे पर देरी₹ का कारण बनते हैं। दरअसल, छोटी-मोटी गतिविधियों में भी बहुत ज़्यादा देरी हो सकती है, खासकर अगर सिग्नल का समय ठीक से न दिया गया हो। नतीजतन, कई ड्राइवर अतिरिक्त देरी से बचने के लिए कम वांछनीय वैकल्पिक रास्तों या रिहायशी सड़कों का रुख़ कर लेते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

पुलिस अधिकारी के निर्देशः यदि कोई पुलिस अधिकारी यातायात को निर्देशित कर रहा है, तो उसके निर्देशों का पालन लाल बत्ती के आदेशों से भी ऊपर होता है.

बिजली गुल होने पर (ब्लैकआउट): यदि सभी ट्रैफिक सिग्नल काम नहीं कर रहे हैं, तो चौराहों को चौतरफा स्टॉप चौराहों के रूप में माना जाना चाहिए, और ड्राइवरों को तब तक रुकना चाहिए जब तक कि वे सुरक्षित रूप से आगे बढ़ने का रास्ता न देख लें.

स्मार्ट ट्रैफिक लाइटेंः आधुनिक ट्रैफिक लाइटें कनेक्टेड हो सकती हैं, जिससे वे वाहनों और स्मार्टफोन से संवाद कर सकती हैं, जिससे ट्रैफिक प्रवाह और भी बेहतर हो सकता है।

वेस्ट दिल्ली दिल्ली पुलिस ने राजौरी गार्डन इलाक़े में 3,580 किलो अवैध पटाखे जब्त किए

परिवहन विशेष न्यूज

डीसीपी वेस्ट की स्पेशल स्टाफ इंस्पैक्टर राजेश मौर्य की टीम ने त्योहारी सीज़न से पहले बड़ी कार्रवाई करते हुए 3,580.4 किलो अवैध पटाखे जब्त किए हैं। यह पटाखे राजौरी गार्डन स्थित विशाल एन्क्लेव के एक घर में हर कोने किचन में भी छिपाकर रखे गए थे

पुलिस ने मौके से परिवार के तीन सदस्यों सुषिल कक्कड़ (53), उपासना कक्कड़ (50) और शिवम कक्कड़ (28) को गिरफ्तार किया, जो पैकिंग कर सप्लाई की तैयारी कर रहे थे।

जांच में सामने आया कि परिवार मीरा रोड, गुरुग्राम और गाज़ियाबाद से पटाखे खरीदकर दिल्ली में ऊँचे दामों पर बेचने की तैयारी कर रहा था, जबकि सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों की बिक्री और भंडारण पर रोक लगाई हुई है।

पुलिस का कहना है कि इस कार्रवाई से न सिर्फ अदालत के आदेशों का पालन सुनिश्चित हुआ बल्कि घनी आबादी वाले इलाके में संभावित बड़े हादसे को भी टाला गया।

सांसद कमलजीत सहरावत जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी पश्चिमी दिल्ली की ऊर्जावान, मृदुभाषी एवं कार्यकर्ताओं की प्रेरणास्रोत, लोकप्रिय सांसद माननीय श्रीमती कमलजीत सहरावत जी का जन्मदिन पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। युवा मोर्चा दिल्ली प्रदेश मंडल के उपाध्यक्ष रौशन कुमार जी ने शुभकामनाएं देते हुए कहा—

"कमलजीत सहरावत जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के संकल्प को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका नेतृत्व और सेवाभाव कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे दीर्घायु हों और सदैव समाज व संगठन की सेवा में सक्रिय रहें।"

उन्होंने आगे कहा कि "मोदी सरकार के नेतृत्व में देश आज आत्मनिर्भर भारत और विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, और कमलजीत सहरावत जी अपने क्षेत्र में इस विजन को जमीन पर उतारने के लिए निरंतर काम कर रही हैं।"

जन्मदिन के अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने भी उनके दीर्घायु होने और जनता की सेवा में निरंतर अग्रसर रहने की कामना की।

प्रेम - पच्चीसा (भाग 30)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

दूसरे दिन रोहन और माया अपनी बेटी के साथ पास के साप्ताहिक बाजार के लिए जा रहे थे कि दो शराबी युवक नशे कि हालत में रोहन की कार से टकरा कर नीचे गिर गए जिस में रोहन की कार का विंडों ग्लास, राइटहेंड साइड का मिरेरर टूट गया। दुर्घटना में , पूरी गलती नशेड़ी युवकों की थी लेकिन स्थानीय लोग रोहन को जबरन दोषी मानकर थाने ले गए ,, थानेदार ने स्थानीय दबाव से नशेड़ी युवकों को रोहन से रु पचास हज़ार देकर राजीनामा / आपसी समझोंता कराने की बात करने की कोशिश की । रोहन ने इस स्थिति में राजीनामा (आपसी समझौता) करने से मना कर दिया । वह जनता था कि पुराने भारतीय कानून धारा 279 और (मोटर व्हीकल एक्ट 1988 और आईपीसी की संबंधित धाराओं) और नए भारतीय नागरिक सुरक्षा की धारा 337 के आधार पर गलती नशेड़ी युवकों की हैं।

थानेदार ने मेडिकल रिपोर्ट में पाया कि युवक नशे की हालत में थे और कार से टकराकर गिरे, जिससे रोहन की कार को नुकसान हुआ। यह लापरवाही का मामला है (आईपीसी धारा 279: सार्वजनिक स्थान पर लापरवाही से वाहन चलाना या व्यवहार करना)। अगर रोहन 50000 रुपये (जो बहुत बड़ी राशि है) लेकर समझौता कर लेते हैं, तो युवकों को सजा से बचने का मौका मिल जाएगा, और रोहन का कार का नुकसान (विंडशील्ड और मिरर का मरम्मत खर्च, जो हजारों रुपये का हो सकता है) पूरा नहीं होता तो रोहन आपसी राजीनामा करने से मना कर दिया।

थाने में दबाव या बड़ी राशि से समझौता कराना अक्सर भ्रष्टाचार या जल्दबाजी का संकेत है। रोहन ने पुराने अपने मित्र अधिवक्ता मुनिजी से फोन पर बात की , मुनि जी ने बताया सड़क दुर्घटना में स्पॉट पर या थाने में तुरंत समझौता न करें कार का इंश्योरेंस है । इससे बाद में मुआवजा क्लेम करना मुश्किल हो जाएगा ।

थानेदार जानता है कि दुर्घटना में रोहन पीड़ित हैं, इसलिए उन्हें मुआवजा और युवकों के खिलाफ कार्रवाई का अधिकार है। नशे में दुर्घटना होने पर मोटर व्हीकल एक्ट की धारा 185 (शराब पीकर वाहन चलाना) लागू हो सकती है, जिसकी सजा जुर्माना या जेल हो सकती है । इसलिए रोहन ने थाने में शिकायत दर्ज करा दी ताकि युवकों ने नशे में लापरवाही बरती। FIR में घटना का पूरा विवरण, गवाहों (अगर कोई हों, जैसे बाजार के लोग या माया) और नुकसान का जिक्र भी कर दिया । युवकों की मेडिकल जांच / नशे की मेडिकल रिपोर्ट प्राप्त की रोहन की कार की फोटो लेकर और मैकेनिक से नुकसान का आकलन कराकर क्लेम अनुमोदित हुआ तो मोहन , माया को चैन आया ,

अच्छा हुआ कि किसी को कोई चोट नहीं आई , अधिवक्ता मुनिजी ने बताया कि अगर कोई चोट लगी हो (बेटी या परिवार को) , तो डॉक्टर से रिपोर्ट लेकर कार का इंश्योरेंस है (कंपल्सरी थर्ड-पार्टी इंश्योरेंस तो होना चाहिए) , तो 48 घंटे के अंदर कंपनी को सूचित करें। वे नुकसान की भरपाई करेंगे और दूसरे पक्ष से वसूल सकते हैं। अगर युवकों का इंश्योरेंस नहीं, तो मोटर एक्सीडेंट क्लेम्स ट्रिब्यूनल (MACT) में मुआवजा क्लेम करें । इसमें कार मरम्मत, मानसिक परेशानी आदि का खर्च शामिल हो सकता है।

तीन माह में बाइक सवार युवकों को 3 माह की सजा हुई लेकिन कोर्ट से रोहन की छतिपूर्ति इसलिए नहीं मिली क्योंकि कार सुधार / पार्ट्स का पैसा बीमा कंपनी से मिल गया था । मुनिजी ने माया और रोहन से कोर्ट पेशी का कोई शुल्क / फीस नहीं लिया , उलटे ज्ञान दिया कि अगर थाने में परेशानी हो, तो हेल्पलाइन (जैसे 100 या 112) कॉल करें। साथ ही भविष्य के लिए हमेशा दुर्घटना में पुलिस को बुलाएं, बिना FIR के इंश्योरेंस क्लेम न करें ।

लोग कहते हैं कि सावधानी हटी और दुर्घटना घटी । सड़क दुर्घटना में रोज हज़ारों लोग मर रहें हैं लेकिन कानून की जानकारी के आभार में सीधे आदमी छतिग्रस्त होकर भी कोर्ट कचहरी का चक्कर काट रहें हैं ।

(भाग 31)

भगवान का टेलर : जहाँ इंसानों के नहीं, सिर्फ देवताओं के कपड़े सिलते हैं

भगवान के टेलर के पास नवरात्रि में माता की चुनरी बनवाने लग रही भक्तों की भीड़

आमतौर पर टेलर की दुकान पर जाकर लोग कहते हैं — "भाई, पैंट-शर्ट बना देना या ब्लाउज़ फिट कर देना।"

लेकिन खंडवा की आशा मार्केट में एक दुकान ऐसी भी है जहाँ ग्राहक आकर कहते हैं —

"हमें नवरात्रि पर माता रानी की चुनरी चाहिए..."

"गणेश उत्सव में बप्पा को नई पोशाक पहनानी है..."

दुकानदार कैंची उठाता है, कपड़ा नापता है और मुस्कुराकर कहता है —

"हो जाएगा... भगवान का काम है, देर कैसे होगी?"

जी हाँ, ये कहानी है भरत कुवादे की, जिन्हें लोग पूरे शहर में "भगवान का टेलर" कहते हैं।

दर्जी से डिज़ाइनर तक का सफर

भरत ने 18 साल पहले अपने पिता से सिलाई का काम सीखा। शुरुआत लेडीज़ वर्क से की, पर मन नहीं लगा। फिर धीरे-धीरे उन्होंने मंदिरों की प्रतिमाओं के लिए वस्त्र बनाना शुरू किया और देखते ही देखते यही उनकी पहचान बन गई।

डायरी में छुपा है नाप का खज़ाना

भरत की दुकान में एक मोटी-सी डायरी रखी है। उस डायरी में इंसानों के नाप नहीं, बल्कि भगवानों के नाप लिखे हैं। कौन-से मंदिर की प्रतिमा कितनी ऊँची है, किसका सीना कितना चौड़ा है, किसकी पोशाक लंबी चाहिए — सब कुछ।

भक्त मंदिर का नाम बताते हैं और भरत तुरंत कहते हैं — "ठीक है, कपड़े कल तक तैयार मिल जाएंगे।"

त्योहारों पर रहती है रौनक

नवरात्रि हो, जन्माष्टमी, गणेशोत्सव या हनुमान जयंती — भरत की दुकान पर भीड़ ऐसी लगती है जैसे किसी मंदिर में लगती है। इस बार नवरात्र में ही 150 से ज्यादा ऑर्डर बुक हो चुके हैं।

कपड़ों में भी मौसम का ध्यान

गर्मी में भगवान को पहनाते हैं सिल्क और रेशमी पोशाकें, तो सर्दियों में मखमली वस्त्र। उनकी दुकान चमकते सितारों और झिलमिल लेस वाले कपड़ों से भरी रहती है।

सेवा ही सबसे बड़ा काम

भरत कहते हैं —

ये सिर्फ काम नहीं, भगवान की सेवा है। सुई चलाते वक्त हमेशा यही सोचता हूँ कि यह कपड़े किसी इंसान के लिए नहीं, बल्कि खुद भगवान के लिए तैयार हो रहे हैं।

खंडवा से निकलकर दूर तक नाम

आज भरत का नाम खंडवा ही नहीं, बल्कि रुरदा, खरगोन, बुरहानपुर, इंदौर और बड़वानी तक पहुँच गया है। लोग सीधे कहते हैं —भगवान को कपड़े पहनाना है तो भरत कुवादे के पास ही जाना है।

भ्रष्टाचार में डूबी भाजपा सरकार ने नियमों को दरकिनार कर कई स्कूलों में दो-दो स्पेशल टीचर तैनात कर दिया है- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने एमसीडी के प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा के अधिकार से वंचित विशेष जरूरत वाले बच्चों को लेकर भाजपा को आड़े हाथ लिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा को इन विशेष जरूरत वाले छात्रों के विकास से कोई लेना-देना नहीं है। निगम के 1514 प्राइमरी स्कूलों में सिर्फ 1460 स्पेशल टीचर हैं और 55 स्कूलों में विशेष जरूरत वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए एक भी टीचर नहीं है। भ्रष्टाचार में डूबी भाजपा सरकार ने नियमों को दरकिनार कर कई स्कूलों में दो-दो स्पेशल टीचर तैनात कर दिया है। जहां 5 से कम या एक भी विशेष जरूरत वाला बच्चा नहीं है, वहां भी स्पेशल टीचर तैनात हैं, जबकि 55 स्कूल खाली पड़े हैं। एक तरफ विशेष जरूरत वाले बच्चे शिक्षा से वंचित हैं और दूसरी तरह भाजपा स्पेशल टीचरों से क्लर्क का काम ले रही है।

शनिवार को ''आप'' मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर एमसीडी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि दिल्ली में भाजपा की चार इंजन सरकार है, फिर एमसीडी में भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता जा रहा है। भाजपा सरकार एमसीडी में शिक्षा समेत सभी समिति बनने के बाद भी कुछ काम नहीं कर पाई है। दिल्ली में एमसीडी के 1514 प्राइमरी स्कूल हैं। इन स्कूलों में विशेष जरूरत वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) को पढ़ने के लिए स्पेशल टीचर होने चाहिए। आज इन स्कूलों में 1514 स्पेशल टीचर के बजाय सिर्फ 1460 टीचर ही हैं। ऐसे में 55 स्कूलों में स्पेशल टीचर के पद खाली हैं। यह भी बड़ी अजीब बात है कि कई प्राइमरी स्कूलों में सीडब्ल्यूएसएन छात्रों को बढ़ाने के लिए एक के बजाय दो-दो स्पेशल टीचर तैनात हैं। जबकि सिर्फ एक ही स्पेशल टीचर रखने का नियम है।

उन्होंने कहा कि जब एमसीडी में ''आप'' की सरकार थी, तब इन स्कूलों में विशेष जरूरत वाले बच्चों की संख्या करीब 10 हजार थी। अब जब एमसीडी में भाजपा की सरकार है तो इनकी संख्या गिरकर 7500 रह गई है। एक तरफ एमसीडी के स्कूल विशेष जरूरत वाले बच्चों को प्रवेश नहीं दे रहे हैं और दूसरी तरफ स्पेशल टीचरों को रखकर भारी भरकम सैलरी दी जा रही है। एमसीडी कई विशेष टीचरों से क्लर्क का काम करवा रही है। हौजखास पुलिस वाला कॉलोनी में तैनात स्पेशल एजुकेटर अवनीश को साउथ जोन एमसीडी से अटैच किया गया है। नयाबांस स्कूल में तैनात स्पेशल एजुकेटर निशा को नरेला जोन में लगाया गया। न्यू गुप्ता कॉलोनी में तैनात स्पेशल एजुकेटर दीपक यादव को केशवपुरम जोन में लगाया गया है।

अंकुश नारंग ने बताया कि सीएम रेखा गुप्ता की शालीमार विधानसभा में तैनात स्पेशल एजुकेटर को भी केशवपुरम जोन में लगाया गया है। न्यू चंद्रावल में तैनात तनुश्री को केशवपुरम जोन में लगाया गया है। जहांगीरपुरी जे-ब्लॉक में तैनात अमनदीप को मुख्यालय में तैनात हैं। मायापुरी में तैनात अभिषेक कुमार भी मुख्यालय में तैनात हैं। बसाईदारापुर में तैनात दीपाली, न्यू कृष्णा पार्क में तैनात गौरव मल्होत्रा, झंडेवालान में तैनात लोकेश को भी मुख्यालय में लगाया गया है।

लद्दाख : एक वादा, बड़ी भूल, गंभीर नाकामी और साजिशों का जाल

हरीश शिवनानी

लेह-लद्दाख, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सामरिक महत्व और शांतिपूर्ण संस्कृति के लिए जाना जाता है, हाल ही में हिंसा की चपेट में आ गया। 24 सितंबर को लेह में हुई हिंसक घटनाओं ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया, क्योंकि लद्दाख जैसे शांत क्षेत्र में इतनी बड़े पैमाने पर अशांति असामान्य है। सरकार ने इस हिंसा के लिए पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जिम्मेदार ठहराया है, जिन्हें 26 सितंबर को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत गिरफ्तार कर जोधपुर जेल भेज दिया गया। इस हिंसा की जड़ें कहीं गहरी हैं—भाजपा की राजनीतिक भूल, खुफिया एजेंसियों की विफलता, सोनम वांगचुक की संदिग्ध गतिविधियां, और चीन-पाकिस्तान जैसी शत्रु शक्तियों की साजिशें।

लद्दाख की मौजूदा अशांति की शुरुआत 2019 में भारतीय जनता पार्टी के चुनावी घोषणापत्र से जुड़ी है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का वादा किया था, जिसके तहत लद्दाख को केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा दिया गया। लेकिन घोषणापत्र में लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा या छठी अनुसूची के तहत पूर्ण स्वायत्तता देने का कोई स्पष्ट वादा नहीं था। छठी अनुसूची आदिवासी क्षेत्रों को विशेष अधिकार प्रदान करती है, जैसे भूमि और संसाधनों पर स्थानीय नियंत्रण, जो लद्दाख जैसे सीमावर्ती क्षेत्र में महत्वपूर्ण है जहां चीन और पाकिस्तान से खतरा हमेशा मंडराता रहता है। भाजपा की यह भूल घातक साबित हुई। 5 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 हटाने के बाद लद्दाख को यूटी बनाया गया, लेकिन बिना विधानसभा के। इससे स्थानीय लोगों में असंतोष फैला, क्योंकि वे अपनी सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और आर्थिक पहचान की रक्षा के लिए छठी अनुसूची की मांग कर रहे थे। लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस जैसी संगठनों ने लगातार विरोध किया, लेकिन सरकार ने इन मांगों को गंभीरता से नहीं लिया। परिणामस्वरूप, सोनम वांगचुक जैसे व्यक्ति ने इस असंतोष को भुनाया और विरोध को संगठित रूप दिया। अगर 2019 के घोषणापत्र में इन मांगों को शामिल किया जाता, तो शायद आज लद्दाख में इतनी अशांति न होती। यह भाजपा की रणनीतिक चूक थी, जिसने स्थानीय भावनाओं को अनदेखा कर राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल दिया।

सोनम वांगचुक, जिन्हें अक्सर 'पर्यावरणविद', शिक्षाविद',और 'देशभक्त वैज्ञानिक' के रूप में प्रचारित किया जाता है, की गतिविधियां अब संदेह के घेरे में हैं। वे स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (एसईसीएमओएल) नामक एनजीओ चलाते हैं, जिसका उद्देश्य शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण है। लेकिन 2007 में केंद्र सरकार ने इस एनजीओ को नोटिस जारी कर चेतावनी दी थी। आरोप थे कि एनजीओ ने विदेशी योगदान नियमन अधिनियम (एफसीआरए) का दुरुपयोग किया, 200 कनाल भूमि पर अवैध कब्जा किया और सरकारी बकाया नहीं चुकाया। वर्ष 2007 में कांग्रेस सरकार के समय की यह चेतावनी मोदी सरकार ने भी नजरअंदाज की, और कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

हाल ही में, 24 सितंबर की हिंसा के बाद सरकार ने एसईसीएमओएल का एफसीआरए लाइसेंस रद्द कर दिया। लद्दाख के डीजीपी एसडी सिंह जमवाल ने खुलासा किया कि सोनम पाकिस्तानी इंटेलिजेंस ऑपरेटिव से संपर्क में थे। एक पाकिस्तानी व्यक्ति (पीआईओ) को गिरफ्तार किया गया, जो सोनम से जुड़ा था और सीमा पार रिपोर्टिंग कर रहा था। सोनम ने पाकिस्तान में 'डॉन इवेंट' में भाग लिया और बांग्लादेश की यात्रा की, जो अब जांच के दायरे में हैं। डीजीपी ने उन्हें हिंसा का मुख्य उकसावा बताया, क्योंकि उनके भाषणों में अरब स्प्रिंग और जेन-जेड प्रदर्शनों का जिक्र था, जो युवाओं को भड़का सकता था। सोनम की गतिविधियां सिर्फ पर्यावरण तक सीमित नहीं लगतीं। उन्होंने लद्दाख में भूख हड़तालें कीं, लेकिन इनके पीछे विदेशी फंडिंग और साजिश की आशंका है।

इन सबसे अलग हटकर एक तथ्य बेहद महत्वपूर्ण है। भारत की खुफिया एजेंसियां, जैसे आईबी और रॉ, सीमावर्ती क्षेत्रों में सतर्कता के लिए जानी जाती हैं, लेकिन लद्दाख मामले में उनकी विफलता स्पष्ट है। पिछले वर्ष बांग्लादेश में युवाओं के हिंसक प्रदर्शन और इसी महीने नेपाल में जेन-जेड आंदोलन हुए, जो सोशल मीडिया के जरिए फैले। इनसे लद्दाख में असंतोष का अंदाजा लगाया जा सकता था, लेकिन एजेंसियां चूक गईं। चीन और पाकिस्तान की साजिशों का पता नहीं चला, जबकि लद्दाख चीन की सीमा पर है और पाकिस्तान से हमेशा खतरा रहता है। डीजीपी ने पुष्टि की कि सोनम के विदेशी दौरों की रिपोर्ट्स उपलब्ध थीं, लेकिन सुरक्षा एजेंसियां सतर्क नहीं रहीं।

अपील : अपने बच्चों को पढ़ाएं लिखाएं डॉ बाबा साहब और डॉ कलाम की तरह काबिल बनाएं - वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

पोस्टर-बैनर निकालना और सड़कों पर हुड़दंग मचाना सिर्फ दिखावा है - नबी-ए-करीम ने हमेशा अमन, सौहार्द और नेक कार्यों पर अमल की तालीम दी है, न कि फिजूल प्रदर्शन की : वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

इस्लाम दिखावे को पसंद नहीं करता, बल्कि नेकी के अमल पर ज़ोर देता है, दिखावे की बजाय पैग़ंबर मोहम्मद साहब की तालीम पर ज़ोर दीजिए मोहब्बत का इज़हार दिल में होना चाहिए, न कि सड़कों पर : वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

हम सब की ज़िम्मेदारी है कि हम हालात को और बिगाड़ने की बजाय अमन शांति और आपसी सौहार्द का पैग़ाम दें - कानून को हाथ में न लें, बल्कि मिलकर भाईचारे को मज़बूत करें - यही हमारी सच्ची दीनी और इंसानी ज़िम्मेदारी है - वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

सच्ची मोहब्बत पैग़ंबर मोहम्मद साहब से वही कर सकता है जो उनकी शिक्षाओं पर चले - झूठ, फरेब, मक्कारी, जुआ, शराब, सूद और नशे से दूर रहिए, पांच वक्त की नमाज़ अदा कीजिए और ज़रूरतमंदों की मदद कीजिए यही

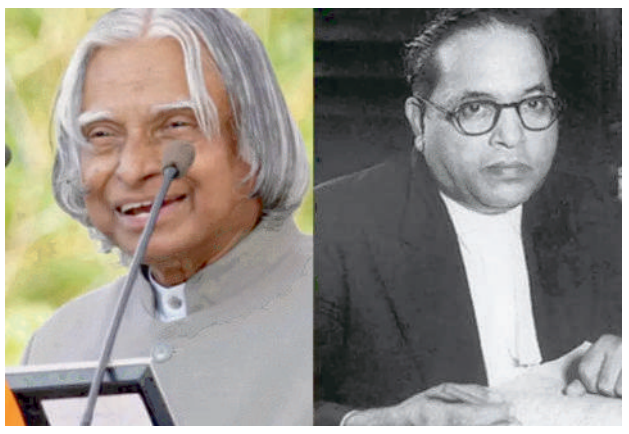

असली मोहब्बत और नबी की सच्ची राह हैं बाक़ी सब दिखावा हैं : वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

लखनऊ, संजय साग़र सिंह। उत्तर प्रदेश के बरेली में हाल ही में हुई अशांति और सड़क पर बिखरे पैग़ंबर मोहम्मद साहब के धार्मिक पोस्टरों-बैनरों और प्रदर्शन को लेकर राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक एवं वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने इसे इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध बताया है। उन्होंने कहा कि इस्लाम दिखावे को पसंद नहीं करता, बल्कि नेकी के कार्यों के अमल पर ज़ोर देता है।

बरेली में हाल ही में हुई अशांति और सड़क पर बिखरे धार्मिक पोस्टरों के परिप्रेक्ष्य में वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा, पोस्टर-बैनर निकालना और सड़कों पर हुड़दंग मचाना सिर्फ दिखावा है। नबी-ए-करीम ने हमेशा अमन, सौहार्द और नेक अमल की तालीम दी है, न कि फिजूल प्रदर्शन की।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सच्ची मोहब्बत पैग़ंबर मोहम्मद साहब से वही कर सकता है जो उनकी शिक्षाओं पर चले। झूठ, फरेब, मक्कारी, जुआ, शराब, सूद और नशे से दूर रहिए, पांच वक्त की नमाज़ अदा कीजिए और ग़रीब गुर्बाओं बेबाओं और ग़रीब ज़रूरतमंदों की मदद कीजिए यही असली मोहब्बत और यही नबी की सच्ची राह एवं शिक्षा हैं, बाक़ी सब दिखाबा हैं।

श्री ख़ान साहब ने पोस्टरों और बैनरों के ज़रिए इज़हार-ए-मोहब्बत की प्रवृत्ति पर भी सवाल उठाते हुए कहा, स्दीवारों पर लगाए गए यही बैनर उखड़ कर टूटकर नालियों में बह जाते हैं, जो हमारे पैग़ंबर साहब की तौहीन के बराबर है। मोहब्बत का इज़हार दिल में होना चाहिए, न कि सड़कों पर।

उन्होंने समाज से शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील की। जो कुछ हुआ वह अफ़सोसनाक है, अक्सर देखा गया हैं कि अराजक तत्व तो शरारत करके पहले ही भाग जाते हैं और मासूम लोग अराजक तत्वों के ग़लत कार्यों के चलते कष्ट उठते हैं, लेकिन अब हम सब कि ज़िम्मेदारी है कि हम हालात को और बिगाड़ने की बजाय अमन, शांति और आपसी सौहार्द का पैग़ाम दें - कानून को हाथ में न लें, बल्कि मिलकर भाईचारे को मज़बूत करें, यही हमारी सच्ची दीनी और इंसानी ज़िम्मेदारी है।

आखिर में वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने पैग़ंबर मोहम्मद साहब की सच्ची तालीम पर ज़ोर देते हुए सभी अपील की कि अपने बच्चों को पढ़ाएं लिखाएं डॉ बाबा साहब और डॉ कलाम की तरह काबिल बनाएं और ग़लत कार्यों से दूर रहें।

वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान के इस देश हित के महत्वपूर्ण बयान को कई सामाजिक संगठनों और बुद्धिजीवियों ने सराहा है, और इसे मौजूदा माहौल में एक ज़रूरी और समयानुकूल अहम संदेश बताया है।

पोस्ट वार्डन अशोक यादव को बनाया गया नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा का मास्टर ट्रेनर

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नागरिक सुरक्षा विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती संयुक्ता समद्दार (आई पी एस) एवं विशेष सचिव मनोज कुमार राय (आई ए एस) पुलिस महानिदेशक अभय कुमार प्रसाद एवं नीता यादव (पी सी एस) कमांडेंट नागरिक सुरक्षा के द्वारा मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण का 3 सितम्बर 2025 को दीप प्रज्वल करके शुभाराम किया गया। भारत सरकार (गृह मंत्रालय) के अंतर्गत दिनांक 3 सितम्बर 2025 से 27 सितम्बर 2025 तक चल रहे हैं केन्द्रीय नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ पर आयोजित मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण की ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे 17 जनपदों से आए 36 वार्डन एवं स्वयंसेवक को ट्रेनिंग मास्टर्स ट्रेनर को आपदा के समय आने वाले विभिन्न आपदाओं के विषय में कुशल विशेषयगों द्वारा प्राकृतिक एवं कृत्रिम आपदाओं के विषय में गहन अध्ययन कराया गया। ऑपरेशन सिंदूर के मद्दे नजर भारत सरकार द्वारा प्रायोजित नागरिक सुरक्षा कर के 17 जिलों में से जनपद मथुरा से राष्ट्रीय आपदा मोचन बल नागपुर एवं राज्य आपदा मोचन बल लखनऊ एवं निर्देशक से सम्मानित सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं पवन शर्मा को चुन कर लखनऊ में स्थित छठा मील केंद्रीय नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से प्रशिक्षक समित मौर्य, विष्णु शर्मा, राकेश मिश्रा, मनोज वर्मा, योगेश शर्मा, ओमकार सिंह, फायर विभाग, एवं एस डी आर एफ के ट्रेनरों के द्वारा 21 दिवसीय प्रशिक्षण में लगातार नागरिक सुरक्षा स्थापना एवं उनके बाईलाज के विषय में काफी अध्ययन कराया गया। इसी प्रकार से रेस्क्यू में यह पढ़ाया गया कि भवन कितने प्रकार के होते हैं और घटना यह दुर्घटना के समय यह भवन किस प्रकार से धराशायी होते हैं। भवनों के प्रकार भी बताए गए साथ ही साथ इन भवनों के गिरने पर किस प्रकार से घटनास्थल पर नागरिक सुरक्षा विभाग के वार्डन एवं स्वयंसेवक की रेस्क्यू की पूरी टीम अपना कार्य कुशलता पूर्वक संपन्न करती है और साथ ही साथ अपना बचाव भी करती है यह भी बताया गया की भवन में प्रवेश करते समय किन-किन सावधानियां को बरता जाता है। सबसे पहले रेकी ऑफिसर के माध्यम से आसपास के लोगों के माध्यम से भवन में रहने वाले लोगों का पता लगाया जाता है और नागरिक सुरक्षा के सेक्टर वार्डन के माध्यम से तैयार परिवार रजिस्टर के माध्यम से भवन में रहने वाले लोगों की संख्या एवं नक्शे के माध्यम से रेस्क्यू करने वाली टीम को किस प्रकार से सकुशल घटना स्तर तक पहुंचाया जाए यह नकशे के माध्यम से बताया जाता है और साथ ही साथ रेस्क्यू टीम के साथ घायल लोगों को

घटनास्थल से फर्स्ट एड के माध्यम से नजदीकी चिकित्सालयों में भेजने की व्यवस्था की जाती है इनमें उपयोग आने वाले सभी उपकरणों का ही विस्तार पूर्वक अध्ययन कराया गया। इसी क्रम में पुलिस विभाग में प्रयोग होने वाले वायरलेस सेट एवं उसकी पूरी बनावट एवं एंटीना के माध्यम किस प्रकार कम्युनिकेशन होता है यह सीडी कम्युनिकेशन कोर्स में पढ़ाया गया किस प्रकार से संदेश लिया जाता है और इसको वापस भेजा जाता है इसको सब विस्तार पुलिस लाइन लखनऊ से पधारे हुए मुख्य वायरलेस ऑपरेटर एवं उनके सहयोगियों ने वार्डेनों को प्रैक्टिकल के माध्यम से बताने का कार्य किया। सीटीआई लखनऊ के रेस्क्यू एवं अन्य विधाओं में पारंगत प्रशिक्षकों के माध्यम से यह कार्यक्रम लगातार चलता रहा। रस्सीयों के गांठ, ऊंचे बिल्डिंग से स्टेशन एवं रस्सीयों से किस प्रकार से घायल व्यक्ति को उतारा जाता है इसके बारे में भी जानकारी दी गई साथ ही रस्सीयों के माध्यम से किन गांठो का हम प्रयोग करके किसी भी इमरजेंसी सर्विस में अपना कार्य कर सकते हैं। जब किसी मकान में आग लगती है तो धुएं भरे कमरे में किस प्रकार से प्रवेश करना चाहिए और आग कितने प्रकार की होती है इसको किस प्रकार से कंट्रोल किया जा सकता है एवं आग के विषय में एक विस्तृत कक्षाओं का संचालन फायर विभाग के अधिकारियों के द्वारा प्रैक्टिकल के माध्यम से बताया गया। हमको अपने घर में खाना बनाते समय किस प्रकार से सावधानी बरतनी चाहिए इसके विषय भी चर्चा हुई इसी क्रम में कुएं में पाए जाने वाली सल्फर एवं मेथेन गैसों से किस प्रकार बचाव किया जाता है इसके विषय में भी चर्चा हुई। सीबीआरएन के विषय में बीकेटी संस्थान के प्रशिक्षकों के साथ-साथ एसडीआरएफ से आए हुए विशेष प्रशिक्षण दिया गया साथ ही बताया गया एटॉमिक बायोलॉजिकल और केमिकल वार किस प्रकार से होता है इसके विषय में तमाम प्रथम विश्व युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध और इसी प्रकार से इससे क्या-क्या नुकसान होते हैं किस प्रकार से बचाव किया जा सकता है और यदि अगर भविष्य में विस्फोट होता है तो कैसे यह पता लग सकता है यह केमिकल विस्फोट है। हॉट जोन, वर्म जोन और कोल्ड जोन पर भी चर्चा हुई। कुवा, डूडा और हाट जोन में काम करके वापस आने पर प्रकार से नौ चरणों के माध्यम से रेस्क्यू में गए हुए लोगों के शरीर में लगे हुए अल्फा बीटा और गामा किरणों का किस प्रकार से शरीर से निष्पादन यानी बीसंक्रमण किया जाता है किसको प्रैक्टिकल के रूप में भी बताया गया। प्रत्येक हफ्ते में चलने वाले कक्षाओं में आपने क्या पढ़ा है इसके विषय में हर सप्ताह के शनिवार को एक वस्तुनिष्ठ परीक्षा का भी आयोजन किया जाता रहा और लोगों की योग्यता का भी आकलन होता रहा। यह 36 मास्टर ट्रेनर्स इस सीटीआई सेंटर से ट्रेनिंग प्राप्त करने के बाद अपने-अपने जिलों में 360 वॉलिंटियर्स को ट्रेनिंग देने का कार्य करेंगे इसी प्रकार से यह चैन चलती रहेगी और भारत के विभिन्न जिलों में इसी प्रकार से ट्रेनिंग चल रही है और आने वाले समय में हम आपदा एवं अन्य विषम परिस्थितियों में किस प्रकार अपना बचाव कर सकते हैं इसके विषय में चर्चा चल रही है यदि युद्ध आए बढ़ आए या जैविक रासायनिक दया परमाणु युद्ध हो तो लोगों को जागरूक करके हम मृत्यु दर में कमी ला सकते हैं। कार्यक्रम के समापन में सीटीआई की कमांडेंट श्रीमती नीता यादव (पी सी एस) एवं कनिष्ठ स्टाफ अधिकारी सुमित मौर्य ने सभी प्रशिक्षार्थियों को उनके आगामी जीवन हेतु शुभकामना दी साथ ही मथुरा जनपद से आए पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं पवन शर्मा को मास्टर ट्रेनर बनाया गया साथ ही प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जनपद में आने पर उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता एवं चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल, कल्याण दास अग्रवाल, सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर,डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल, घटना नियंत्रक अधिकारी सचिन अग्रवाल, अजय कांत अग्रवाल,शैलेश खण्डेलवाल, प्रमोद शर्मा, गिरीश वार्ष्णेय, विकाश सोनी, बड़े बाबू जगदीश सिंह, आलोक व्यास, गुलशेर, देवेन्द्र, राजेंद्र, राम सैनी, आदि के द्वार स्वागत किया गया। और दोनों वार्डनो को बधाई दी।

गंगा में डूबे चार लोग एक महिला का नहीं लग रहा सुराग....

बदायूं: मिली जानकारी के अनुसार राजस्थान के अलवर जिले से दादी मां की अस्थि विसर्जन करने आए चार लोग गंगा में डूब गए...जिमदो महिला दो पुरुष शामिल थे... बताया जा रहा है कि 50 वर्षीय महिला को बचाने के चक्कर में बाकी तीन लोग भी गहरे पानी में चले गए.... स्थानीय गोताखोर रिजवान व उनकी टीम ने तत्परता दिखाते हुए तीन लोग (एक महिला दो पुरुष) को बाहर निकाल लिया... जबकि एक 50 वर्षीय महिला गंगा में डूब गई.... !सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंची है..... अभी तक महिला का कोई पता नहीं चल सका गोताखोर और पुलिस महिला की तलाश में जुटे हुए हैं ... !

भगवान श्रीकृष्ण की अभिन्न स्वरूप हैं माता योगमाया : भक्तिवेदांत मधुसूदन महाराज "विश्वबंधु"

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज गली स्थित अतिप्राचीन श्री योगमाया मंदिर में मन्दिर का प्रभु प्रेम प्राप्ति वार्षिक महोत्सव संतों व की सन्निधि में अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ सम्पन हुआ।सर्वप्रथम श्रीकृष्ण कालीन योगमाया माता की प्रतिमा का पंचामृत से अभिषेक कर उनका वैदिक मंत्रोच्चार एवं श्रीहरिनाम संकीर्तन के मध्य पूजन-अर्चन किया गया।साथ ही उनकी महाआरती की गई।तत्पश्चात आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में त्रिदंडी स्वामी भक्तिवेदांत मधुसूदन महाराज श्विश्वबंधुश्र ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की समस्त लीलाएं योगमाया के द्वारा ही हुई हैं।वस्तुतः यह भगवान श्रीकृष्ण की

अभिन्न स्वरूप हैं।महाभारत युद्ध के समय अर्जुन ने युद्ध आरंभ करने से पूर्व इन्हीं का स्तवन किया था।भगवान श्रीकृष्ण की सभी लीलाओं में योगमाया की प्रमुख भूमिका रही है।

चतुःसंप्रदाय के श्रीमहंत फूलडोल बिहारीदास महाराज ने कहा कि योगमाया माता को भगवान श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों का कल्याण एवं दुष्टों का संहार करने के लिए स्वयं प्रगट किया था।अतः यह समस्त ब्रजवासियों की परमाराध्य हैं।श्रीमद्भागवत में इन्हीं को विंध्यवासिनी व शिवपुराण में माता सती का अंश बताया गया है।

भक्ति वेदान्त साधु महाराज ने कहा कि योगमाया एक स्वरूप में भगवान श्रीकृष्ण की बहन के रूप में प्रसिद्ध हैं,तो दूसरे स्वरूप में यह पौर्णमासी देवी के रूप में समस्त ब्रजवासियों की परम गुरु स्वरूपा होकर हितोपदेश प्रदान करने वाली मानी गई हैं।

इस अवसर पर स्वामी सेवानंद वन महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख समाजसेवी पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, आचार्य दामोदर चन्द्र गोस्वामी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, राधानाथ दास, प्रेम प्रदीप दास, राधारमण दास, ब्रजराज दास, रोहिणी नंदन दास, मधुकर दास, उज्जवल दास, वृन्दावन दास एवं रविदास आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।वार्षिकोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा के साथ हुआ।महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सत्यशोधक माली समाज सेवाभाई संस्था द्वारा गोदावरी पंचवटी नासिक में हुआ बैठक का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

सत्यशोधक माली समाज सेवाभाई संस्था द्वारा श्रद्धा लॉन्स होटल गोदावरी पंचवटी नासिक में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के अध्यक्ष श्री सचिन मांडलिक थे। बैठक में चर्चा के बाद सभा की तिथि पर चर्चा की गयी. कईयों ने अपने विचार व्यक्त किये. संगठन के अध्यक्ष शांतनु शिंदे और सचिन मांडलिक ने सभी को मार्गदर्शन दिया कि सभा कैसी होगी और इसकी योजना कैसे बनाई जाएगी. बैठक में गिरीश बच्छाव, भास्करराव गांगुर्डे, दौलतराव शेलार ,हेमलता शेलार ,अनिल गायकवाड ,विनायक पवार, राजेंद्र शिंदे, शंकरराव काठे, संतोष पुंड, रमेश गायकवाड,भास्कराव जेजुरकर, माधवराव बच्छाव, भारती शेलार, वनिता थलकर, प्रेमलता जुन्नारे ,सचिन गायकवाड, विजय शेलके, शेखर भुजबल , विजय शेलके, संजय भोसले ,संजय निकम ,संजय भोसले, और कई अन्य सदस्य उपस्थित थे।

पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि-विद्या, ज्ञान और कौशलता से परिपूर्ण होना समय की मांग

विद्या, ज्ञान और कौशलता मानवीय आजीविका चलाने के मूल मंत्र-जीवन की प्रगति और आत्मनिर्भर भारत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि को माना गया है, ऐसा हम पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिक प्रवचनों, बड़े बुजुर्गों से वार्तालाप में हम सुनते आ रहे हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूंकि अगर हम प्रैक्टिकल वे में इसे महसूस करें तो अक्षरतः अक्षर यह पूर्ण सत्य है।

साथियों आदिकाल से हम सुनते आ रहे हैं कि सर्वश्रेष्ठ प्रजाति मानव गर्भ से कुछ सीख़ कर नहीं आता प्राणी जन्म के बाद से ही सभ कुछ सीख़ता है और अलग-अलग रूप में अपनी आजीविका चलाता है।जीवन में गरीबी अमीरी सुख-दुख इत्यादि के चक्र में आता है।

साथियों बात अगर हम मानव के दुनिया में जीवन यापन की करें तो यह 100 फ़ीसदी सत्य बात है कि यदि मानव में उपरोक्त तीनों प्रमुख मंत्र विद्या, ज्ञान और कौशलता या इनमें से कोई भी एक मंत्र निहित है तो वह मानव अपनी आजीविका, जीवन को प्रगति कर सफलताओं को पाने में कभी पीछे नहीं रहेगा।

साथियों बात अगर हम इन उपरोक्त तीन मंत्रों की करें तो दिमाग में सीधा नाम शैक्षणिकता का आता है और शिक्षा प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात मानसिक स्वास्थ्य सर्वोपरि से हम इनकार नहीं कर सकते और तीनों मंत्र प्राप्त करने के लिए हम प्री प्ले नर्सरी स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्या, ज्ञान और कौशलता हासिल करते हैं। मेरा मानना है कि यह तीनों मंत्र हर मानव के लिए एक ब्रह्मास्त्र की शक्ति रखते हैं, क्योंकि इनके बल पर हम किसी भी परिस्थितियों में अपनी आजीविका और जीवन की प्रगति को के पथ पर चलने में ज़रूर सफल होंगे ऐसा हमें विश्वास है।

साथियों बात अगर हम लक या किस्मत की करें तो भारत एक अति आध्यात्मिकता पालक देश है। जहां कुछ अपवादों को छोड़कर, नागरिकों का आध्यात्मिकता में अति विश्वास हैं और हम भाग्य को भी नकार नहीं सकते, यानें गॉड गिफ्टेड ज्ञान को भी नकार नहीं सकते। और कहते हैं ना कि, अगर किस्मत ही ख़राब हो तो क्या करें? परंतु मेरा निजी मानना है कि उपरोक्त तीनों मंत्रों के आगे किस्मत को भी पसीज़ना पड़ता है और मानव की हिम्मत जज़बा और जांबाज़ी की जीत होती है! हालांकि बड़े बुजुर्गों का कहना है कि भगवान भूखा उठाता है, परंतु किसी को भूखा सुलाता नहीं, यह बात भी हम सच मानते हैं, परंतु यह भी सच्चाई है कि मानव को जीवन में एक सफ़ल जिंदगी जीकर अपनी अगली पीढ़ियों के लिए रास्ता बनाने के लिए विद्या, ज्ञान और कौशल रुपी तीनों मंत्रों को ग्रहण करना आवश्यक है।

साथियों बात अगर हम इन तीनों मंत्रों की संलग्नता आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए करें तो यह बिल्कुल सटीक, सत्य मंत्र साबित होंगे। क्योंकि यही वह तीनों सशक्त और धारदार अस्त्र हैं जो मानव को प्रगति की ओर आसान रास्ता बनाने में मदद करते हैं। जिसमें उनके साथ उस व्यक्ति का गांव, शहर, जिला, राज्य और देश भी तीव्रता से उन्नति प्राप्त करता है। इन तीनों मंत्रों को हमारी नई शिक्षा प्रणाली 2020 में भी शामिल किया गया है।

साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम की आकांक्षाओं आत्मनिर्भर भारत, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था 2047 का भारत विज़न की करें तो अगर हम भारतीय नागरिकों ने उपरोक्त तीनों मंत्र ग्रहण कर लिए तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम इससे कहीं अधिक बढ़-चढ़कर वैश्विक सफलताओं के झंडे भारत विज़न 2047 के पूर्व ही गाड़ देंगे और हम वैश्विक महाशक्ति उभर कर सामने होंगे।

साथियों बात अगर हम कुछ समय पूर्व माननीय पीएम के वर्चुअल संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार, उन्होंने भी कहा कि, हमारे यहाँ कहा जाता है-सत्विद्या यदि का चिन्ता, वराकोदर पूरणे। भावार्थ जिसके पास विद्या है, ज्ञान और कौशल है उसे अपनी आजीविका के लिए, जीवन की प्रगति के लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती। सक्षम व्यक्ति अपनी प्रगति के लिए खुद ही रास्ते बनाता है। मुझे खुशी है कि सरदारधाम ट्रस्ट द्वारा शिक्षा और कौशल पर बहुत जोर दिया जा रहा है। 21वीं सदी में भारत के पास अवसरों की कमी नहीं है। हमें खुद को ग्लोबल लीडर रूप में देखना है, अपना सर्वश्रेष्ठ देना है और सर्वश्रेष्ठ करना भी है।पूरा भरोसा है कि देश की प्रगति में गुजरात का जो योगदान रहा है, उसे हम अब और सशक्त रूप में सामने लाएँगे। हमारे प्रयास न केवल हमारे समाज को नई ऊंचाई देंगे, बल्कि देश को भी विकास की बुलंदी पर लेकर जाएंगे। उन्होंने कहा हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का भी इस बात पर विशेष फोकस है कि हमारी शिक्षा, कौशल बढ़ाने वाली होनी चाहिए। भविष्य में मार्केट में कैसी स्किल की डिमांड होगी, फ्यूचर वर्ल्ड में लीड करने के लिए हमारे युवाओं को क्या कुछ चाहिए होगा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्टूडेंट्स को शुरुआत से ही इन ग्लोबल रियलिटीस के लिए तैयार करेगी आज स्किल इंडिया मिशन भी देश की बड़ी प्राथमिकता है। इस मिशन के तहत लाखों युवाओं को अलग अलग कौशल सीखने का अवसर मिला है, वो आत्मनिर्भर बन रहे हैं। नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रोमोशन स्कीम के तहत युवाओं को पढ़ाई के साथ साथ कौशल विकास का अवसर भी मिल रहा है, और उनकी आमदनी भी हो रही है।

अतः अगर हम उपरोक्तत पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मानसिक स्वास्थ्य सर्वोपरि, विद्या, ज्ञान और कौशलता मानवीय आजीविका चलाने के वास्तव में मूल मंत्र हैं। क्योंकि जीवन की प्रगति और आत्मनिर्भर भारत बनाने में यह महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकते हैं और इनका महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि है और उसमें यह तीनों मंत्रों से परिपूर्ण मानव को अपनी आजीविका चलाने, जीवन को प्रगति में ढालने के लिए चिंता नहीं होगी साथ ही आत्मनिर्भर भारत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

एनडीएमसी और पलवल के बीच 100-दिवसीय स्वच्छता परिवर्तन कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए संरक्षक - प्रशिक्षु के रूप में साझेदारी

मुख्य संवाददाता / सुषमा रानी

नईदिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) और नगर परिषद - पलवल ने आज आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (एमओएचयूए) की " स्वच्छ शहर जोड़ी " (एसएसजे) पहल के तहत एक रणनीतिक साझेदारी को औपचारिक रूप दिया, जिसके तहत दोनों शहरों- एनडीएमसी मुख्यालय, पालिका केंद्र में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

"सुपर स्वच्छ शहर एक महत्वाकांक्षी शहर का मार्गदर्शन करता है" के रूप में, एनडीएमसी की ओर से माननीय परिषद सदस्य - सरिता तोमर और एनडीएमसी सचिव - तारिक थॉमस की उपस्थिति में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए, जबकि नगर परिषद पलवल की ओर से डॉ. यशपाल, अध्यक्ष और संजय कुमार, कार्यकारी अधिकारी उपस्थित थे।

यह समारोह एनडीएमसी मुख्यालय के तीसरी मंजिल स्थित काउंसिल रूम में आयोजित हुआ, जिसमें स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0 के तहत परिकल्पित 100-दिवसीय संरचित मेंटरशिप कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

एनडीएमसी पलवल शहर को खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ)++ और उससे आगे की राह पर मार्गदर्शन करेगी। राष्ट्रीय स्वच्छता रैंकिंग में इसके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एनडीएमसी को मेंटर सिटी के रूप में चुना गया है। यह स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 के तहत सुपर स्वच्छ लीग सिटी, 5-स्टार कचरा मुक्त शहर, शहरी अपशिष्ट जल के सतत पुनः उपयोग के लिए आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय और वाटर प्लस सिटी द्वारा प्रमाणित है।

दूसरी ओर, पलवल शहर, जिसे स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 में राष्ट्रीय स्तर पर 427वां स्थान मिला है और जिसे पहले ही खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) प्रमाणित किया जा चुका है, को प्राथमिकता के आधार पर सहायता प्रदान करने के लिए चुना गया है। जबकि दोनों शहर 50,000-3 लाख की आबादी वाली श्रेणी में आते हैं।

इस समझौते में मापन योग्य परिणामों के साथ संरचित मेंटरशिप के तहत एसएसजे दिशानिर्देशों के तहत, साझेदारी तीन चरणों में आगे बढ़ेगी - पहला, स्वच्छता अवसंरचना में आधारभूत "जैसा है" मूल्यांकन, दूसरा, सेवा वितरण और तीसरा, नागरिक भागीदारी, और मापन योग्य लक्ष्यों के साथ सह-डिज़ाइन की गई 100-दिवसीय कार्य योजना भी इसमें शामिल रहेगी। इसमें मासिक संयुक्त निगरानी और सहकर्मी शिक्षण दौरों के साथ कार्यान्वयन भी शामिल है।

इस समझौता ज्ञापन में मुख्य फोकस क्षेत्रों में स्रोत पृथक्करण और डोरस्टेप संग्रहण, नगरपालिका ठोस अपशिष्ट का मशीनीकृत परिवहन और प्रसंस्करण, शौचालय अवसंरचना रखरखाव और प्रयुक्त जल प्रबंधन, आईईसी और सामुदायिक भागीदारी अभियान, डिजिटल शिकायत निवारण और प्रतिक्रिया प्रणाली, सफाई कर्मचारियों की सुरक्षा, कौशल और मान्यता शामिल होंगे।

इस भागीदारी में "मार्गदर्शन से जमीनी कार्रवाई तक" की शर्तों के तहत, हस्ताक्षर के दौरान, एनडीएमसी अधिकारियों ने क्षेत्र-आधारित प्रदर्शनों, प्रदर्शन दौरों और अधिकारी-से-अधिकारी समन्वय तंत्र के माध्यम से नीति को व्यवहार में लाने के अपने संकल्प को दोहराया। पलवल के अधिकारियों ने विश्वास व्यक्त किया कि "एनडीएमसी के मार्गदर्शन से, पलवल 'स्वच्छ' से 'अनुकरणीय' की ओर अपनी यात्रा को तेज़ी से आगे बढ़ाएगा।₹

यह राष्ट्रव्यापी शुभारंभ, स्थानीय प्रतिबद्धता समझौता ज्ञापन की औपचारिकता माननीय केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री - मनोहर लाल खट्टर द्वारा स्वच्छ शहर जोड़ी पहल के राष्ट्रव्यापी शुभारंभ के साथ हुई। भारत भर के अनेक शहरों ने संरक्षक - प्रशिक्षु (मेंटर-मेंटी) जोड़ों के रूप में एक साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए है , जिससे केंद्र सरकार के "प्रतिस्पर्धा पर सहयोग" और "साझेदारी के माध्यम से प्रगति" पर ज़ोर दिया गया।

यह अंतर-नगरीय सहयोग का एक आदर्श एनडीएमसी पलवल शहर सहयोग है, जो सहकर्मी-संचालित शहरी सुधार का एक उदाहरण बनने के लिए तैयार है, यह दर्शाता है कि कैसे अग्रणी शहर संरचित ज्ञान-साझाकरण, नवाचार हस्तांतरण और सहानुभूति-आधारित शासन के माध्यम से आकांक्षी शहरों को आगे बढ़ा सकते हैं।

ओटोबॉक भारत में पहली वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आधिकारिक टेक्निकल सर्विस प्रोवाइडर होगा

12वीं वर्ल् ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 27 सितंबर से 5 अक्टूबर 2025 तक नई दिल्ली में होगी,

सुषमा रानी

नई दिल्ली, ओटोबॉक 12वें वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए आधिकारिक टेक्निकल सर्विस प्रोवाइडर है। इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप का आयोजन भारत में पहली बार 27 सितंबर से 5 अक्टूबर, 2025 तक नई दिल्ली में होगा। इस प्रमुख चैंपियनशिप में 20 से अधिक देशों के 1,000 से ज्यादा एथलीट 186 पदक स्पर्धाओं में भाग लेंगे, जो इस आयोजन के इतिहास में सबसे बड़ा जमावड़ा है।

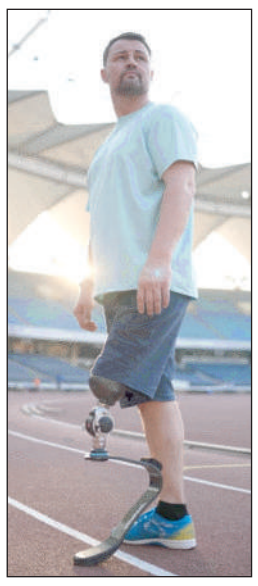

1988 से अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति के साथ 26 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ, ओटोबॉक खेलों के दौरान एथलीटों के कृत्रिम अंग (प्रोस्थेटिक्स), ऑर्थोटिक्स, और व्हीलचेयर को बेहतरीन प्रदर्शन के लिए बनाए रखने के लिए ऑन-साइट तकनीकी सेवाएं प्रदान करेगा।

इस चैंपियनशिप का उद्घाटन जानेमाने अतिथियों की उपस्थिति में हुआ, जिसमें डॉ. मनसुख एल. मंडाविया, माननीय केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री (मुख्य अतिथि), रक्षा निखिल खड़से, माननीय केंद्रीय युवा मामले और खेल राज्य मंत्री (विशेष अतिथि), रेखा गुप्ता, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार (सम्मानित अतिथि), आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री, दिल्ली सरकार (विशिष्ट अतिथि), और कंगना रनौत, सांसद, जो इंडियनऑयल नई दिल्ली 2025 डब्ल्यूपीए चैंपियनशिप की ब्रांड एम्बेसडर हैं (प्रमुख अतिथि), शामिल थे।

पैरालंपिक कमिटी ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट देवेंद्र झाझरिया ने कहा, ''भारत के लिए पहली बार वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप की मेजबानी करना गर्व की बात है। यह आयोजन सिर्फ खेल में उत्कृष्टता दिखाने का नहीं, बल्कि पैरा एथलीटों की हिम्मत, जज्बे और प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने का भी मौका है। ओटोबॉक, जो मोबिलिटी समाधानों में दुनिया में भरोसेमंद नाम है, के साथ साझेदारी से हमारे एथलीटों को भरोसा मिलता है कि उनके पास विश्व-स्तरीय तकनीकी सहायता है। हम साथ मिलकर समावेशन के नए मापदंड बना रहे हैं और देश भर में लाखों लोगों को खेल की असली भावना से प्रेरित कर रहे हैं।''

पीटर फ्रैंजल, खेल, आयोजन और प्रदर्शनी प्रमुख, ने कहा, "ओटोबॉक में, तीन दशकों से अधिक समय से, हम शानदार सेवा देने के लिए समर्पित हैं। हम सुनिश्चित करते हैं कि एथलीट बिना किसी चिंता या रुकावट के मुकाबला कर सकें। हमें एक्सपर्ट केयर और समय पर मरम्मत प्रदान करने में गर्व महसूस होता है ताकि एथलीट पूरी तरह से अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित कर सकें। पैरा एथलीटों का समर्थन हमारे मिशन का केंद्र है, और हम हर प्रमुख आयोजन में एक विश्वसनीय भागीदार होने पर सम्मानित महसूस करते हैं।"

हेनरिच पोपो, पूर्व पैरा-एथलेटिक चैंपियन और ओटोबॉक के ब्रांड एम्बेसडर, ने कहा, "इस बड़े स्तर पर विश्व-स्तरीय तकनीकी सहायता देना अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति के साथ हमारी पुरानी साझेदारी और रणनीतिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत में इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बनना हमें नए बाजारों में विस्तार करने, हितधारकों के लिए मूल्य बढ़ाने और समावेशी, तकनीक-आधारित स्वास्थ्य सेवा के हमारे विजन को आगे बढ़ाने का मौका देता है। एथलीटों को भरोसेमंद और नए समाधानों के साथ सशक्त करके, हम मैदान के अंदर और बाहर दोनों जगह प्रगति में योगदान दे रहे हैं।"

मालवीय नगर क्षेत्र में प्रॉपर्टी डीलर की हत्या, पुरानी दुश्मनी का परिणाम

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नईदिल्ली। 26.09.2025 को, जीडी नंबर 36ए के अनुसार, विजय मंडल पार्क, बेगमपुर, मालवीय नगर, नई दिल्ली में लक्षपत सिंह के रूप में पहचाना गया एक व्यक्ति पर क्रिकेट बैट और आग्नेयास्त्र से हमला किया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

घटनास्थल पर रक्त के धब्बे, टूटे हुए क्रिकेट बैट की हैंडल और बैट (बिना हैंडल) मिले। एआईआईएमएस अस्पताल से सूचना मिली कि घायल को अचेत अवस्था में भर्ती किया गया था और बाद में उसे मृत घोषित कर दिया गया।इसके बाद, पुलिस थाना मालवीय नगर में हत्या का मामला दर्ज किया गया।मामले की गंभीरता को देखते हुए, विभिन्न टीमों का गठन किया गया, जिनकी निगरानी श. रितु राज एसीपी/साकेत और डीसीपी दक्षिण जिला द्वारा की गई। टीमों के विवरण इस प्रकार हैं।एएटीएस/दक्षिण जिला टीमः इंस्पेक्टर उमेश यादव (IC/AATS दक्षिण जिला) के नेतृत्व में।पुलिस थाना मालवीय नगर टीम इंस्पेक्टर विनय यादव के नेतृत्व में।विशेष स्टाफ दक्षिण जिला टीमः इंस्पेक्टर अनुराग तोमर के नेतृत्व में।जांच के दौरान, आस-पास के क्षेत्र की सीसीटीवी फुटेज की बारीकी से जांच की गई। यह पता चला कि दो अज्ञात व्यक्ति एक काले रंग की हीरो स्प्लेंडर मोटरसाइकिल पर घटनास्थल पर पहुंचे और मृतक का पीछा करते हुए आये उसकी पार्क के अंदर हत्या कर दी।आरोपी अपने चेहरे ढके हुए थे और मोटरसाइकिल पर नंबर प्लेट नहीं थी। इस जानकारी के आधार पर पुलिस टीमों ने आरोपी की पहचान और उनकी यात्रा को ट्रैक करने के लिए सीसीटीवी फुटेज की जांच शुरू की।यह भी सामने आया कि मृतक लक्षपत सिंह के पास कई स्थानीय विवाद थे। इस बात की जांच की गई कि क्या कोई पुरानी दुश्मनी इसमें शामिल हो सकती है। यह पाया गया कि 2016 में मृतक लक्षपत कटारिया ने अपने साथियों के साथ खुशीराम पर शारीरिक हमला किया था, जिससे खुशीराम नौ महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहा था। इस हमले के बाद, खुशीराम ने मौत का बदला लेने की योजना बनाई थी।

प्रमुख समाजसेवी पेरिका सुरेश के नव निर्मित भवन के गृह प्रवेश के अवसर पर बधाई देने वालों का तांता

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। प्रमुख समाजसेवी, सनातन धर्मावलंबी एवं सदस्य राष्ट्रीय बीजेपी ओबीसी मोर्चा सोशल मीडिया पेरिका सुरेश के फाइनेंशियल डिस्टिक, हैदराबाद के नर्सिंगी स्थित नवनिर्मित भवन का गृह प्रवेश 27 नवंबर को पारंपरिक रीति रिवाज एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर गौ माता की पूजा, द्वार पूजा, मंडप आराधना, महा द्वार प्रवेशम, वास्तु पूजा, लक्ष्मी नारायण स्वामी कल्याणम, सुंदरकांड पाठ एवं यज्ञ हवन का पूरी आस्था, निष्ठा एवं धार्मिक विधि विधान से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सैकड़ो की संख्या में उनके शुभचिंतकों ने उपस्थित होकर उन्हें नवनिर्मित गृह प्रवेश पर आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर श्री सुरेश के राजनीतिक गुरु, सांसद एवं ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर के लक्ष्मण ने भी श्री सुरेश एवं उनके पूरे परिवार को आशीर्वाद दिया तथा उनके स्वस्थ, सुखद पारिवारिक जीवन की मंगल कामना की। श्री सुरेश से लोगों का पारिवारिक एवं आत्मीय संबंध है, क्योंकि उन्होंने हमेशा समाज सेवा के बदौलत सभी के दिलों में अपनी खास जगह बनाई है। वह सनातन धर्म की रक्षा एवं इसके संवर्धन के लिए दिन-रात लगे रहते हैं। देश में कहीं भी किसी धार्मिक अवसर पर वह सेवा भाव से अपनी जिम्मेदारियां का निर्वाह करते है। उनकी पहचान एक सामाजिक कार्यकर्ता एवं सनातन धर्म रक्षक के रूप में रही है, यही कारण है कि उनके गृह प्रवेश के दौरान सैकड़ो की संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर उन्हें आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी। इस शुभ अवसर पर श्री सुरेश ने सभी आगंतुको का मुंह मीठा कराया तथा सभी के लिए उत्तम भोजन की व्यवस्था की गई थी।

देश की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों पर मुस्लिम संगठनों का परिसंघ 'मुशावरत' का चिंतन

शम्स आगाज

नई दिल्लीः देश और समाज गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है, भारत का लोकतंत्र ख़तरे में है, हर तरफ़ भय और आतंक का माहौल है, जिसका हमें अटूट विश्वास और निडरता के साथ सामना करना होगा। यह विचार ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस ए मुशावरत के अध्यक्ष फिरोज अहमद एडवोकेट ने शनिवार को मुशावरत की कार्यकारी परिषद और आम सभा की संयुक्त बैठक में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमारा सबसे शक्तिशाली हथियार वोट है और स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि अब इसे कमजोर करने और यहां तक कि समाज के कमजोर वर्गों से यह शक्ति छीनने की साजिशें की जा रही हैं। वोट छीनने के लिए एसआईआर का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दबे-कुचले लोगों को एकजुट होने, एक साथ बैठने और मिलकर काम करने की जरूरत है। इसके लिए मुशावरत के अध्यक्ष ने नवंबर के अंत या दिसंबर की शुरुआत में एक अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव रखा, जबकि मुशावरत के उपाध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम मेहदी सलफी ने कहा कि आज हमारा समाज पहले से कहीं अधिक अव्यवस्थित और अज्ञानी है। हमें पहले अपने युवाओं को प्रशिक्षित करने की जरूरत है, फिर उन्हें आगे बढ़ाने की। पूर्व सांसद सैयद अज़ीज़ पाशा ने कहा कि मुशावरत को कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर जगह मज़बूत और सक्रिय करने की ज़रूरत है, और पूर्व सांसद कुंवर दानिश अली ने ज़ोर देकर कहा कि मुशावरत पूरी ताकत से और हर स्तर पर सक्रिय किया जाए, और हमें हर कुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रोफ़ेसर बसीर अहमद ख़ा ने ज़्यादा से ज़्यादा पार्टियों और हर छोटे-बड़े संगठन के प्रतिनिधियों को शामिल करने पर ज़ोर दिया, तो डॉ. अनवारुल इस्लाम ने कहा कि मुशावरत को संगठनात्मक मुद्दों और मतभेदों से आगे बढ़कर अपने मूल लक्ष्य और घोषणा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। श्री हारून रशीद (मुर्शिदाबाद), मोहम्मद अहमद मोमिन (औरंगाबाद),

अब्दुल कय्यूम ख़ान (श्रीनगर) और प्रोफ़ेसर अक़ील अली सैयद (गुजरात) ने मुशावरत को ज़मीनी स्तर पर सक्रिय बनाने का प्रस्ताव रखा, जबकि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के सचिव श्री मुहम्मद आसिफ ने सुझाव दिया कि मुशावरत को राजनीतिक दलों से भी मिलना चाहिए और उनके नेताओं को चर्चा के लिए आमंत्रित करना चाहिए। मुस्लिम संगठनों के परिसंघ, आल इंडिया मुस्लिम मजलिसे-मुशावरत के इस अधिवेशन ने दर्जन भर से अधिक प्रस्तावों को स्वीकृति दी।

जिनमें सांप्रदायिक हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति की निंदा, उत्पीड़ितों की एकता पर ज़ोर, बरेली में हुई हिंसा पर चिंता, गुजरात, असम, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, झारखंड और अन्य भाजपा शासित राज्यों में सरकारी मशीनरी द्वारा मुसलमानों को निशाना बनाए जाने पर चिंता व्यक्त की गई और पीड़ितों को उनके नुकसान की भरपाई की माँग की गई। मुशावरत ने इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना ताक़ीर रज़ा ख़ान की नज़रबंदी की निंदा की और उनकी आवाजाही पर लगे सभी प्रतिबंध हटाने की माँग की। बैठक में असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड और देश के विभिन्न हिस्सों में मदरसों और मस्जिदों को अवैध रूप से ध्वस्त करने और मुसलमानों पर बुलडोज़र चलाने को संविधान और क़ानून का उल्लंघन बताया गया और इसी तरह, कानपुर और बरेली में ₹आई लव मुहम्मद₹ पोस्टर को लेकर पुलिस की अनुचित कार्रवाई को बेहद निंदनीय और असहनीय बताया गया।

ये त्रिदेवियां दुष्टों पर टूटती हैं काल बनकर

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज न्यूज़ जिले की ये त्रिदेवियां दुष्टों पर टूटती हैं काल बनकर, अपराध और अनन्या के विरुद्ध खादी निवास करती हैं मां दुर्गा के रूप में

जिले की महिला सुरक्षा पुलिस अधिकारी अपने कर्तव्य और कर्तव्यनिष्ठा से समाज में सेवा और उदाहरण पेश कर रही हैं। एसपीआई एसके शर्मा, सदर वकीच आँचल चौहान और सहावर शेखा नसरीन को जनता माँ दुर्गा के स्वरूप से कम नहीं मिला। इन अधिकारियों ने हार्ड माउंटेन में रेज़ॉलूशन को न्यायसंगत बनाने, अपराध को नियंत्रित करने और विभिन्न पहलुओं को हल करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

-माँ दुर्गा के रूप में समाज की सेवा कर रही महिला पुलिस अधिकारी

जिले की महिला सुरक्षा पुलिस अधिकारी अपने कर्तव्य और कर्तव्यनिष्ठा से समाज में सेवा और उदाहरण पेश कर रही हैं। एसपीआई एसके शर्मा, सदर वकीच आँचल चौहान और सहावर शेखा नसरीन को जनता माँ दुर्गा के स्वरूप से कम नहीं मिला। इन अधिकारियों ने हार्ड माउंटेन में रेज़ॉलूशन को न्यायसंगत बनाने, अपराध को नियंत्रित करने और विभिन्न पहलुओं को हल करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

स्कीस्टिक शायर अपने सशक्त आक्षेप और सामग्री नेतृत्व के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने कई महत्वपूर्ण मामलों में तत्काल कार्रवाई कर समानता का विश्वास जीता है। वहीं, डंकल चौहान महिला सुरक्षा और कानून-व्यवस्था की संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। जादू सहावर आमिरा नसरीन ने भी क्षेत्रीय स्तर पर जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए अपने समाधान कर सुदृढ़ संस्था का निर्माण किया है। इन महिला अधिकारियों की कार्यशैली और जनता की प्रतिभा के कारण जिलों में उनकी विशेष पहचान होती है। लोग कहते हैं कि जैसी मां दुर्गा दुष्टों का अंत कर जन कल्याण करती है, वैसे ही ये अधिकारी अपराध और अन्याय के खिलाफ डटकर डंक मारते हैं। उनका यह प्रयास है समाज को नई दिशा देने वाला।

उत्तर प्रदेश में कानून तोड़ने वालों को जहन्नुम का टिकट तत्काल में दिला देगे

रिपोर्ट अंकित गुप्ता लखनऊ, मुख्यमंत्री *योगी* आदित्यनाथ ने *अपराधियों* और असामाजिक *तत्वों* को *कड़ा संदेश* देते हुए *कहा* कि "जिसने भी *कानून* को *हाथ* में *लेने* का प्रयास किया, उसको *बिना मांगे जहन्नुम* का *टिकट करवा* कर देंगे।" उन्होंने *स्पष्ट किया* कि उत्तर *प्रदेश* में *कानून* से *खिलवाड़* करने वालों को *किसी* भी *कीमत* पर *बख्शा नहीं* जाएगा। मुख्यमंत्री ने *कहा कि* प्रदेश सरकार की प्राथमिकता जनता की सुरक्षा और शांति है, इसलिए अपराधियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होगी। उनके इस बयान को लेकर राजनीतिक गलियारों से लेकर आम जनता में चर्चाएं तेज हो गई हैं। वही समर्थक इसे अपराधियों पर सख्ती का संकेत मान रहे हैं।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

करूर (तमिलनाडु): तमिलनाडु के करूर में अभिनेता विजय की रैली में भगदड़ मचने से 39 लोगों की मौत हो गई और 50 से अधिक लोग घायल हुए। रैली में भीड़ उम्मीद से ज्यादा थी, जिससे स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई। घायलों को स्थानीय अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। तमिलनाडु सरकार ने मृतकों के परिवारों को 10 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने घटना पर गहरी चिंता व्यक्त की और तमिलनाडु सरकार से रिपोर्ट मांगी। राज्य सरकार ने न्यायिक जांच आयोग गठित कर मामले की निष्पक्ष जांच कराने का निर्णय लिया है। विशेषज्ञों ने इस घटना को भीड़ नियंत्रण और सार्वजनिक कार्यक्रमों में सुरक्षा व्यवस्थाओं की गंभीर कमी बताया है।

बरैली में हुआ अन्याय,सरकार धर्म के आधार पर कार्यवाही कर रही

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

नगीना सांसद व आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्र शेखर आजाद ने सरकार पर बोला हमला, बरैली में हुआ अन्याय,सरकार धर्म के आधार पर कार्यवाही कर रही हैं, ट्रिपल इंजन कि सरकार होने के बावजूद पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाई कोर्ट बेंच नहीं, I मुहम्मद प्रकरण को सरकार ने बनाया क्राइम....

आजाद समाज पार्टी का प्रबुद्ध जन सम्मेलन मुरादाबाद में संपन्न हुआ, अस्तित्व बचाओ /भाईचारा बनाओ पर कार्यक्रम में जोर दिया गया, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे राष्ट्रीय अध्यक्ष वह नगीना सांसद चंद्रशेखर आजाद एडवोकेट ने कहा कि हमने पूरे प्रदेश के 18 मंडल में इस तरह के सम्मेलन आयोजित किए थे, आजाद समाज पार्टी को जनता का भरपूर प्यार मिला है, पढ़े-लिखे लोग पार्टी से जुड़कर अपना आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं, हमारी पार्टी आगामी पंचायत चुनाव में बड़ी सफलता हासिल करेगी और बड़ा दल बनकर उत्तर प्रदेश की जनता की सेवा करेंगे..

प्रबुद्ध जन सम्मेलन समाप्ति के बाद, आजाद समाज पार्टी के द्वारा दूसरे कार्यक्रम चलाए जाएंगे, जोकि आगामी विधानसभा तक जारी रहेंगे, आजाद समाज पार्टी का मिशन है की पार्टी के कार्यकर्ता मैदान में डटकर, गली गली व गांव-गांव जाकर जनमत तैयार करेंगे...

सांसद नगीना चंद्रशेखर आजाद ने सम्मेलन के दौरान बीजेपी पर जमकर निशाना साधा, सरकार को घेरते हुए उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में किसान परेशान है, यूरिया की भारी किल्लत देखने को मिल रही है, पढ़ा लिखा नौजवान भी परेशान है, बेरोजगारी अपने चरम पर है, बार-बार भर्ती घोटाला हो रहा है, उत्तर प्रदेश में जंगल राज है....

बरेली की घटना का जिक्र करते हुए चंद्रशेखर आजाद ने कहा की बरेली में अन्याय हुआ है, एक प्रदेश में दो कानून चल रहे हैं, बरेली में शांतिपूर्ण प्रोटेस्ट करने हेतु लोग आए थे, पुलिस चाहती तो उनको समझा सकती थी किंतु लाठी चार्ज किया गया. वही फतेहपुर की घटना का जिक्र करते हुए चंद्रशेखर आजाद ने कहा की फतेहपुर में मकबरा तोड़ा जाता है पर सरकार खामोश रहती है, उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार धर्म के आधार पर कार्रवाई कर रही है, उन्होंने सरकार को चेताया की आजाद समाज पार्टी इस अन्याय के विरुद्ध बड़ा प्रोटेस्ट करेगी...

चर्चा में चल रहे आई लव मोहम्मद प्रकरण पर भी सांसद नगीना चंद्रशेखर आजाद ने अपना पक्ष रखा, उन्होंने कहा कि भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, यहां सभी को अपने-अपने धर्म के सम्मान करने की इजाजत है, किंतु सरकार ने इस क्राइम बना दिया है,सरकार चाहती है कि असंतोष बना रहे ताकि जनता रोटी/कपड़ा और मकान की बात ना कर सके, यह सरकार की सोची समझी साजिश है...

विपक्षद्वारा उठाये जा रहे वोट चोरी प्रकरण पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि इसका जवाब चुनाव आयोग को देना चाहिए, किंतु जवाब बीजेपी दे रही है..

चंद्रशेखर आजाद ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी निशाना साधते हुए बोला कि ट्रिपल इंजन की सरकार होने के बावजूद पश्चिमी उत्तर प्रदेश की महत्वपूर्ण हाई कोर्ट बेंच की मांग आखिर क्यों पूरी नहीं हो रही, चंद्रशेखर आजाद ने कहा उत्तर प्रदेश सरकार की इंटेलीजेंस व्यवस्था व क़ानून व्यवस्था कमजोर है....

हेमा मालिनी ने सुनी 'मन की बात', पीएम मोदी के संदेश को सराहा

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

मथुरा। मथुरा की सांसद और अभिनेत्री हेमा मालिनी ने आज महोली रोड स्थित जय गुरुदेव अस्पताल परिसर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को सुना। इस अवसर पर उनके साथ कई भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

'मन की बात' कार्यक्रम सुनने के बाद हेमा मालिनी ने मीडिया से बात करते हुए प्रधानमंत्री के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम 'बहुत प्रसिद्ध' है और पीएम मोदी 'बहुत ही सुंदर तरीके से देशवासियों को जोड़ते हैं।'

पीएम मोदी के विज़न की प्रशंसा

सांसद हेमा मालिनी ने कहा कि 'मन की बात' के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी गरीब हो या उच्च श्रेणी के लोग, हर वर्ग के टैलेंट को उभारने का काम करते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा कार्यक्रम में उठाए गए कुछ विषयों का भी उल्लेख किया।

उन्होंने बताया कि पीएम मोदी ने इंडियन नेवी की महिला अधिकारियों की उपलब्धियों को सराहा और असम के एक प्रसिद्ध सिंगर के बारे में भी जानकारी दी। हेमा मालिनी ने प्रधानमंत्री द्वारा स्वदेशी अपनाने की बात को 'गर्व की बात' बताया।

दुखद घटना पर जताया शोक

सांसद ने हाल ही में दक्षिण भारत में एक कलाकार के कार्यक्रम के दौरान हुई भगदड़ या दुर्घटना में लोगों की मौत पर गहरा दुःख जताया। उन्होंने कहा कि जो हुआ वह 'अच्छा नहीं हुआ'।

निजी सवाल से किया किनारा

पत्रकारों द्वारा पूछे गए एक सवाल, जिसमें 'आई लव मोहम्मद' का जिक्र था, पर सांसद हेमा मालिनी ने कोई टिप्पणी न करते हुए किनारा कर लिया। इस दौरान उन्होंने केवल पीएम मोदी के संदेश और सार्वजनिक मुद्दों पर ही बात की।

कैरियर हमेशा सिर्फ कमाई का साधन ही नहीं रहा, वह सामाजिक हैसियत का आईना भी होता है

विजय गर्ग

1980 का दशक आते-आते बैंक और वित्तीय संस्थानों में अधिकारी होना महत्वपूर्ण हो गया था। दरअसल 1980 के दशक में हर कोई अपना कारोबार जमाने या अपनी हैसियत को ऊपर उठाने के लिए बैंक से लोन लेकर आगे बढ़ रहा था। इन दिनों बड़े पैमाने पर देश में पक्के मकान बनने शुरू हुए और होम लोन का एक सिलसिला भी। जिस कारण समाज में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण बन गई। 1980 के पहले बैंकों से रिश्ता बमुश्किल 20-25 फीसदी भारतीयों का था, उसके बाद 40-50 प्रतिशत लोग किसी न किसी रूप से बैंक से जुड़ने लगे।

विजय गर्ग

कैरियर हमेशा सिर्फ कमाई का साधन ही नहीं रहा, वह सामाजिक हैसियत का आईना भी होता है, इस बात को हम सब जानते हैं। एक जमाने में डॉक्टर और इंजीनियर बनना महज एक पेशा चुनना नहीं था बल्कि में सोशल स्टेटस हासिल करना भी था। ठीक उसी तरह से जैसे इन दिनों किसी टेक्नो स्टार्टअप का फाउंडर होना या किसी बड़ी टेक कंपनी में मैनेजमेंट में होना है। इस समय के सोशल स्टेटस कैरियर्स में डेटा साइंटिस्ट, एआई एक्सपर्ट जैसे टेक वर्ल्ड के नये डॉक्टर, इंजीनियर , फिल्म और ओटीटी से जुड़े क्रिएटिव कैरियर स्टेटस सिंबल हैं। सोशल मीडिया में बड़ा कंटेंट क्रिएटर होना भी स्टेटस है। लेकिन सबसे लोकप्रिय कैरियर स्पोर्ट्स की दुनिया से आते हैं, वह भी क्रिकेट और बैडमिंटन जैसे खेलों से। लेकिन अगर टेक्नोलॉजी की ठोस दुनिया की बात करें तो ग्रीन एनर्जी और हेल्थ केयर सेक्टर ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कैरियर बनाना स्टेटस सिंबल है।

आईसीएस, आईएएस की शान

लेकिन आज के ये तमाम कैरियर एक दशक के पहले तक भी रोजगार के परिदृश्य में नहीं थे और अगर थे भी तो इनकी खास हैसियत नहीं थी। आजादी के बाद अलग-अलग दशकों में अलग अलग कैरियर भारत में सोशल स्टेटस सिंबल रहे हैं। अगर 1950 से 1960 के दशक तक सरकारी अफसर होना विशेषकर आईसीएस, आजादी के बाद में आईएएस और आईपीएस होना न सिर्फ कैरियर के लिहाज से बल्कि समाज में इज्जत के लिहाज से भी शानदार था।

डॉक्टर और प्रोफेसर की प्रतिष्ठा का दौर

इसके बाद 1960 के दशक में जिन पेशों को हम समाज की नजरों में सबसे ऊंचा पेशा गिन सकते थे, उनमें डॉक्टर और प्रोफेसर की इंट्री हो गई। नेहरू युग में विज्ञान, स्वास्थ्य और शिक्षा पर खूब जोर दिया गया था, साथ ही इन पेशों की अच्छी खासी इज्जत भी बनी। सत्तर के दशक में यह हैसियत इंजीनियरों और पीएसयू में प्रोफेशनल्स होना कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया था। दरअसल 1970 का दौर भारी उद्योग और पब्लिक सेक्टर का दौर था। इसी दौर में भेल, सेल और ओएनजीसी पब्लिक उपक्रम देश की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाने वाले उपक्रम बनकर उभरे थे। ऐसे में इन संस्थानों में इंजीनियर होना, सामाजिक रूप से गर्व की बात थी और यही वह दौर था, जब आईआईटी से निकलना भी हीरो बनने के जैसा था।

बैंक मैनेजर और रेलवे के अफसर

1980 का दशक आते-आते बैंक और वित्तीय संस्थानों में अधिकारी होना महत्वपूर्ण हो गया था। दरअसल 1980 के दशक में हर कोई अपना कारोबार जमाने या अपनी हैसियत को ऊपर उठाने के लिए बैंक से लोन लेकर आगे बढ़ रहा था। इन दिनों बड़े पैमाने पर देश में पक्के मकान बनने शुरू हुए और होम लोन का एक सिलसिला भी। जिस कारण समाज में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण बन गई। 1980 के पहले बैंकों से रिश्ता बमुश्किल 20-25 फीसदी भारतीयों का था, उसके बाद 40-50 प्रतिशत लोग किसी न किसी रूप से बैंक से जुड़ने लगे। जाहिर है इस दौर में बैंक ऑफिसर होना महत्वपूर्ण हो गया था। उस दौर में बैंक मैनेजर की पूछ बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। इसके अलावा एलआईसी में मैनेजर के पद में होना, रेलवे में बड़ा अधिकारी होना और टेलीकॉम सेक्टर में इंजीनियर होना भी शानदार था।

आईटी और एमबीए के चमकते कैरियर

फिर आया 1990 का दशक जिसमें आईटी और एमबीए सबसे महत्वपूर्ण सोशल स्टेटस बनाने वाले कैरियर बनकर उभरे। लिबरलाइजेशन के बाद भारत में पहली बार आईटी क्रांति हुई, इन्फोसिस, टीसीएस और विप्रो जैसी कंपनियों में नौकरी पाना आईएएस या आईपीएस से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। आईआईएम से एमबीए और एमएनसी में जाना स्टेटस सिंबल बन गया। एनआरआई खास तौरपर अमेरिका में नौकरी भी समाज की सबसे ऊपरी प्रतिष्ठा का हिस्सा बन गया। कारपोरेट मैनेजमेंट और ग्लोबल कैरियर पढ़े-लिखे शहरी, मिडल क्लास के बीच सबसे बड़े सोशल स्टेटस सिंबल बने।

स्टार्टअप, क्रिएटिव इंडस्ट्री से एआई

लेकिन साल 2000 का दशक आते-आते स्टार्टअप और क्रिएटिव इंडस्ट्री की दुनिया चमकी। जिस कारण फ्लिपकार्ट, पेटीएम, ओला जैसे स्टार्टअप फाउंडर्स को समाज में हर कोई जानने लगा और इनकी चर्चा होने लगी। डिजिटल मीडिया, फिल्म निर्माण और फैशन इंडस्ट्री भी स्टेटस का प्रतीक बन गये। कारपोरेट लॉयर के अलावा चार्टर्ड एकाउंटेंट का पेशा भी महत्वपूर्ण सोशल स्टेटस बना। जबकि 2020 के दशक में टेक और सोशल इम्पैक्ट में एआई, रोबोटिक और डाटा साइंस ने हैसियत की जगह घेर ली और सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर्स तथा कंटेंट क्रिएटर भी बड़े पैमाने पर नोटिस लिए जाने लगे। इसी दौरान ग्रीन एनर्जी और क्लाइमेट इंटरप्रिन्योर की भी प्रतिष्ठा बढ़ी। क्रिकेट के अलावा इस दौर में सफल खिलाड़ी भी महत्वपूर्ण कैरियर माने गये।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

नोबल पुरस्कार महान खोजों का सम्मान करते हैं - लेकिन विज्ञान को बहुत कुछ अदृश्य छोड़ देते हैं

यह एक बहुत ही अंतर्दृष्टिपूर्ण बात है, और यह नोबेल पुरस्कारों की सामान्य आलोचना को दर्शाता है। यद्यपि वे निस्संदेह वास्तव में स्मारकीय सफलताओं पर भारी प्रकाश डालते हैं, लेकिन उन्हें अक्सर कई कारणों से वैज्ञानिक प्रयास का अधिकांश भाग 'अदृश्य' छोड़ने के रूप में देखा जाता है

तीन का नियम और सहयोग विज्ञानः नोबेल विधान पुरस्कार को अधिकतम तीन लोगों तक सीमित करता है। आधुनिक विज्ञान एक व्यापक, अंतर्राष्ट्रीय और टीम-आधारित प्रयास है। यह नियम अपरिहार्य रूप से कई अन्य आवश्यक वैज्ञानिकों, पोस्टडॉक्स, तकनीशियनों और टीम सदस्यों के महत्वपूर्ण योगदान को नजरअंदाज करता है जो खोज में महत्वपूर्ण थे। यह ₹एकान्त प्रतिभा₹ का मिथक कायम रखता है

संपूर्ण क्षेत्रों का बहिष्कारः नोबेल पुरस्कार केवल भौतिकी, रसायन विज्ञान और शारीरिक विज्ञान या चिकित्सा (साथ ही साहित्य, शांति और अर्थशास्त्र) में दिए जाते हैं। गणित, कंप्यूटर विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भूविज्ञान और इंजीनियरिंग जैसे प्रमुख, मौलिक क्षेत्र पूरी तरह से बाहर हैं, जिसका अर्थ है कि इन क्षेत्रों में महान खोजों को अन्यत्र मान्यता मिलनी चाहिए।

मूल बनाम। एप्लाइड/क्लिनिकल साइंसः आवश्यक अनुप्रयोग विज्ञान, नैदानिक अनुवाद या तकनीकी विकास पर मूलभूत, मौलिक खोज को पुरस्कृत करने की ओर अक्सर पूर्वाग्रह होता है जो शोध मानव जाति के लिए लाभदायक बनाता है।

मरणोपरांत सीमा और समयः नोबेल पुरस्कार मरणोत्तर नहीं दिए जा सकते। इससे प्रसिद्ध अन्याय हो गए हैं, जहां डीएनए संरचना के लिए महत्वपूर्ण योगदानकर्ता (जैसे रोज़लिंड फ्रैंकलिन) अपने काम को पूरी तरह से मान्यता या पुरस्कार देने से पहले ही मर जाते हैं। इसके अलावा, समितियां अक्सर किसी खोज का प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए दशकों तक इंतजार करती हैं, जिसका अर्थ है कि कई योग्य वैज्ञानिक उनके समय से पहले मर जाते हैं।

₹मानवजाती के लिए सबसे बड़ा लाभ₹ पर ध्यान देंः अल्फ्रेड नोबेल की इच्छा में यह पुरस्कार उन लोगों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने मानव जाति को ₹सबसे बड़ा लाभ₹ प्रदान किया है यह ध्यान, भले ही महान हो, लेकिन कभी-कभी कुछ प्रकार की प्रभावशाली, शीर्षक पकड़ने वाली खोजों के लिए प्राथमिकता पैदा कर सकता है, शायद गहराई से मौलिक, लेकिन कम तुरंत दृश्यमान योगदान की कीमत पर। संक्षेप में, नोबेल पुरस्कार वैज्ञानिक उपलब्धि के विशिष्ट और उच्च प्रभाव वाले टुकड़े का जश्न मनाने के लिए शानदार हैं, लेकिन संरचना, मानदंड और सीमित दायरा का मतलब है कि वे आधुनिक विज्ञान के विशाल, सहयोगी और विविध परिदृश्य को कैप्चर नहीं कर सकते।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद,

पृथ्वी की "पवन" गुप्त रूप से चंद्रमा को जंग दे रही है

विजय गर्ग

यह खोज मौजूदा धारणाओं को चुनौती देती है, क्योंकि चन्द्रमा पर मोटापा और तरल पानी दोनों ही काफी हद तक अनुपस्थित होते हैं। चंद्रमा पर एक आश्चर्यजनक खोज चंद्रमा, जिसे लंबे समय से भूवैज्ञानिक रूप से निष्क्रिय और सूखा माना जाता था, ने वैज्ञानिकों को एक बार फिर आश्चर्यचकित कर दिया है। हाल के वर्षों में शोधकर्ताओं ने इसकी सतह पर, विशेष रूप से ध्रुवों के पास, लोहे के ऑक्साइड का एक प्रकार पाया है। प्रकृति में हाल ही की रिपोर्टों से पता चलता है कि चंद्रमा जंग का एक रूप ले रहा है, जिसमें इसकी सतह पर खनिज हेमेटइट (आयरन ऑक्साइड का एक प्रकार) देखा गया है, विशेषकर ध्रुवीय क्षेत्रों में। यह खोज मौजूदा धारणाओं को चुनौती देती है, क्योंकि चन्द्रमा पर मोटापा और तरल पानी दोनों ही काफी हद तक अनुपस्थित होते हैं।

पृथ्वी पर, जब समय के साथ ऑक्सीजन और नमी का संपर्क किया जाता है तो लोहा ऑक्सिडेड हो जाता है। चंद्रमा का वातावरण कठोर होता हैः सौर हवा से हाइड्रोजन किसी भी ऑक्सीकृत लोहे को उसकी धातु की स्थिति में वापस कम करता है, जिससे निरंतर जंग नहीं होती। चंद्रमा के

वायुमंडल और तरल पानी की कमी को देखते हुए, हेमेटाइट की उपस्थिति एक रहस्य बना रही थी, जब तक कि वैज्ञानिक पृथ्वी की भागीदारी की संभावना का पता नहीं लगाते। यह अध्ययन चीन के मकाऊ यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में एक ग्रह वैज्ञानिक झिलियांग जिन द्वारा किया गया था। उन्होंने और उनके सहयोगियों ने भू-भौतिक अनुसंधान पत्रों में अपनी खोजें रिपोर्ट कीं।

पृथ्वी की ₹वायु₹ चंद्रमा तक पहुंचती है प्रकृति रिपोर्ट में 'पृथ्वी की हवा' नामक तंत्र पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक चंद्र चक्र में लगभग पांच दिनों तक पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच स्थित होती है, जिससे चंद्रमा पृथ्वी की चुंबकीय पूंछ के भीतर स्थित होता है। इस अवधि के दौरान, पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र चंद्रमा को कई सौर कणों और ऑक्सीजन आयन (और अन्य वायुमंडलीय कण) से बाहर तक बचाता है। ये ऑक्सीजन आयन चंद्रमा की सतह में प्रत्यारोपण कर सकते हैं और समय के साथ हीमेटाइट पैदा करते हैं।

मैग्नेट टेल और पृथ्वी की हवा पृथ्वी का चुंबकीय पूल न केवल चंद्रमा तक ऑक्सीजन पहुंचाता है बल्कि इसे सौर कणों की सामान्य धारा से भी बचाता है। हाइड्रोजन बमबारी को कम करके, मैग्नेटटेल ऑक्सीकरण के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियां पैदा करता है। वैज्ञानिकों ने इसे अवसर की एक खिड़की के रूप में वर्णित किया है जब चंद्र लोहा ऑक्सीजन के साथ प्रतिक्रिया कर सकता है और जंग बना सकता है। यह माना जाता है कि चंद्र चक्र के इन चरणों में, हर महीने लगभग पांच से छह दिन, ऑक्सीकरण सबसे प्रभावी ढंग से होता है।

प्रयोगात्मक पुष्टि इस सिद्धांत का परीक्षण करने के लिए, जिन और उनके सहयोगियों ने प्रयोगशाला सिमुलेशन किया। उन्होंने हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के आयनों को गति दी और उन्हें चंद्रमा पर मौजूद लोहे से भरपूर खनिजों पर निर्देशित किया। प्रयोगों से पता चला कि ऑक्सीजन आयन लोहे के खनिजों को हेमेटाइट में परिवर्तित कर सकते थे, जबकि हाइड्रोजन आयन प्रक्रिया को उलट देते हैं। यह इस विचार का समर्थन करता है कि चुंबकीय पूंछ द्वारा ले जाने वाली पृथ्वी की वायुमंडलीय ऑक्सीजन धीरे-धीरे चंद्रमा को रस्ट कर सकती है।

खोज 6 / 7 में चंद्रयान-1 की भूमिका (फोटोः नासा ट्विटर पर साझा करें इस खोज में चंद्रयान-1 की भूमिका 2008 में लॉन्च किए गए भारत के चंद्रयान-1 ऑर्बिटर ने ध्रुवों के पास हेमेटाइट की अप्रत्याशित उपस्थिति का पता लगाने वाले स्पेक्ट्रल डेटा एकत्र करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नासा और हवाई विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा बाद में किए गए विश्लेषण ने निष्कर्ष की पुष्टि की और सुझाव दिया कि पृथ्वी वायु-चालित ऑक्सीकरण एक संभावित कारण था। ये खोज चंद्रयान-1 की विरासत में जोड़ती हैं, जिसमें चन्द्रमा की सतह पर पानी के अणुओं का पता लगाना भी शामिल है।

भविष्य की खोज के लिए प्रभाव चंद्रमा पर जंग की उपस्थिति पृथ्वी-चंद्रा के परस्परसंवादों का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है और हमारे ग्रह के वायुमंडल के सूक्ष्म प्रभाव को इसकी तत्काल सीमाओं से परे उजागर करती है। इन प्रक्रियाओं को समझना भविष्य की चंद्र अन्वेषण के लिए व्यावहारिक प्रभाव डाल सकता है, जिसमें शामिल हैं कि उपकरण चंद्र मिट्टी के दीर्घकालिक संपर्क का सामना कैसे कर सकते हैं और संसाधनों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,

पुलिस मुठभेड़ में गौ तस्कर गिरफ्तार: मथुरा के नौहझील में दो बदमाश घायल

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

मथुरा जिले की नौहझील पुलिस को आज बड़ी सफलता मिली है, जहां देर रात हुई एक पुलिस मुठभेड़ में गौ तस्करी के दो वांछित बदमाश घायल होने के बाद गिरफ्तार कर लिए गए। यह घटना बीती रात २८ सितंबर, २०२५ की है। थाना नौहझील पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि गौवध अधिनियम के एक मामले में वांछित चल रहे कुछ बदमाश इलाके में सक्रिय हैं और किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में हैं।

सूचना के आधार पर, नौहझील पुलिस टीम ने तुरंत अहमदपुर गाँव के रोड पर गढ़ी कौलाहार जाने वाले रास्ते के पास चेकिंग अभियान शुरू कर दिया।

रात लगभग १२:45 बजे, कौलाहार से अहमदपुर की ओर आ रही एक मोटर साइकिल पर दो लोग दिखाई दिए। पुलिस ने जैसे ही उन्हें रुकने का इशारा किया, बदमाशों ने खुद को घिरा देखकर पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नीयत से ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी।

पुलिस टीम ने तुरंत मोर्चा संभाला और आत्मरक्षा में जवाबी फायरिंग की। इस मुठभेड़ में दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लगी, जिससे वे घायल होकर जमीन पर गिर पड़े और उन्हें मौके पर ही दबोच लिया गया।

पुलिस ने बताया कि घायल बदमाशों को तुरंत प्राथमिक उपचार के लिए जिला अस्पताल मथुरा में भर्ती कराया गया है। उनकी पहचान सगे भाइयों के रूप में हुई है, जो अलीगढ़ जनपद के खैर थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं।

गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान सुनील पुत्र मोहन और अनिल पुत्र मोहन के रूप में हुई है। इन दोनों का ही आपराधिक

इतिहास है, जिसमें गौवध अधिनियम, हत्या के प्रयास (धारा ३07) और गैंगस्टर एक्ट जैसे गंभीर मामले दर्ज हैं।

मुठभेड़ स्थल से पुलिस ने भारी मात्रा में आपत्तिजनक सामान भी बरामद किया है, जिसमें दो अवैध तमंचे ३15 बोर, जिंदा और खोखा कारतूस, गौकशी के लिए इस्तेमाल होने वाले औजार- एक कुल्हाड़ी और एक फरसा, तथा नशे के इंजेक्शन और सीरिंज शामिल हैं। इसके अलावा, उनकी विक्रांत मोटर साइकिल (रजिस्ट्रेशन नम्बर UP 85 AY २140) भी जब्त कर ली गई है।

मथुरा पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई से क्षेत्र में गौ-तस्करी और संगठित अपराधों में लिप्त गिरोहों को बड़ा झटका लगा है। पुलिस ने आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

: नौहझील पुलिस की इस बहादुरी और सतर्कता ने एक बड़ी आपराधिक घटना को टाल दिया है। पुलिस का कहना है कि क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपराधियों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई जारी रहेगी।

मस्तिष्क सभी अपनी उम्र का काम नहीं करते

विजय गार्ग

यह एक गहन और बहुत सटीक अवलोकन है। यह विचार कि सभी मस्तिष्क अपनी उम्र के अनुसार कार्य नहीं करते, न्यूरोसाइंस में रोमांचक अनुसंधान का केंद्र है, मुख्य रूप से ₹मस्तिष्क आयु₹ नामक अवधारणा के आसपास मस्तिष्क युग क्या है? मस्तिष्क की आयु एक ऐसा उपाय है जिसका उपयोग वैज्ञानिक लोग किसी व्यक्ति के मस्तिष्क के कार्यात्मक और संरचनात्मक स्वास्थ्य का आकलन करने के लिए करते हैं जो उनकी कालानुक्रमिक उम्र के लिए विशिष्ट है।

यह कैसे काम करता हैः शोधकर्ता 'विकास चार्ट' बनाने के लिए एमआरआई स्कैन और बड़े पैमाने पर डेटा सेट जैसे उन्नत उपकरणों का उपयोग करते हैं जो जीवन भर में ग्रे और सफेद पदार्थ जैसे मस्तिष्क घटकों को बदलते रहते हैं। फिर वे केवल मस्तिष्क स्कैन के आधार पर किसी व्यक्ति की आयु का अनुमान लगाने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करते हैं।

ब्रेन एज गैपः इस अनुमानित मस्तिष्क आयु और किसी व्यक्ति की वास्तविक उम्र के बीच अंतर को ₹मस्तिष्क युग गैप₹ कहा जाता है अंतर क्यों मायने रखता है एक मस्तिष्क जो किसी व्यक्ति की कालानुक्रमिक आयु से काफी पुराना लगता है, वह संभावित समस्याओं का प्रारंभिक संकेत हो सकता है। अनुसंधान ने उन्नत मस्तिष्क आयु अंतर को ऐसी स्थितियों से जोड़ा है

न्यूरोडेजेनेरेटिव रोग (जैसे अल्जाइमर)

मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति (जैसे, स्किज़ोफ्रेनिया, प्रमुख अवसाद और चिंता) इसे मस्तिष्क के लिए थर्मोमीटर की तरह देखा जाता हैः यह एक सरल, एकल मीट्रिक देता है जो संकेत दे सकता है कि कुछ गलत है, भले ही वह सटीक कारण नहीं बता सके। मस्तिष्क परिपक्वता और विकास यह विचार स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर भी लागू होता है - परिपक्वता। यह एक गलत धारणा है कि मस्तिष्क 18 या 21 वर्ष की आयु में पूर्ण परिपक्वता तक ₹चला जाता है।₹

विविध समयरेखाः मस्तिष्क के विभिन्न भाग अलग-अलग दरों पर परिपक्व होते हैं, और यह प्रक्रिया 20 के दशक के मध्य तक जारी रहती है, तथा कुछ मायनों में जीवन भर भी।

फ्रंटल लोबः मुख्य क्षेत्र, विशेष रूप से प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (योजना, आवेग नियंत्रण और निर्णय लेने जैसे उच्च-स्तरीय कार्यों के लिए जिम्मेदार) अंतिम में से हैं। मस्तिष्क सभी अपनी उम्र विकसित नहीं करते यह बाद की परिपक्वता किशोरों और युवा वयस्कों में अक्सर देखे जाने वाले जोखिम लेने या भावनात्मक निर्णय लेने के कुछ कारण बता सकती है।

प्रभावः आनुवंशिकी, प्रारंभिक जीवन के अनुभव, तनाव, आहार और जीवन शैली सभी एक व्यक्ति की मस्तिष्क विकास और उम्र बढ़ने की अनूठी गति और ट्रैक में योगदान देते हैं। संक्षेप में, आपके मस्तिष्क की अपनी एक कहानी है जो आपकी ड्राइविंग लाइसेंस पर नंबर से पूरी तरह मेल नहीं खा सकती। क्या मस्तिष्क आयु की अवधारणा - विकास में या बाद के

आँखों से गिरते आँसू किताबों के सफ़्हों को भिगो रहे थे,

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा मध्य प्रदेश

खिड़कियों पर बूँदें बज रही थीं और दिल की धड़कनों में कोई अनजाना नाम गूँज रहा था, उसी वक़्त आलिया नदीम के सीने में एक ख़्वाब ने दस्तक दी थी, फ़ारूक़ अहमद की शफ़्फ़ाक़ मुस्कान और उसकी आवाज़ का सुकून, वो हर रोज़ की मुलाक़ातें, वो अदबी बातें, सब धीरे-धीरे इश्क़ में ढल रहा था, नज़रें उठतीं और फिर झुक जातीं, मगर उन झुकी नज़रों में तसल्ली से ज़्यादा तड़प रहती थी, हर बारिश में आलिया सजदे की दुआओं में वही नाम दोहरातीं, और हर अश्क़ काग़ज़ पर गिरकर एक नई तहरीर रचता।मगर वही बरसात नबीला अशरफ़ के दिल की किताब में भी इश्क़ लिख रही थी, मासूम आँखें, अनसुनी उम्र की ख़्वाहिशें, हर सवाल के जवाब में उसे लगता कि उस्ताद की आवाज़ की गर्माहट दरअसल उसके सीने को छू रही है, इश्क़ जवान हो रहा था, बेगुनाही के साथ मगर तूफ़ान की तरह, और ख़्वाब वो ताना-बाना बुन रहे थे जिसके धागे कभी हक़ीक़त से न जुड़ पाएंगे।अंदर ही अंदर दो-दो जज़्बात एक ही शख़्स के लिए सज रहे थे, एक औरत का ख़ामोश, गहरा इश्क़ और एक लड़की का मासूम, अनकहा मोहब्बत, मगर हक़ीक़त का आइना था हुस्ना बानो, वो बीवी जो समझ रही थी कि उसके शौहर की निगाहें किसी और के नाम मर चुकी हैं, उसकी रातें बेचैनी से भरी थीं, वो औरत जो अपने शौहर की हर सरगोशी को पढ़ लेती थी, और वो दिन जब उसने अलमारी से डायरी निकाली और देखा कि हर सफ़्हे पर किसी और का ज़िक्र लिखा है, वहाँ आलिया की हया बसी थी, नबीला की अदाएँ दर्ज थीं और उसके शौहर का दिल दोनों ख़्वाबों में उलझा हुआ था, उस डायरी ने उसकी दुनिया तहस-नहस कर दी।ग़ुस्से से हुस्ना बानो घर छोड़ गईं, मायके चली गईं, और उस कमरे में सन्नाटा पसर गया जहाँ कभी मोहब्बत का रक़्स होता था, अब वहाँ सिर्फ़ ख़ालीपन गूँज रहा था, फ़ारूक़ की रातें जलती बुझती बत्तियों और बेआवाज़ आँसुओं में कट रही थीं, और उसके दिल में सवाल उठ रहा था, क्या दो ख़्वाब एक हक़ीक़त बन सकते हैं?आलिया अपने कमरे में बैठी सोच रही थी, फ़ारूक़, मेरी मोहब्बत है, मगर मंज़िल उफ़,,,,, मैं अब सिर्फ़ सजदों में रह जाऊँगी, मेरी दुआ और मेरा इश्क़ वही होगा, मगर मेरे नाम का हिस्सा तुम्हारी ज़िंदगी में कभी नहीं होगा, उसकी आँखों से गिरते आँसू किताबों के सफ़्हों को भिगो रहे थे।नबीला रात के अंधेरे में खिड़की से आसमान तक रही थी और सोच रही थी—उस्ताद, मैंने तुम्हें आदर्श माना और फिर ख़ुदा जाने कब दिल ने तुम्हें अपना बना लिया, मगर मेरी जवानी का पहला ख़्वाब भी हक़ीक़त की जंजीरों में टूट गया, अब ये मोहब्बत सिर्फ़ तन्हाई की सदाओं में जीती रहेगी।फ़ारूक़ ख़ुद से कह रहा था—आलिया की ख़ामोशी, नबीला की मासूमियत और हुस्ना की शिद्दत, सब मेरे सामने आईनाज़ार हो गए, मगर मेरी हक़ीक़त तो हुस्ना है, वो औरत जो मेरे बच्चों की माँ है, मेरा घर है, मेरा आसरा, ख़्वाब कभी सच नहीं होते, ख़्वाब दिल के लिए हैं, हक़ीक़त रूह को बचाने के लिए।रात ढली और उसने डायरी खोली, हर सफ़्हे से मोहब्बत का नूर झर रहा था, मगर अब ये नूर उसकी ज़िंदगी को अंधेरा ही दे रहा था, उसने मोमबत्ती उठाई और एक-एक पन्ना आग में डाल दिया, काग़ज़ जलने की ख़ुशबू कमरे में फैल गई, मोहब्बत राख बन गई, और उसी वक़्त दरवाज़े से हुस्ना दाख़िल हुईं, उनकी आँखों में अभी भी दर्द था मगर चेहरे पर अब माफ़ कर देने की थकान थी, उन्होंने देखा, फ़ारूक़ ने आग के हवाले कर दिया सब कुछ जो उनका दिल तोड़ रहा था।उन्होंने धीरे से उसका हाथ थामा, और दोनों के चहरों पर पहली बार एक तसल्ली भरी मुस्कुराहट खिल गई, आलिया उस रात जगकर सजदे कर रही थीं, नबीला सोते-सोते रो कर थक गई थी, हर दिल टूटा हुआ था, हर ख़्वाब झुलस चुका था, मगर हक़ीक़त उन राखों से एक नई सुबह खोज रही थी।बरसात थम चुकी थी, आसमान साफ़ था, मगर तीन दिल अब भी अपने-अपने साये में बरस रहे थे, और इस दास्तान का सच बस इतना था—इश्क़ हमेशा मंज़िल तक नहीं पहुँचता, कभी-कभी वो राख बनकर भी रूह को रोशन कर देता है।

आपदाएँ संयोग नहीं, धरती का संकेत हैं [धरती का मौन विद्रोह: प्रकृति की अंतिम चेतावनी]

धरती की चुप्पी कभी साधारण नहीं होती। उसका मौन एक गहरी, अनकही कथा है, जो पेड़ों की पत्तियों, नदियों की लहरों और हवा के झोंकों में बसी है। लेकिन हम इंसानों ने इस ख़ामोशी को कमजोरी समझा। हमने सोचा कि यह नीला-हरा ग्रह हमारी हर भूल, हर लालच और हर अनियंत्रित इच्छा को चुपचाप सह लेगा। हमने जंगलों को काट डाला, नदियों को बाँधों में जकड़ा और हवा को ज़हर से भर दिया, यह मानकर कि धरती की सहनशीलता असीम है। मगर अब वह चुप्पी टूट चुकी है। धरती का मौन अब विद्रोह बन गया है। बाढ़ की उफनती लहरें, तूफानों की गर्जना और सूखे की चटकती ज़मीन—ये उसकी चेतावनी की पुकार हैं। यह क्रोध नहीं, बल्कि आत्मरक्षा का आह्वान है।

जलवायु परिवर्तन को हम अक्सर ठंडे आँकड़ों और जटिल ग्राफों में देखते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है, समुद्र का स्तर हर साल मिलीमीटरों में ऊपर उठ रहा है, और कार्बन उत्सर्जन रिकॉर्ड तोड़ रहा है। लेकिन ये आँकड़े सतह को ही छूते हैं। इनके पीछे एक जीवंत ग्रह की साँसें हैं, जो अब रुक-रुक कर चल रही हैं। धरती कोई निर्जीव पत्थर नहीं; यह एक जीवित सत्ता है, जो हमारे हर प्रहार का जवाब दे रही है। हम उसके जंगलों को जलाते हैं, तो वह धुएँ भरे आकाश और भीषण गर्मी की लहरों से जवाब देती है। हम उसकी नदियों को गंदा करते हैं, तो वह बाढ़ और सूखे के दोहरे वार से अपनी पीड़ा व्यक्त करती है। यह उसका मौन विद्रोह है—शक्तिशाली, जो हमारी सभ्यता की नींव हिला सकता है।

हमारी सबसे बड़ी भूल यह थी कि हमने धरती को महज संसाधन माना। हमने सोचा कि उसकी मिट्टी, पानी और हवा सिर्फ हमारे उपयोग के लिए हैं। हमने शहरों को कंक्रीट के जंगल बनाया, नदियों को बाँधों में कैद किया और जंगलों को कारखानों की भेंट चढ़ा दिया। परिणाम सामने है। भारत में, २०२५ तक, हिमालय की बर्फ तेज़ी से पिघल रही है, जिससे गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों में अनियमितता बढ़ रही है। बिहार और असम में बाढ़ का कहर हर साल गहराता जा रहा है, तो राजस्थान और मराठवाड़ा सूखे की मार झेल रहे हैं। विश्व स्तर पर, अमेज़न के वर्षावन, जो कभी धरती के फेफड़े थे, अब आग की लपटों में सुलग रहे हैं। आर्कटिक की बर्फ, जो ग्रह के तापमान को संतुलित करती थी, तेज़ी से गायब हो रही है। ये सिर्फ "प्राकृतिक आपदाएँ" नहीं; ये धरती की वह चीख हैं, जिसे हमने अनसुना करने की भूल की।

धरती का विद्रोह अब हर महाद्वीप पर गूँज रहा है। २०२५ में, यूरोप की भीषण गर्मी की लहरों ने हजारों जिंदगियाँ छीनीं, दक्षिण एशिया में चक्रवातों ने तटीय इलाकों को तबाह किया, अफ्रीका में सूखा लाखों लोगों को भुखमरी के कगार पर ले आया, और ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग अब हर साल की कहानी बन चुकी है। ये घटनाएँ अलग-अलग नहीं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ी हैं, और इनका मूल हमारी वह जीवनशैली है, जो प्रकृति का शोषण करती है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की ताज़ा रिपोर्ट चेताती है कि यदि उत्सर्जन का यही स्तर रहा, तो २०३० तक वैश्विक तापमान २ डिग्री सेल्सियस की सीमा लाँघ जाएगा। समुद्र का स्तर 1 मीटर तक बढ़ेगा, और चरम मौसमी घटनाएँ रोज़मर्रा की हकीकत बन जाएँगी। यह आँकड़ा नहीं, धरती की हताश पुकार है, जो हमें अपनी भूल सुधारने का आखिरी मौका दे रही है।

लेकिन दुखद यह है कि हम इन चेतावनियों को गंभीरता से नहीं ले रहे। बाढ़ आती है, तो हम राहत सामग्री भेजते हैं; तूफान आता है, तो पुनर्निर्माण की योजनाएँ बनाते हैं। मगर हम भूल जाते हैं कि ये आपदाएँ अस्थायी संकट नहीं, बल्कि धरती का दीर्घकालिक संदेश हैं। हमारी सभ्यता ने प्रकृति को सिर्फ़ "संसाधन" मानकर उससे दूरी बना ली। हमने विकास को केवल आर्थिक तरक्की और तकनीकी उन्नति से मापा, यह भूलकर कि इसकी कीमत धरती चुका रही है। भारत में, 70% से ज़्यादा मिट्टी अपनी उर्वरता खो चुकी है, और ३0% से अधिक भूमि बंजर होने की कगार पर है। यह आँकड़े नहीं, उस धरती की चीख हैं, जिसे हमने लालच की भेंट चढ़ाया।

धरती को शांत करने के लिए तकनीकी उपाय काफी नहीं; हमें सोच में क्रांति लानी होगी। इलेक्ट्रिक वाहन, सौर ऊर्जा, और कार्बन टैक्स ज़रूरी हैं, पर अधूरे। जब तक हम यह नहीं समझेंगे कि हम प्रकृति के हिस्सा हैं, उसके मालिक नहीं, यह विद्रोह रुकेगा नहीं। जंगलों को सिर्फ़ "कार्बन सिंक" नहीं, जीवन का आधार मानना होगा। नदियाँ केवल जलस्रोत नहीं, जीवन की धारा हैं। हमें अपनी जीवनशैली बदलनी होगी—प्लास्टिक कम करना, पानी की बर्बादी रोकना, और स्थानीय संसाधनों का सम्मान करना होगा। यह धरती की पुकार को सुनने और उसका जवाब देने का वक्त है। धरती बदला नहीं ले रही; वह केवल संतुलन की कोशिश में है। लेकिन इस संतुलन की कीमत भारी है। हमारे शहर बाढ़ में डूब रहे हैं, फसलें बर्बाद हो रही हैं, और हवा दमघोंटू बन चुकी है। यह भविष्य की आशंका नहीं, आज की सच्चाई है। भारत में, दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में वायु प्रदूषण रोज़मर्रा की बात हो गई है, और ग्रामीण इलाकों में सूखे ने किसानों को आत्महत्या की कगार पर ला खड़ा किया है। यह सिर्फ़ भारत की कहानी नहीं—यह पूरी मानवता का दर्द है।

सवाल अब यह नहीं कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है या नहीं। सवाल यह है कि क्या हम धरती की इस विद्रोही पुकार को सुनने को तैयार हैं? क्या हम अपनी सुविधाएँ और लालच त्यागकर टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं? बाढ़ में डूबते गाँव, सूखे में चटकी मिट्टी, और तूफानों की गर्जना हमें बार-बार याद दिला रही है कि हम इस ग्रह के मालिक नहीं, मेहमान हैं। धरती का यह मौन विद्रोह हमें झकझोर रहा है, हमें जगा रहा है।

अब वक्त है कि हम धरती को एक जीवित सत्ता के रूप में देखें और उसका सम्मान करें। पेड़ लगाना सिर्फ़ अभियान नहीं, हमारी संस्कृति का हिस्सा बनना चाहिए। पानी की बचत संकट की घड़ी की मजबूरी नहीं, रोज़ की आदत होनी चाहिए। ऊर्जा की खपत कम करना सिर्फ़ बिल बचाने का तरीका नहीं, बल्कि धरती के प्रति हमारा कर्तव्य है। धरती ने हमें बार-बार सहा, लेकिन अब उसकी चुप्पी टूट चुकी है। यह मौन विद्रोह तभी थमेगा, जब हम अपनी सोच और व्यवहार बदलेंगे। यह ग्रह हमें जीवन देता है, और अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि उसकी पुकार सुनें। अगर हम ऐसा नहीं करते, तो एक दिन यह धरती हमें अपने आश्रय से बेदखल कर देगी। तब हमारी सारी प्रगति, तकनीक, और संपत्ति बेकार हो जाएगी। क्योंकि बिना धरती के, हमारा कोई वजूद नहीं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सत्याग्रह से स्टार्टअप तक : नई पीढ़ी के लिए गांधी जी का अमर मंत्र

भारत का इतिहास तब तक अधूरा है जब तक उसमें महात्मा गांधी का नाम न लिया जाए। 2 अक्टूबर 1869 को जन्मे मोहनदास करमचंद गांधी केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि सत्य, अहिंसा और नैतिकता की मूर्त प्रतिमा थे। उन्होंने न केवल भारत को आज़ादी दिलाने का मार्ग दिखाया बल्कि पूरी दुनिया को यह सिखाया कि असली शक्ति हिंसा या हथियारों में नहीं, बल्कि सत्य और नैतिकता में निहित है। आज 2025 में जब हम उनकी 156वीं जयंती मना रहे हैं, तो प्रश्न यह उठता है कि क्या हम उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन और समाज में उतार पा रहे हैं?

आज की दुनिया युद्ध, हिंसा, पर्यावरण संकट, राजनीतिक अस्थिरता, तकनीकी दुरुपयोग और नैतिक पतन से जूझ रही है। ऐसे में गांधी जी की शिक्षाएँ पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठती हैं। वे केवल अतीत के 'राष्ट्रपिता' नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शक भी हैं।

सत्य : हर युग की जरूरत

गांधी जी ने कहा था - "सत्य ही ईश्वर है।" उनके लिए सत्य केवल व्यक्तिगत आचरण का हिस्सा नहीं था, बल्कि सार्वजनिक जीवन की भी आत्मा था। आज के समय में जब झूठी खबरें, भ्रामक सूचनाएँ और सोशल मीडिया पर फेक नैरेटिव समाज को विभाजित कर रहे हैं, तब सत्य को पहचानने और उसके साथ खड़े होने की आवश्यकता और बढ़ गई है।

नई पीढ़ी को यह समझना होगा कि कैरियर की दौड़, सोशल मीडिया की चमक और त्वरित सफलता की चाहत के बीच अगर सत्य से समझौता किया गया, तो लंबी अवधि में उसका नुकसान ही होगा। गांधी जी का जीवन यह सिखाता है कि असफलता भी तब स्वीकार्य है जब वह सत्य पर आधारित हो।

अहिंसा : वैश्विक संकट का समाधान

गांधी जी का सबसे बड़ा हथियार था - अहिंसा। उनके लिए अहिंसा केवल युद्ध न करना नहीं था, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी को भी आहत न करना था। आज दुनिया युद्धों के खतरे, धार्मिक कट्टरता और बढ़ती असहिष्णुता का सामना कर रही है।

परिवार से लेकर राष्ट्र तक, संवाद की जगह टकराव ने ले ली है। ऐसे में गांधी की अहिंसा का मार्ग ही वास्तविक समाधान है। नई पीढ़ी को यह सीखना होगा कि मतभेद विचारों का हो सकता है, लेकिन उसके कारण हिंसा और नफरत का जन्म नहीं होना चाहिए।

स्वराज और स्वावलंबन

गांधी जी ने स्वराज की व्याख्या केवल अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता के रूप में नहीं की थी, बल्कि आत्म-नियंत्रण और आत्मनिर्भरता के रूप में की थी। आज भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है, लेकिन क्या हम सचमुच आत्मनिर्भर हैं?

तकनीक और ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे अभियानों का सपना तभी साकार होगा जब युवा गांधी के स्वावलंबन को आत्मसात करेंगे। केवल रोजगार पाने की बजाय रोजगार देने वाले बनें। यह गांधी के 'चरखे से उद्योग' की भावना का आधुनिक रूप है।

ग्राम स्वराज और पर्यावरण संतुलन

गांधी जी का सपना था -"भारत का भविष्य उसके गाँवों में बसता है।" वे मानते थे कि यदि गाँव आत्मनिर्भर होंगे तो पूरा राष्ट्र मजबूत होगा।

आज जब हम शहरीकरण, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और असमान विकास से परेशान हैं, तब गांधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा समाधान प्रस्तुत करती है। जैविक खेती, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता - ये सब गांधी जी की ही शिक्षाओं से उपजे विचार हैं।

नई पीढ़ी को चाहिए कि वे तकनीक का उपयोग केवल शहरी जीवन सुधारने में न करें, बल्कि गाँव और प्रकृति को संवारने में भी करें। यही सतत विकास का असली अर्थ है।

सत्याग्रह : अन्याय के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष

गांधी जी का सत्याग्रह आंदोलन केवल राजनीतिक हथियार नहीं था, बल्कि अन्याय के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष का प्रतीक था। आज जब समाज में भ्रष्टाचार, असमानता, लैंगिक भेदभाव और जातीय विषमताएँ मौजूद हैं, तो सत्याग्रह की भावना हमें प्रेरित कर सकती है कि हम बिना हिंसा के इन अन्यायों का डटकर मुकाबला करें।

नई पीढ़ी सोशल मीडिया और तकनीकी साधनों का उपयोग सकारात्मक जनजागरूकता फैलाने में करे, न कि केवल आत्मप्रचार में। डिजिटल सत्याग्रह आज के समय का सबसे बड़ा हथियार हो सकता है।

नैतिकता और सरल जीवन

गांधी जी का जीवन सादगी का प्रतीक था। एक धोती और चादर में भी वे पूरी दुनिया के सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व बन गए। वे हमें सिखाते हैं कि असली ताकत भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि चरित्र और नैतिकता में होती है।

आज उपभोक्तावाद और दिखावे की होड़ ने युवाओं को भ्रमित कर दिया है। नई पीढ़ी को गांधी से यह सीखना चाहिए कि भव्यता से अधिक महत्वपूर्ण है सादगी, और शक्ति का असली स्रोत है आत्मसंयम।

धार्मिक सहिष्णुता और मानवता

गांधी जी ने हमेशा कहा कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाते हैं। वे गीता पढ़ते थे तो कुरान और बाइबिल का भी सम्मान करते थे। आज जब समाज में धर्म के नाम पर विभाजन और कटुता बढ़ रही है, तब गांधी का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है।

नई पीढ़ी को यह समझना होगा कि इंसान पहले है और धर्म बाद में। सहिष्णुता, परस्पर सम्मान और करुणा ही समाज को जोड़ सकती है।

आज के समय में गांधी का मार्ग

आज भारत और विश्व जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं –

जलवायु परिवर्तन

युद्ध और आतंकवाद

आर्थिक असमानता

तकनीक का दुरुपयोग (एआई, सोशल मीडिया आदि)

मानसिक स्वास्थ्य संकट

इन सभी समस्याओं का उत्तर गांधी की शिक्षाओं में छिपा है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए उनका 'प्रकृति के साथ संतुलन' का संदेश।

शांति के लिए अहिंसा।

आर्थिक न्याय के लिए स्वावलंबन।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए सादगी और आत्मसंयम।

और नैतिक पतन के विरुद्ध सत्य की खोज।

महात्मा गांधी कोई बीते युग के संत नहीं हैं जिन्हें केवल प्रतिमा बनाकर पूजा जाए। वे एक जीवित विचारधारा हैं, जो हर पीढ़ी को राह दिखाती है। 2025 की नई पीढ़ी के लिए सबसे बड़ा प्रश्न यही है – क्या हम गांधी को केवल 'गांधी जयंती' तक सीमित रख देंगे, या उनके विचारों को अपने जीवन और समाज में उतारेंगे?

गांधी जी ने कहा था – "भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज आप क्या करते हैं।" यदि आज की युवा पीढ़ी सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन और नैतिकता को अपने जीवन का आधार बनाए, तो न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया एक बेहतर स्थान बन सकती है।

इस गांधी जयंती पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम गांधी को केवल इतिहास की किताबों में नहीं, बल्कि अपने आचरण और विचारों में जीवित रखेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उमेश कुमार साहू

जेन - जी के बहाने जेन - पी की सक्रियता

डॉ वेद प्रकाश

विगत दिनों नेपाल में सत्ता पलट को लेकर हुई हिंसा और उपद्रव के तुरंत बाद भारत में विपक्ष के बड़े नेता एवं कुछ अन्य लोग सक्रिय हो गए हैं। भारत के लेह और कुछ अन्य स्थानों पर हिंसात्मक प्रदर्शन कुछ लोगों द्वारा देश को अस्थिर करने के प्रयासों की ओर संकेत कर रहे हैं। इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है।

नेपाल में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और अव्यवस्थाओं से परेशान होकर वहां की जेन-जी यानी युवा शक्ति ने आंदोलन किया और नेपाल में सत्ता पलट कर दिया। जिसे लेकर सभी देशों में चर्चा और मिली जुली प्रतिक्रियाएं चल रही है। जेन-जी के लिए कहा जाता है कि यह लगभग वर्ष 1995 से 2010 के बीच जन्मी ऐसी पीढ़ी है जो टेक्नोलॉजी फ्रेंडली होने के साथ-साथ डिजिटल उपकरणों के प्रयोग और सोशल मीडिया में सक्रिय रहती है। सर्वविदित है कि वर्ष 1990 का दशक वैश्विक पटल पर भूमंडलीकरण, बाजारवाद और तकनीक के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन और नए इंफ्रास्ट्रक्चर का समय था। परिणामत उस दौर में जन्मे बच्चे उस तकनीक से परिचित होकर विकासक्रम में आगे बढ़े।

भारतवर्ष भिन्न-भिन्न प्रकार की विविधताओं से संपन्न बड़ा देश है। यहां परंपरा और आधुनिकता, अध्यात्म, ज्ञान- विज्ञान और तकनीक सभी एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। यहां कोई एक विचार अथवा तकनीक एकाएक सभी को समाप्त करके अपना वर्चस्व नहीं बना सकते। भारत का जेन-जी आज 25 से 30 वर्ष की आयु वर्ग में है। इस जेन- जी के भरोसे, संकल्प और भागीदारी से ही देश विकसित भारत का संकल्प लेकर चल रहा है। यह जेन-जी ही भारत में नए-नए स्टार्टअप, मेक इन इंडिया, मेड इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत को आकर दे रहा है। यह जेन- जी ही भारत की ताकत है। इसमें सृजनशीलता है, इसमें संघर्ष हैं, सपने हैं, संकल्प हैं और उन्हें पूरा करने के लिए पुरुषार्थ भी है। ये नए भारत की नींव के पत्थर हैं, जिनके लिए राष्ट्र प्रथम है। ये जितना ज्ञान-विज्ञान और तकनीक पर भरोसा करते हैं उससे कहीं अधिक भारत की ज्ञान परंपरा, संत- महापुरुष परंपरा एवं सनातन परंपरा पर इनका विश्वास है। भारत का जेन-जी न केवल अपने देश की अपितु विश्व के विभिन्न देशों में वहां की विभिन्न व्यवस्थाओं की धुरी बनता जा रहा है। आज भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन चुका है। आज बहुत से युवा तेजी से विश्व के बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम में अपनी भागीदारी कर रहे हैं। विज्ञान के क्षेत्र में नए-नए आविष्कार और उपलब्धियां हासिल करने वाली यह जेन- जी पीढ़ी ही है। विगत में मालदीव, म्यांमार, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश एवं नेपाल में भिन्न-भिन्न रूपों में हिंसक आंदोलन हुए। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पड़ोसी देशों में हुए किसी भी घटनाक्रम का प्रभाव अपने देश पर पड़ना भी स्वाभाविक है। सरकार सतर्क रहते हुए अपना काम कर रही है।

नेपाल के घटनाक्रम के बाद से भारत की जेन-पी भी सक्रिय है। जेन-पी से अभिप्राय भारत की राजनीति में ऐसी जेनरेशन अथवा पीढ़ी से है जो परिवारवाद से जन्मी है और उसी के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। भारत भाव से दूर इनमें संघर्ष और विचार का अभाव है। यदि है भी तो केवल निहित स्वार्थों के लिए है। वर्ष 2014 से ये सत्ता से बाहर हैं। इसलिए जेन-पी देश को कमजोर करने में सक्रिय रहते हैं। वैमनस्य फैलाना इनका धर्म बन चुका है। राष्ट्र प्रथम के स्थान पर इनके लिए स्वार्थ प्रथम है। केवल विरोध और आलोचना के सहारे जेन-पी आक्रोश फैलाने का काम करते रहे हैं। पड़ोसी देशों में जैसे-जैसे हिंसक आंदोलन होते हैं वैसे-वैसे ये सक्रिय रहते हैं। इनका पूरा इकोसिस्टम है जो लोकतंत्र, संविधान और जनहितों को खतरे में बताता है। ये एक सुर में बोलते हैं- भ्रष्टाचार बढ़ गया है, आम आदमी परेशान है, बेरोजगारों में गुस्सा है, चुनाव आयोग, न्यायालय और ईडी जैसी संस्थाएं सरकार के इशारों पर काम कर रही हैं। ईवीएम में गड़बड़ी के जरिए चुनाव जीते जा रहे हैं। सरकार की योजनाएं पूंजीपतियों के लिए हैं। सरकार वोट चोरी कर रही है आदि नॉरेटिव चलाकर ये जन आक्रोश पैदा करने का प्रयास करते हैं। कृषि कानून व सीएए जैसे महत्वपूर्ण कानूनों के विरोध में भी जेन-पी ने पूरी सक्रियता से वैमनस्य फैलाने और सत्ता पलट की योजनाएं बनाई। उस समय ट्रैक्टर और गाड़ियां लेकर प्रदर्शनकारियों का लालकिले में घुसना और वहां उत्पात करना इस योजना की बड़ी कड़ी कहे जा सकते हैं। इन्हें न तो लोकतंत्र में विश्वास है और न ही भारत के संविधान में। ये संसद में बहस नहीं करते, संसद में बने कानून को गलत बताते हैं और संसद के बाहर सामान्य लोगों को भ्रमित करते हैं। विगत दिनों समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारत में भी नेपाल जैसे हालात होने की भविष्यवाणी की है। उन्होंने कहा कि- अगर वोटों की डकैती नहीं रोकी गई तो यहां भी जनता सड़क पर उतरकर न्याय करेगी, जैसा कि पड़ोसी देश में देखने को मिला। इसी प्रकार अपने एक ट्वीट में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि- देश के युवा लोकतंत्र को बचाएंगे,देश के छात्र संविधान को बचाएंगे, देश की जेन- जी लोकतंत्र की रक्षा करेंगे और वोट चोरी को रोकेंगे, मैं उनके साथ हमेशा खड़ा हूं। इसके साथ ही वे उत्तराखंड में भर्ती परीक्षा में पेपर लीक से लेकर देरी के खिलाफ युवाओं के मुखर हो रहे आंदोलन में उनके साथ खड़ा होने का ऐलान भी कर चुके हैं। कांग्रेस वर्किंग कमेटी भी वोट चोरी और बेरोजगारी को मुद्दा बनाकर आंदोलन का निर्णय कर चुकी है। क्या इस प्रकार की टिप्पणियां व निर्णय हिंसक प्रदर्शनों के लिए उकसाने वाले नहीं हैं? हाल ही में इत्तेहाद ए मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकीर ने मुसलमानों के उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए कहा कि- मुसलमानों को सड़कों पर उतरने को मजबूर न करें। इसके दो दिन बाद ही मौलाना तौकीर के आवाह्न पर बरेली में जुटी भीड़ ने जबरन जुलूस निकालने की जिद में पुलिस पर पथराव व फायरिंग कर दी। सड़क पर खड़े वाहनों व दुकानों में तोड़फोड़ की। कुल मिलाकर कुछ लोगों को भ्रमित करके ऊपद्रव और अशांति फैलाई जा रही है। दूसरी ओर कांग्रेस सांसद इमरान मसूद भी आई लव मोहम्मद के बहाने सहारनपुर और रामपुर आदि क्षेत्रों में सक्रिय हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री भी बंगालियों के उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए लगातार उकसावे वाले भाषण दे रही हैं। हाल ही की लेह हिंसा और उपद्रव भी व्यवस्थित योजना के परिणाम दिखाई दे रहे हैं। समाचारों के अनुसार इस घटनाक्रम में भी सोनम वांगचुक का भड़काऊ भाषण और विदेशी फंडिंग सामने आ रही है। इन सभी बातों से ऐसा लगता है कि जेन-पी देश को अस्थिर करने वाली ताकतों को बढ़ावा देकर सत्ता हासिल करना चाहता है। एक ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आर्थिक विकास को गति देने एवं जन-जन में आत्मनिर्भरता और स्वदेशी से जुड़कर आगे बढ़ने का संकल्प जगा रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर जेन- पी गरीबी, बेरोजगारी और अव्यवस्थाओं के नारों के बहाने युवाओं को उकसाकर अपने स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्रयासरत है।

भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था बहुत मजबूत है। हाल ही में भारत के प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि- हमें अपने संविधान पर गर्व है। भारत की जेन- जी आर्थिक महाशक्ति बनते भारत के लिए संकल्पबद्ध होकर आगे बढ़ रही है। वह सैन्य महाशक्ति बनते भारत को देख रही है। उसी के विजन और भागीदारी से इंफ्रास्ट्रक्चर और अन्य अनेक क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। आज सामान्य व्यक्ति भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच स्वदेशी के महत्व को समझ रहा है। विभिन्न योजनाएं और जीएसटी में सुधार किसानों, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के जीवन को बदल रहे हैं।

मन-मस्तिष्क के रावण का वध कब

दशहरा यानी विजय पर्व। दशहरा यानी न्याय और नैतिकता का पर्व। दशहरा यानी असत्य पर सत्य की विजय और शक्ति का पर्व। भगवान श्रीराम ने इस दिन राक्षसराज रावण का वध किया था। तब ही से प्रतिवर्ष प्रतीकात्मक रूप से रावण का दहन किया जाता है। यह पर्व हमें संदेश देता है कि अन्याय और अनैतिकता का दमन हर रूप में सुनिश्चित है। चाहे दुनिया भर की शक्ति और सिद्धियों से आप संपन्न हों लेकिन सामाजिक गरिमा के विरुद्ध किए गए आचरण से आपका विनाश तय है।

भगवान राम ने अवतार धारण किया था। मानव जीवन के हर सुख-दुख को उन्होंने आत्मसात किया था। जब वे ईश्वरीय अवतार होकर जीवन-संघर्ष से नहीं बच सके तो हम सामान्य मनुष्य भला इन विषमताओं से कैसे बच सकते हैं? श्रीराम का संपूर्ण जीवन हमें आदर्श और मर्यादा की सीख देता है। हर मनुष्य के जीवन में कष्ट और खुशी आते हैं। लेकिन उनसे निराश होकर जीवन को समाप्त कर लेना समझदारी नहीं है। अपितु जीवन को ईश्वरीय प्रसाद समझ कर कृतज्ञ भाव से जीना ही मानव जीवन की सार्थकता है। जहाँ भी जीवन है, वह अमृत के कारण है। चाहे वह दशरथ पुत्र का जीवन हो या दशानन का जीवन। यदि संसार सनातन दृष्टि से एक लीला है तो रावण की भूमिका भी किसी महती उद्देश्य से ही लिखी गई होगी। सामी दृष्टि में एक साथ दो साम्राज्य स्वीकार किए गए हैं, ईश्वर का साम्राज्य और शैतान का साम्राज्य। परंतु सनातनी परंपरा में एक ही साम्राज्य है और वह है धर्म का साम्राज्य। धर्म वह है जो धारण करता है, जो आधार है जीवन, अस्तित्व और अमृत का। हम जानते हैं कि रावण की नाभि में अमृत है। जब तक नाभि में तीर नहीं मारा जाता, रावण नहीं मरेगा।

प्रश्न यह कि आज का रावण कौन? हजार बरस की गुलामी ने हमें मानसिक रूप से वहाँ ले जाकर छोड़ा है जहाँ हम अपने पुरखों की पूजा तो करते हैं पर उनसे प्रेरणा नहीं ले सकते। हम उनसे अपनापन तो महसूस करते हैं पर उनके प्रयोगों का महत्व नहीं समझते। रामकृष्ण परमहंस, अरविन्द, बुद्ध, रामानुज, चरक सुश्रुत, आर्यभट्ट आदि सनातन के प्रेरणा पुंज हैं। इनके आलोक में हमें पश्चिम से ज्ञान, विज्ञान या आधुनिकता सीखने की जरूरत नहीं है। सनातन परंपरा पुरानी कब पड़ती है? सनातन तो पुनर्नवा है।

रामायण और महाभारत में बहुत कुछ प्रतीकात्मक भाषा में लिखा गया है। ये ग्रंथ यूरोपीय अर्थ में मात्र ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं हैं। सनातन परंपरा में कालजयी शास्त्रों की ही रचना होती है। शास्त्रों की भाषा प्रतीकों की कूट भाषा होती है। इनको पढ़ने की कला और तकनीक गुरु-शिष्य परंपरा को संस्थागत आधार देती है। हम रावण से क्यों हारते हैं? रावण कौन है? वह कैसे मरेगा? यह सनातन प्रश्न है। पर इसका सनातन उत्तर हम भूल चुके हैं। इसका ऐतिहासिक उत्तर भी हम नहीं देते।

यह दुख का विषय है कि आज की फास्ट फूड कल्चर वाली पीढ़ी के लिए त्योहार भी मात्र मनोरंजन का साधन रह गए हैं। पर्व उन्हें संस्कृति के प्रति गहरा स्नेह और सम्मान भाव नहीं देते बल्कि पिज्जा और बर्गर की तरह आकर्षित करते हैं। जिसे जितनी जल्दी और जितना ज्यादा खाया जा सके उतना बेहतर! यही वजह है कि आस्था और पवित्रता से सराबोर रहने वाले गरबा-पंडालों में रोशनी और फूलों के स्थान पर '72 घंटे पिल्स' के होर्डिंग्स सजे हुए हैं। आखिर क्या संदेश देना चाहते हैं ये आयोजक हमारी युवा पीढ़ी को? कहीं कोई बंधन नहीं, कहीं कोई गरिमा नहीं। कोई शर्म, कोई सम्मान नहीं? इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में अपसंस्कृति शहर-गांव का अंतर मिटा चुकी है। हर तरह की गंदगी महानगरों से छोटे शहर से होते हुए गली-मोहल्लों तक आ पहुंची है। और विडंबना देखिए कि इन नौ दिनों के बाद आने वाले दशहरे की कथा यह है कि माँ सीता ने अपने पवित्र अस्तित्व को रावण जैसे परम शक्तिशाली व्यक्ति से मात्र एक तिनके और दृढ़ चरित्र के माध्यम से बचाए रखा। भगवान राम ने दुराचारी रावण का अंत किया और पुन: सीता को प्राप्त किया। उस नारी में जिसने अपने स्त्रीत्व की रक्षा इतने आत्मविश्वास से की, उसमें कितना तेज, कितनी आस्था, कितना विश्वास अपनी संस्कृति में होगा। हम क्या दे रहे हैं आज की अनभिज्ञ पीढ़ी को? हमने रामायण के भव्य धारावाहिक तो टेलीविजन पर परोस दिए लेकिन उन पावन कथाओं में वर्णित ओजस्वी भाव और संकल्प शक्ति क्यों नहीं पहुँचा पाए उन तक? लगभग हर चैनल के धारावाहिकों में नकली देव, पांखड़ी रटे-रटाए संवाद बोलते दिखाई दे जाएँगे लेकिन उनके आचरण में किसी प्रकार का कोई आदर्श दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता। साम्राज्य बनाना आसान होता है, गुरुकुल बनाना बहुत मुश्किल काम है। इतिहास लिखना आसान होता है, प्रतीकात्मक पुराण रचना कठिन है। तक्षशिला तो नष्ट हो गई पर वहाँ की पुस्तकें कहाँ गईं? लोकश्रुति है कि अरस्तु अपने साथ किताबें ले गया। उसकी नाव किताबों से इतनी भर गयी थी कि डूबने लगी। अरस्तु ने कहा किताबें जाना जरूरी है। ऐसा करता हूँ कि मैं ही डूब जाता हूँ ताकि मेरे शरीर के वजन जितनी किताबें सुरक्षित एथेंस पहुँच जाएं। सैनिकों ने इससे प्रेरणा ली और 7 सैनिकों ने किताबों की रक्षा के लिए सिंधु में छलांग लगा दी। एथेंस में किताबें पहुँची और अरस्तू पहुँचा। परंतु विश्वविजय का स्वप्न देखने वाला सिकन्दर वापस नहीं पहुंचा। रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गयी। राजा मर गया पर राजगुरु (अरस्तू) और सेनापति (सेल्युकश) जिंदा रहे। सेनापति बदलते रहे। सेनाएं बदलती रहीं। साम्राज्य बनते और बिगड़ते रहे। पर गुरुकुल चलता रहा। लेकिन आज न गुरु है और न ही गुरुकुल। चहुं ओर बदकारी, भ्रष्टाचार, बेशर्मी है। किसी को भी अपने अथवा अपनों के किये पर अपराध बोध नहीं है। लाख अन्ना आ जाए, स्थिति बदलने के आसार दिखाई नहीं देते।

वस्तुत: रावण हमारे मन में है। हमारे आसपास भी है। हमारी चेतना पर काबिज है। हमें रावण ने जीता नहीं है, अपितु हमने ही अपने मन-मस्तिष्क में अतिथि रूप में बसा रखा है। उसकी मायावी लंका की चमक-दमक ने हमें अंधा, लोभी बना दिया है। हम भी स्वयं की लंका बनाना चाहते हैं। लंकेश बनाना चाहते हैं। यही रावण की शक्ति का आधार है। यही उसकी नाभि का अमृत है। जब तक यह चाहत हममें कायम है, रावण मर नहीं सकता। जब तक उसका भ्रमजाल जिन्दा है, उससे प्रभावित मानसिकता जीवित हैं, उसे मारना असंभव है। हम चाहे कितने ही रावण जला लें लेकिन स्वयं को राम की तरह मर्यादित बनाये बिना कुसंस्कार के विराट रावण रोज पनपते रहेंगे। सीता के देश की कितनी ही सीता नामधारी देवियां सरेआम अपमानित होती रहेंगी। छल-छदम के ठेकेदार रावणों के खेमें में जश्न मनाते नजर आते रहेंगे। आज देश में कहाँ जलता है असली रावण? जलती हैं तो मासूम सीता। जब तक सही रावण को पहचान कर सही समय पर जलाया नहीं जाता, व्यर्थ है, शक्ति पूजा के नौ दिनों के बाद आने वाला दसवाँ दिन जिस पर माँ सीता की अस्मिता विजयी हुई थी, श्रीराम की दृढ़ मर्यादा ने आततायी का दंभ तोड़ा था। आज सौ फुट तक के रावणों की चर्चा होती है। दुष्ट के पुतलों की ऊँचाई की होड़ हो रही है जबकि राम जैसे चरित्र का कहीं अता-पता नहीं है। कब जलेंगें इस देश में असली रावण और कब जीतेगी सत्य, शील की सीता? क्या यह सच नहीं-

झूठ की जय-जयकार है, सच पर सौ इल्जाम।
रावण का कद बढ़ रहा, सिकुड़ रहे श्रीराम।।

डा. विनोद बब्बर

भगत सिंह: "इंकलाब से आज तक"

"क्रांति बंदूक की गोली से नहीं, बल्कि विचारों की ताकत से आती है।" भगत सिंह का जीवन केवल एक क्रांतिकारी गाथा नहीं, बल्कि एक विचारधारा का प्रतीक है। उनकी शहादत से पहले उनके विचारों की ताकत थी, और उनकी शहादत के बाद भी उनका प्रभाव अमर है। आज जब हम आर्थिक असमानता, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार से जूझ रहे हैं, तो भगत सिंह के विचार पहले से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उनका सपना केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति तक सीमित नहीं था; वे एक ऐसे भारत की कल्पना कर रहे थे, जहाँ सबको समान अधिकार और अवसर मिले।

--डॉ. सत्यवान सौरभ

23 मार्च 1931—लाहौर की जेल में तीन नौजवानों के कदमों की आहट सुनाई देती है। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव मुस्कुराते हुए फांसीघर की ओर बढ़ रहे हैं। मौत का कोई खौफ नहीं, बल्कि आंखों में एक चमक है—क्रांति की, बदलाव की। वे जानते हैं कि उनके विचार कभी नहीं मरेंगे। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई। लेकिन क्या सच में एक क्रांतिकारी मर सकता है? उनके विचार, उनकी सोच और उनकी प्रेरणा आज भी जीवंत हैं। वे केवल ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ नहीं लड़े, बल्कि एक ऐसे भारत के लिए संघर्ष किया, जो समानता, न्याय और स्वतंत्रता पर आधारित हो।

एक विचारक का जन्म

28 सितंबर 1907 को पंजाब के बंगा गांव (अब पाकिस्तान) में जन्मे भगत सिंह का बचपन किताबों और क्रांतिकारी चर्चाओं के बीच बीता। उनके परिवार में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। लेकिन 1919 का जलियांवाला बाग हत्याकांड उनके लिए किसी सदमे से कम नहीं था। उन्होंने महसूस किया कि आजादी केवल एक सपना नहीं, बल्कि संघर्ष की हकीकत बननी चाहिए। भगत सिंह बचपन से ही विद्रोही और जिज्ञासु थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919) ने उनके दिल को झकझोर दिया और यह तय कर दिया कि वे केवल दर्शक नहीं बने रह सकते।

क्रांति की राह पर पहला कदम

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से जुड़कर भगत सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ अपनी लड़ाई को दिशा दी। सॉन्डर्स हत्याकांड (1928) – लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने पुलिस अधिकारी जॉन सॉन्डर्स की हत्या की। यह एक क्रांतिकारी संदेश था कि अत्याचार का प्रतिरोध किया जाएगा। असेंबली बम कांड (1929) – भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने ब्रिटिश संसद में बम फेंका, लेकिन यह किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं था। वे गिरफ्तार होने के लिए आए थे ताकि अपने विचारों को अदालत के मंच से पूरे देश तक पहुंचा सकें। नका मकसद केवल हिंसा नहीं था। उनका इरादा लोगों को जगाना था, उन्हें यह दिखाना था कि आजादी केवल राजनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव भी होनी चाहिए।

जेल में विचारों की क्रांति

भगत सिंह केवल बंदूक के क्रांतिकारी नहीं थे, वे विचारों की ताकत में विश्वास रखते थे। जेल में रहते हुए उन्होंने 64 दिनों तक भूख हड़ताल की, जिससे ब्रिटिश सरकार को झुकने पर मजबूर होना पड़ा। उन्होंने कई लेख लिखे, जिनमें समाजवाद, धर्म और स्वतंत्रता पर उनके विचार साफ दिखाई देते हैं। उनका मानना था कि असली क्रांति तब होगी जब समाज में बदलाव की लहर आएगी। यह कहना गलत नहीं होगा कि भगत सिंह की असली ताकत उनकी कलम और उनकी सोच थी। जेल में रहते हुए उन्होंने कई लेख लिखे, जिनमें उन्होंने समाजवाद, धर्म, स्वतंत्रता और क्रांति के बारे में अपनी गहरी सोच व्यक्त की। उन्होंने कहा था – "अगर बहरों को सुनाना है, तो आवाज़ को बहुत ऊँचा करना होगा।"

शहादत और अमरता

23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई। लेकिन उनकी मौत केवल एक घटना नहीं थी, यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए ईंधन बन गई। उनकी विचारधारा, उनका साहस और उनकी क्रांतिकारी भावना आज भी जीवंत है। भगत सिंह की विचारधारा केवल ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ नहीं थी, बल्कि यह एक शोषणविहीन, न्यायसंगत और वैज्ञानिक सोच पर आधारित समाज की वकालत करती थी। उनकी विचारधारा आज भी हमें एक नई दिशा देने में सक्षम है।

आज के समय में भगत सिंह की विचारधारा की प्रासंगिकता

आज जब हम आर्थिक असमानता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सामाजिक भेदभाव और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, भगत सिंह की विचारधारा पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है। उन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के लिए लड़ाई लड़ी, बल्कि शोषणमुक्त और समानता पर आधारित समाज की कल्पना भी की। भगत सिंह का मानना था कि असली आज़ादी तभी मिलेगी जब जनता शिक्षित और जागरूक होगी। आज भी, बेहतर शिक्षा व्यवस्था और तर्कशील सोच की जरूरत बनी हुई है। उन्होंने जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव से मुक्त समाज की वकालत की थी। आज भी हमें सामाजिक समरसता और समान अवसरों की दिशा में काम करने की जरूरत है। भगत सिंह ने युवाओं को बदलाव का वाहक माना था। आज, जब देश के युवा विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी आवाज उठा रहे हैं, भगत सिंह की विचारधारा उन्हें मार्गदर्शन दे सकती है। भगत सिंह ने एक ऐसी शासन व्यवस्था की कल्पना की थी जो जनता की सेवा करे, न कि अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरुपयोग करे। आज के समय में भी पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग बनी हुई है।

क्या हम उनके सपनों का भारत बना सके?

आज जब हम सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता से लड़ रहे हैं, भगत सिंह के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उन्होंने केवल राजनीतिक आज़ादी की नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक समानता की भी बात की थी। भगत सिंह केवल एक नाम नहीं, एक विचारधारा हैं

भगत सिंह की क्रांति बंदूक से नहीं, बल्कि विचारों से थी। उन्होंने हमें सिखाया कि वास्तविक बदलाव संघर्ष और बलिदान से आता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है सोचने और सवाल करने की शक्ति। आज, जब हम उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाने की बात करते हैं, तो यह जरूरी हो जाता है कि हम उनके सपनों के भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

"इंकलाब जिंदाबाद!"

मॉं महाकाली

शेर पर सवार मात अष्टभुजाओं वाली,
तू ही चंडिका चामुंडा मॉं महाकाली,
दुख हरनी सुख करणी हे जगदंबा मैया,
जगत जननी जय हो आदि शक्ति मैहरोवाली ।

तेरे दर पर करें प्रार्थना माता ज्योतावाली,
कष्टों को मिटा जीवन में ला दो हरियाली,
त्रिभुवनेश्रवरी महाशक्ति हे अंबा मैया,
सुनो पुकार शीश झुकाए खड़ा मात सवाली ।

विघ्न बाधाओं को मॉं दूर करने वाली,
दुष्टों की है काल देवी भक्तों की रखवाली,
परमेश्वरी कृपामयी हे महालक्ष्मी मैया,
भर दो झोली "आनंद" करणी गुफाओं वाली ।

शरण में आने वाले की लाज रखती मातारानी,
सारे शत्रुओं का दमन करती उमा महारानी,
शंख चक्र गदा पद्म कर शोभित हे अष्टभुजी मैया,
खड्ग खप्पर कृपाण नाना अस्त्र-शस्त्र धारिणी ।

सुना है सब अपराध माफ़ करती है पहाड़ों वाली,
विनती सुन लो मेरी भी ऊँचे-ऊँचे भवनों वाली,
त्रिपुर सुंदरी करूणामयी हे
विंध्यवासिनी मैया,
जय जयकार मात तेरी करता हूँ
मंदिरों वाली ।

– मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नई, तमिलनाडु

एकलव्य पढ़ेंगे तभी तो विश्वगुरू बनेगा इंडिया

ओ पी सोनिक

भारत की शिक्षा व्यवस्था प्राचीन काल से ही एकलव्य केन्द्रित रही है। भले ही किसी भी रूप में। आजाद भारत की बात करें तो एकलव्य की उपस्थिति सरकारी योजनाओं में भी झलकती है। संवैधानिक तौर पर देखें तो शिक्षा राज्यों का विषय है, पर शिक्षा सभी वंचितों तक पहुँचे, इसके लिए केन्द्रीय सरकार के कई योजनागत प्रयास जारी हैं। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों की स्थापना एवं संचालन की योजना ऐसे ही प्रयासों में से एक है। गत 21 अगस्त को संसद के मानसून सत्र में केन्द्रीय जनजाति कार्य राज्य मंत्री द्वारा पेश आंकड़ों को एकलव्य विद्यालयों की प्रगति रिपोर्ट के रूप में देखा जा सकता है। केन्द्रीय सरकार ने वर्ष 1997-98 में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में शैक्षणिक विकास के लिए एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों की शुरुआत की थी। जिनमें छात्र केन्द्रित कल्याण योजनाओं के तहत बच्चों को 100 प्रतिशत नि:शुल्क शिक्षा, आवास, भोजन, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ, खेलकूद, और कैरियर मार्गदर्शन के प्रावधान किए गए। ताकि एकलव्य विद्यालयों को भी जवाहर नवोदय विद्यालयों की तरह उत्कृष्ट शिक्षा के केन्द्र बनाया जा सके।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2013-14 तक देश में कुल 123 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय क्रियाशील थे। 31 जुलाई 2025 की स्थिति के अनुसार पिछले 11 वर्षों में एकलव्य विद्यालयों की स्थापना एवं संचालन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सरकार द्वारा कुल 722 विद्यालय स्वीकृत एकलव्य विद्यालयों में से 485 विद्यालय संचालित हैं। अन्य विद्यालय निर्माणाधीन हैं। सरकार ने स्वीकृत विद्यालयों की निर्माण लागत की धनराशि को वर्ष 2021-22 में मैदानी क्षेत्रों में 20 करोड़ से बढ़ाकर करीब 38 करोड़ और पहाड़ी क्षेत्रों में 24 करोड़ से बढ़ाकर 48 करोड़ कर दिया। विद्यालयों की स्थापना एवं संचालन हेतु केन्द्रीय सरकार ने वर्ष 2021-22 में 92239 लाख की धनराशि जारी की थी, जो वर्ष 2024-25 में करीब पॉंच गुना बढ़कर 461079 लाख हो गयी। आर्थिक आंकड़ों को देखें तो लगता है कि सरकार एकलव्य विद्यालयों के लिए खुले हाथ से खर्च कर रही है। पर योजनाओं की सफलता का आंकलन केवल जारी धनराशि के आधार पर नहीं किया जा सकता। योजनाओं को सफलताओं के मुकाम तक पहुँचाने में सही क्रियान्वयन की मुख्य भूमिका होती है।

जिस तरह से एकलव्य विद्यालयों के लिए जारी धनराशि में वृद्धि हो रही है, लगभग उसी अनुपात में एकलव्य विद्यालयों में बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ रही है। वर्ष 2021-22 से वर्ष 2024-25 के बीच ड्रॉप आउट बच्चों की संख्या में भी पॉंच गुना वृद्धि हुई है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों की संख्या वर्ष 2021-22 में 111 थी जो वर्ष 2024-25 में बढ़कर 552 हो गयी। वर्ष 2024-25 में जिन राज्यों में बीच में ड्रॉप आउट बच्चों की संख्या ज्यादा रही, उनमें से छत्तीसगढ में सबसे ज्यादा 88, उड़ीसा 87, मध्य प्रदेश 71, महाराष्ट्र 68, आंध्र प्रदेश 66, राजस्थान 45, और तेलंगाना में 37 बच्चों ने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी।

एकलव्य विद्यालयों में बीच में पढ़ाई छोड़ने के कई कारण होते हैं। गरीबी जिनमें से एक बड़ा कारण है। देश के दूर दराज के ग्रामीण अंचलों में अनुसूचित जनजाति वर्ग के अधिकांश परिवार आज भी गरीबी से जूझ रहे हैं। जिसके कारण उन्हें पहले दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। गरीब परिवारों के लिए पेट की भूख मिटाना उनकी प्राथमिकताओं में प्रथम होता है। यही कारण है कि घोर गरीबी में परिवारों का सहारा बनने वाले बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। एकलव्य विद्यालयों में बच्चों के बढ़ते ड्राप आउट को देखकर लगता है कि मुफ्त मिल रहा राशन भी गरीब परिवारों के बच्चों को शिक्षा की ओर आकर्षित नहीं कर पा रहा है। एकलव्य विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक के बच्चों के लिए पढ़ाई की व्यवस्था है, जिनमें प्रत्येक विद्यालय में 480 बच्चों के नामांकन की क्षमता होती है। पर संचालित विद्यालयों और छात्रों के नामांकन की संख्या के अनुपात को देखें, तो ऐसे विद्यालय बहुत ही कम हैं, जिन्होंने 480 के नामांकन के लक्ष्य को पूरा किया है।

बच्चों के नामांकन में लड़के और लड़कियों की बराबर की भागीदारी सुनिश्चित करने का भी प्रावधान है। राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति की वेबसाइट से पता चलता है कि आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखण्ड में नामांकित विद्यार्थियों में लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या ज्यादा है। अन्य राज्य लैंगिक समानता के लक्ष्य को छू नहीं पाए हैं। राष्ट्रीय आदिवासी छात्र शिक्षा समिति द्वारा पीवीटीजी यानी विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के लिए एकलव्य विद्यालयों के कुल नामांकन में 5 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है, ताकि कमजोर से कमजोर वर्ग का हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हासिल कर सके। पर पूरे देश में केवल चार राज्यों आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडू, और त्रिपुरा ने ही नामांकन में 5 प्रतिशत आरक्षण के लक्ष्य को हासिल कर पाए हैं। आंध्र प्रदेश ने करीब 19 प्रतिशत और त्रिपुरा ने 10 प्रतिशत नामांकन करके अनुसूचित जनजातीयों की शिक्षा के प्रति प्रबल इच्छाशक्ति का परिचय दिया है। अन्य सभी राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश लक्ष्य से काफी पीछे हैं। नामांकन में राज्यों का पिछड़ापन अनुसूचित जनजातीय वर्गों के प्रति राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी को दर्शाता है।

विजयदशमी का शाश्वत संदेश यही है कि सत्य अनादि और अनंत है...

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

सहज हरदा मध्य प्रदेश

विजयदशमी भारतीय संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है, यह दिन भारतीय जीवन-दर्शन की मूल आत्मा अर्थात सत्य की विजय का प्रतीक माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था और इस प्रकार अधर्म, अन्याय तथा अहंकार के प्रतीक रावण का अंत हुआ। इसी से यह पर्व संदेश देता है कि चाहे असत्य और अधर्म कितने ही प्रबल क्यों न हों, अंततः विजय धर्म, सत्य और मर्यादा की ही होती है। भारतीय परंपरा में इस तिथि का संबंध महिषासुर वध से भी है, जब माँ दुर्गा ने लगातार नौ दिन तक युद्ध कर दशमी के दिन उसका अंत किया और देवताओं को पुनः शक्ति व सम्मान दिलाया। दक्षिण भारत और महाराष्ट्र की परंपरा में यह दिन अर्जुन द्वारा शमी वृक्ष से अपने अस्त्र निकालने और विजय अभियान आरंभ करने से जुड़ा है, इसलिए इसे आयुध पूजन का पर्व भी कहा जाता है।इस दिन का सांस्कृतिक स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुरंगी है। उत्तर भारत में जगह-जगह रामलीला का मंचन होता है और रावण, मेघनाद तथा कुंभकर्ण के विशालकाय पुतलों का दहन कर बुराई के अंत का प्रतीकात्मक प्रदर्शन किया जाता है, जिसे देखने हजारों लोग एकत्रित होते हैं और यह सामूहिक चेतना का बड़ा उत्सव बन जाता है। बंगाल, ओडिशा और असम जैसे प्रांतों में इसी समय दुर्गा पूजा का समापन होता है और माँ दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन गीत, नृत्य और भावनापूर्ण उत्सव के बीच किया जाता है। महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में इस दिन हथियारों, औज़ारों, पुस्तकों और कार्य-साधनों की पूजा की जाती है क्योंकि भारतीय संस्कृति यह मानती है कि साधन के प्रति आदर और श्रम के प्रति सम्मान ही प्रगति और विजय के मूल तत्व हैं।विजयदशमी केवल धार्मिक या पौराणिक स्मृति भर नहीं है, इसका सामाजिक और नैतिक संदेश भी गहरा है। हर वर्ष जब रावण का पुतला जलता है तो यह हमें भीतर झाँककर यह प्रश्न करने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हमने अपने भीतर बसे रावण, यानी लोभ, ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार और असत्य को परास्त किया है? यह पर्व हमें आत्म-सुधार और सकारात्मक जीवन दृष्टि का मार्ग बताता है। माँ दुर्गा की विजय यह स्मरण कराती है कि शक्ति का सही उपयोग तभी है जब वह धर्म और न्याय की रक्षा में लगाया जाए, अन्यथा वही शक्ति विनाश का कारण बन सकती है। अर्जुन का प्रसंग यह सिखाता है कि उचित समय पर अस्त्र-सज्जा और पराक्रम का प्रदर्शन भी सफलता का आधार है।भारतीय संस्कृति में त्योहार केवल आनंद और उत्सव का अवसर नहीं होते, वे आत्मचिंतन, शिक्षा और समाज में एकता का माध्यम भी होते हैं। विजयदशमी का सामूहिक स्वरूप लोगों को एकता के सूत्र में बाँधता है, सामूहिक पर्व समाज में मेल-जोल और एकता को मजबूत करते हैं। यह पर्व बच्चों को राम के आदर्शों, दुर्गा की शक्ति, अर्जुन के पराक्रम और सत्य की महत्ता से परिचित कराता है। साथ ही, यह पीढ़ियों को यह स्मरण दिलाता है कि जीवन में चाहे कितने भी संघर्ष हों, यदि हम धर्म, मर्यादा और सत्य के पथ पर चलते हैं तो निश्चित ही विजय हमारी होगी।विजयदशमी का शाश्वत संदेश यही है कि सत्य अनादि और अनंत है, वही अंतिम रूप से विजेता होता है। यह पर्व हमें न केवल धर्मग्रंथों की याद दिलाता है, बल्कि हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार, नैतिकता और निर्णयों पर भी रोशनी डालता है। इस प्रकार विजयदशमी भारतीय संस्कृति की गहराई और उसकी शिक्षाओं का जीवंत उदाहरण है, जो युगों से हमें अच्छाई का मार्ग दिखाता आ रहा है और आने वाली पीढ़ियों को भी यही अमर संदेश देता रहेगा।

लद्दाख की ठंडी हवा में उठते गर्म सवाल

लद्दाख... जिस ज़मीन को हम बर्फ़, सर्द हवाओं, बौद्ध मठों और टूरिज़्म से जोड़कर देखते हैं, इन दिनों यहाँ की ठंडी हवा गर्म सवालों से भरी हुई है।

सवाल है कि लद्दाख के लोगों की कौन-सी ऐसी मांग है जिसके कारण हुई हिंसा में चार लोगों की जान चली गई और अनगिनत घायल हो गए?

सवाल है कि केंद्र सरकार इन मांगों को पूरा क्यों नहीं कर सकती या पूरा क्यों नहीं करना चाहती ?

अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 हटने के बाद, लद्दाख को बिना विधानसभा के केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। इसके बाद से लोग मांग रहे हैं-

1. पूर्ण राज्य का दर्जा

2. लेह और कारगिल के लिए अलग लोकसभा सीट

3. नौकरी और भूमि में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता और

4. संविधान की छठी अनुसूची में शामिल होना

लद्दाख में 97% से अधिक आबादी आदिवासी है। हिल काउंसिल के पास सीमित अधिकार हैं, लेकिन छठी अनुसूची लागू होने से उन्हें जमीन, जंगल, शिक्षा, खेती-बाड़ी और खनन पर वास्तविक नियंत्रण मिलेगा। संसदीय समिति (2021) और NCST (2023) ने भी इसे लागू करने की सिफ़ारिश की थी, लेकिन केंद्र ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। लोकतंत्र में शांतिपूर्ण प्रदर्शन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संवैधानिक अधिकार हैं। हिंसा कभी सही नहीं है, लेकिन वर्षों पुरानी अनसुनी मांगों और देरी ने माहौल विस्फोटक बना दिया।

तो आखिर सवाल वही हैं,

1. क्या सरकार की अनसुनी और देरी के कारण ही लद्दाख में यह माहौल बन गया?

2. हिंसा की वजह का असली जिम्मेदार कौन है? और

3. क्या सरकार अभी भी इन मांगों को गंभीरता से सुनने को है तैयार ??

द्वितीय राष्ट्रीय मध्यस्थता सम्मेलन के तीसरे सत्र में राज्य-संबंधित मामलों में मध्यस्थता पर चर्चा

- शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए सौहार्दपूर्ण मध्यस्थता और परस्पर सम्मानपूर्ण निर्णय आवश्यक हैं।

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर : द्वितीय राष्ट्रीय मध्यस्थता सम्मेलन के दूसरे दिन का तीसरा सत्र राज्य-संबंधित मामलों में मध्यस्थता पर केंद्रित था।

इस सत्र की अध्यक्षता भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति श्री अरविंद कुमार ने की और सह-अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति श्रीमती सुनीता अग्रवाल, मुख्य न्यायाधीश, गुजरात उच्च न्यायालय और माननीय न्यायमूर्ति श्री नितिन जामदार, मुख्य न्यायाधीश, केरल उच्च न्यायालय ने की।

राज्य-संबंधित मामलों में मध्यस्थता अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य को विधि-निर्माता के बजाय एक सूत्रधार की भूमिका निभानी चाहिए। शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए सौहार्दपूर्ण मध्यस्थता और परस्पर सम्मानपूर्ण निर्णय आवश्यक हैं। सत्र में सरकारी विवाद प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ बनाने, नीति कार्यान्वयन और जनहित के मामलों में मध्यस्थता की भूमिका, सरकारी अधिकारियों और कानूनी प्रतिनिधियों के लिए क्षमता निर्माण, तथा सफल राज्य मध्यस्थता के सर्वोत्तम अभ्यासों और केस स्टडी पर ध्यान केंद्रित किया गया। चर्चा में राज्य से संबंधित सेवा और रोजगार विवादों के शीघ्र समाधान के लिए मध्यस्थता के माध्यम से राज्य मुकदमेबाजी के बोझ को कम करने, संविदात्मक और बुनियादी ढांचा परियोजना विवादों का मध्यस्थता के माध्यम से समाधान, और नागरिकों और सरकारी संस्थाओं के बीच बार-बार होने वाले विवादों के समाधान पर ध्यान केंद्रित किया गया।

इस चर्चा में माननीय न्यायमूर्ति आशुतोष कुमार, मुख्य न्यायाधीश, गुवाहाटी उच्च न्यायालय, माननीय न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा, न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, माननीय न्यायमूर्ति सी. हरिशंकर, न्यायाधीश, दिल्ली उच्च न्यायालय, माननीय न्यायमूर्ति गोपीनाथ पुझनकारा, न्यायाधीश, केरल उच्च न्यायालय, श्री सुदर्शन रेड्डी, महाधिवक्ता, तेलंगाना ने भाग लिया, जबकि श्री आर. संथान कृष्णन ने सत्र का समन्वय किया। पैनलिस्टों ने उपरोक्त चर्चा किए गए विषयों से संबंधित कुछ उल्लेखनीय निर्णयों का हवाला दिया।

सरकार को अपनी घोषणा के अनुसार हिसार- अग्रोहा- सिरसा को रेलवे लाईन से जोड़ने का काम करना चाहिए- बजरंग दास गर्ग

सुनाम,28 सितंबर (जगसीर लोगोंवाल)- अग्रोहा धाम वैश्य समाज के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अध्यक्ष बजरंग दास गर्ग ने महाराजा अग्रसेन जयंती के अवसर पर सुनाम में मीडिया से बात करते सरकार के खिलाफ जम कर शब्दि हमले किए और अग्रवाल समाज को नजरअंदाज करने की लताड़ा।

अग्रोहा धाम वैश्य समाज के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने कहा कि सरकार को अपनी घोषणा के अनुसार हिसार-अग्रोहा- सिरसा को रेलवे लाईन से जोड़ने का काम करना चाहिए जबकि केंद्र सरकार द्वारा अग्रोहा को रेलवे लाईन से जोड़ने की घोषणा अनेकों बार की गई है और केंद्रीय रेल बजट में हिसार-अग्रोहा-सिरसा 93 किलोमीटर रेलवे लाईन से जोड़ने की मंजूरी देने के बावजूद भी अभी तक काम शुरू नहीं हुआ है। सरकार द्वारा अग्रोहा-सिरसा को रेलवे लाईन से ना जोड़ने पर जनता में बड़ी भारी नाराजगी है। बजरंग गर्ग ने कहा कि अग्रोहा धाम में हर रोज हजारों धर्म प्रेमी दर्शन के लिए आते हैं और अग्रोहा मेडिकल कॉलेज में हर रोज लगभग 3000 मरीजों की ओपीडी है मगर बड़े दुख से कहना पड़ रहा है कि अग्रोहा में ना तो बस अड्डा चालू है ना ही अग्रोहा में रेलवे लाईन है। अग्रोहा में बस अड्डा व रेलवे लाईन ना होने से आने-जाने वाले हजारों यात्रियों को बड़ी भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है जबकि सरकार अग्रोहा को इंडस्ट्रीज जोन बनाने की बात कर रही है। सरकार को अग्रोहा को विकास के लिए टेक्सटाइल हब व इंडस्ट्रीज जोन बनाना चाहिए और अग्रोहा के विकास के लिए विशेष पैकेज देना चाहिए जब तक अग्रोहा में विकास नहीं होगा तब तक अग्रोहा तरक्की नहीं कर सकता है। जबकि सरकार ने अग्रोहा को ग्लोबल सिटी बनाने की घोषणा तक की है। सरकार को ग्लोबल सिटी बनाने से पहले अग्रोहा में मूलभूत सुविधा देनी चाहिये जबकि अग्रोहा में सरकार की तरफ से कोई भी मूलभूत सुविधा नहीं है। अग्रोहा में टीले की खुदाई का काम बहुत ही मंद गति से चल रहा है।

बजरंग दास गर्ग ने अग्रोहा वार्षिक मेले की जानकारी देते बताया कि अग्रोहा धाम में 7 अक्टूबर को 42 वां वार्षिक मेला हर दृष्टिकोण से ऐतिहासिक होगा। मेले में महाब्रह्मार्षि श्री कुमार स्वामी जी, भजन सम्राट कन्हैया मित्तल, राज्यसभा के पूर्व सदस्य डॉक्टर सुभाष चंद्रा , नवीन जिंदल, सावित्री जिंदल, वरिंदर गोयल कैबिनेट मंत्री पंजाब सहित लाखों की संख्या में लोग देश विदेश से भाग लेंगे। श्री गर्ग ने कहा कि अग्रवाल समाज महाराजा अग्रसेन जी के आदर्शों पर चलकर देश व प्रदेश में सामाजिक व धार्मिक कार्यों में लगा हुआ है। यहां तक की वैश्य समाज द्वारा सामाजिक व धार्मिक कार्यों में लगभग 62 प्रतिशत पैसा खर्च किया जा रहा है। यहां तक की केंद्र व प्रदेश की सरकारों को सबसे ज्यादा टैक्स वैश्य समाज दे रहा है। वैश्य समाज ने देश व विदेशों में व्यापार व उद्योग जगत में अपनी अलग पहचान में बनाई है। बजरंग गर्ग ने कहा कि अग्रोहा महाराजा अग्रसेन जी की धर्म नगरी है, जिसके साथ देश की जनता की आस्था जुड़ी हुई है।

इस अवसर पर सुनाम अग्रवाल सभा के अध्यक्ष विक्रम गर्ग, चीफ पैट्रन मनप्रीत बांसल, स्पोक्समैन अग्रोहा विकास ट्रस्ट अग्रतन श्याम लाल, अग्रतन जयंती चेयरमैन वेद प्रकाश होडला, अग्रतन कृष्ण संदोहा, श्रीकृष्ण राजू, कमल गर्ग, हकूमत राय जिंदल, यशपाल सिंगला, मास्टर धीरज कुमार और प्रभात जिंदल हाजिर थे।

राजधानी में हथियारों की भरमार: 10 अर्ध-स्वचालित पिस्तौलें जब्त, कुख्यात चोर ब्यापारी गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: राजधानी भुवनेश्वर में हाल के दिनों में बंदूकों की तस्करी में तेज़ी आई है। तस्कर बिहार और गुजरात से अत्याधुनिक मशीन गन की तस्करी कर रहे हैं। हाल ही में कमिश्नरेट पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में डेढ़ दर्जन पिस्तौलें ज़ब्त की हैं। 17 तारीख़ को स्पेशल क्राइम यूनिट (SCU) ने 8 बंदूकें ज़ब्त कीं। एक साथ इतनी बड़ी संख्या में बंदूकों की बरामदगी से राजधानी में भय का माहौल बन गया था। लेकिन लोगों के मन से वह डर खत्म नहीं हुआ, आज एसएसीयू ने 10 और सेमी-ऑटोमैटिक पिस्तौल जब्त कर एक कुख्यात माफिया को गिरफ्तार किया है। अब जबकि परवन का मौसम है, बंदूकों की बरामदगी को लेकर विभिन्न हलकों में हलचल है। यह संदेह है कि जिन अपराधियों ने बंदूक खरीदने की योजना बनाई थी, वे परवन के मौसम में घटनाओं को अंजाम देने की योजना बना रहे थे। 18 बंदूकें जब्त की गई हैं और संदेह है कि कुछ और बंदूकें पहले ही अपराधियों के हाथों में पहुंच चुकी हैं। लेकिन अभी तक एक भी बंदूक खरीदार नहीं पकड़ा गया है। पुलिस गिरफ्तार तस्करों से बंदूक खरीदारों के नाम नहीं उगलवा पाई है। पेशेवर तस्कर पुलिस को बंदूक खरीदारों के नाम नहीं बताते हैं। इसलिए, चर्चा है कि अब राजधानी और आसपास के इलाकों में अपराधियों के हाथों में बड़ी संख्या में आग्नेयास्त्र हैं। 17 तारीख को बंदूक माफिया के तीन सदस्य पकड़े गए। गिरोह का सरगना झारखंड के लोहरदगा इलाके का महेश कुमार शाह उर्फ टीपू और खोरदार के दो साथी पकड़े गए। उनके पास से 8 बंदूकें, 34 गोलियां, 10 मैगजीन और 3 कार जब्त की गईं। उस समय पुलिस ने बंदूकों की इस बड़े पैमाने पर तस्करी का पता लगाने के लिए छापेमारी शुरू की थी। तभी से पुलिस को जगतसिंहपुर नभयम के बारे में सूचना मिली थी। जानकारी मिली थी कि नभयम का झारखंड के टीपू से घनिष्ठ संबंध है। इसलिए पुलिस ने नभयम पर नज़र रखना शुरू कर दिया था। जब पता चला कि नभयम नियाली और बालीपटना होते हुए राजधानी की ओर जा रहा है तो पुलिस की एक विशेष टीम ने उन रास्तों पर जाल बिछा दिया और मुखबिरों को सतर्क कर दिया। आज सुबह करीब 5 बजे पुलिस को धौली रोड पर एक सुनसान जगह पर एक अपंजीकृत पल्सर बाइक पर संदिग्ध रूप से इंतजार कर रहे एक युवक के बारे में सूचना मिली थी बाद में, उसके बैग से नौ और बंदूकें बरामद की गईं। तब पता चला कि वह मोस्ट वांटेड है। आज उसे अदालत में पेश किया गया। पता चला है कि पुलिस उसे रिमांड पर लेने की योजना बना रही है।

इन दोनों मामलों में पुलिस ने बंदूक तस्करों को जेल भेज दिया है। लेकिन यह पता नहीं चल पाया है कि वे किसे बेचने आए थे। यह पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। गिरफ्तार तस्करों से मिली जानकारी के अनुसार, मैगजीन समेत बंदूक और 6 राउंड गोलियां 50,000 रुपये में बेची जा रही हैं। अगर आप अकेले बंदूक खरीदते हैं, तो आपको 40,000 रुपये मिलेंगे। कोई भी आम या छोटा अपराधी इतनी कीमत पर बंदूक नहीं खरीदेगा। केवल बड़े अपराधी ही इतनी कीमत पर बंदूक खरीद सकते हैं।

सेवा भारती अमृतसर की और से बाढ़ पीड़त के लिए निशुल्क मेडिकल जांच के केम्प लगाए गए

अमृतसर 28 सितंबर (साहिल बेरी)

लोगों को जरूरत की दवाएं भी बांटी गई ! सेवा भारती अमृतसर के प्रमुख पारस शर्मा जी ने पत्रकारों से बात करते हुए बताया की सेवा भारती अब तक कुल १९ मेडिकल कैम्प लगा चुकी है जिसमें अब तक 3072 बाढ़ पीड़ित लोगो की मेडिकल जांच कर उनको जरूरत की निशुल्क चिकित्सा प्रदान की जा रही है !सेवा भारती अमृतसर और एन.म.ओ. की ओर से डॉ के. आर. तुली जी ने जानकारी देते हुए बताया स्वस्थ सेवा ही राष्ट्रीय सेवा के मंत्र से हम सभी डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ जब से पंजाब में बाढ़ आई है तब से हर जरूरत के गाव में मेडिकल सेवा दे कर अपने बहन भाइयो का दुख कम कर रहे है एडवोकेट पारस शर्मा सेवा प्रमुख अमृतसर ने बताया सेवा भारती अमृतसर, इस समय अपने मुख्य सेवा कार्य मेडिकल कैम्प और पुर्नवास को मुख्य सेवा के रूप में कर रही है इस अवसर पर विजय सिंह , कंवल कपूर, डॉ के आर तुली ,डॉक्टर हरजीत , डॉक्टर राकेश ,डॉ राजीव,जे पी सलवान,दीपक नंदा,डॉ ऋत्विक,सिद्धांत,डॉ विग्रनगदा,डॉ यश,डॉ अकृति,डॉ आदित्य,कुनाल एडवोकेट पारस शर्मा,डॉ राजेश सिधाना व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे !

मैटर एरा इलेक्ट्रिक मोटरबाइक का सिकंदराबाद में शोरूम उद्घाटन

सिकंदराबाद स्थित कारखाना में मैटर एरा इलेक्ट्रिक मोटरबाइक का शोरूम हाल ही में खोला गया है, जो ग्राहकों को आकर्षक फीचर्स और पर्यावरण अनुकूल डिज़ाइन के साथ इलेक्ट्रिक मोटरबाइक प्रदान करता है। महेश , भंवरलाल सीरवी, साई विनती प्रसाद ने मैटर एरा की प्रमुख विशेषताए के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि 4-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ आती है, जो भारत में अपनी तरह की पहली इलेक्ट्रिक मोटरबाइक है। 5 kWh बैटरी पैक के साथ आती है, जो एक्टिव लिक्विड कूलिंग सिस्टम से लैस है। 7-इंच टचस्क्रीन डिस्प्ले के साथ आती है, जो नेविगेशन, म्यूजिक और कॉल कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है। स्मार्ट ऐप कंट्रोल फीचर्स जैसे रिमोट लॉक और अनलॉक, जियोफेंसिंग, लाइव लोकेशन ट्रैकिंग और थीफ्ट अलर्ट मॉनिटरिंग प्रदान करती है। सिंगल चार्ज में 125 से 150 किलोमीटर तक चल सकती है। 14 bhp और 520 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करती है। तीन अलग-अलग राइड मोड्स स्पोर्ट, इको और सिटी के साथ आती है। बेटरी 15 वर्ष वारंटी के साथ है महेश, भंवरलाल सीरवी , साई विनती प्रसाद ने कहा कि जहां इसे कई छूट और प्रोत्साहनों के साथ पेश किया जा रहा है। सिकंदराबाद में मैटर एरा इलेक्ट्रिक मोटरबाइक का शोरूम उद्घाटन शहर के लोगों के लिए एक अच्छा अवसर है जो इलेक्ट्रिक मोटरबाइक की दुनिया में नए और आकर्षक विकल्पों की तलाश में हैं। इस अवसर पर उपस्थित महेश, भंवरलाल सीरवी, साई विनती प्रसाद ,नालम प्रसाद, मांगीलाल काग, कालुराम काग, भुराराम काग, किशनलाल पंवार, पेमाराम, सुरेश, ओमप्रकाश पंवार,नेमीचंद व अन्य।

सीमा पार दो व्यक्ति 4 किलो हेरोइन सहित अमृतसर से काबू

अमृतसर, 28 सितंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित और नशा मुक्त बनाने के अभियान के दौरान काउंटर इंटेलिजेंस (सी आई) अमृतसर ने दो व्यक्तियों को 4 किलो हेरोइन सहित गिरफ्तार कर पाकिस्तान से संबंधित सीमा पार नशा तस्करी के मॉड्यूल का पर्दाफाश किया। यह जानकारी आज यहां डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डी जी पी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान अमृतसर के अटारी निवासी आकाशदीप सिंह उर्फ़ टोनी और अमृतसर के बासरके भैणी निवासी पवनबीर सिंह के रूप में हुई। हेरोइन बरामद करने के अलावा, पुलिस टीमों ने उनका हीरो स्प्लेंडर मोटरसाइकिल भी ज़ब्त किया, जिसका उपयोग वे खेप पहुंचाने के लिए कर रहे थे।

डी जी पी गौरव यादव ने कहा कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि गिरफ्तार दोनों आरोपी पाकिस्तान आधारित तस्कर राणा किंग, जो सीमा पार से नशे की खेप ड्रोन के माध्यम से भेज रहा है, के निर्देशों पर काम कर रहे थे।

कार्रवाई के विवरण साझा करते हुए उन्होंने बताया कि सी आई अमृतसर की टीमों को किसी स्रोत से सीमा क्षेत्र से बड़ी मात्रा में नशा हासिल करने की ठोस जानकारी मिली थी। उन्होंने कहा कि तेज़ कार्रवाई करते हुए सी आई अमृतसर की पुलिस टीम ने जाल बिछाया और दोनों आरोपियों को मनु अस्पताल के पास, छेहरटा-सन्न साहिब रोड, अमृतसर में उस समय घेर लिया, जब वे छेहरटा क्षेत्र में दूसरी पार्टी को खेप पहुंचाने जा रहे थे।

डी जी पी ने कहा कि पूरे मॉड्यूल को बेनकाब करने के लिए इस मामले में पिछली और आने वाली संबंधित कड़ियों की पहचान की जा रही है। उन्होंने आगे कहा कि आने वाले दिनों में और गिरफ्तारी और बरामदगी की संभावना है।

इस संबंध में पुलिस थाना स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल (एस एस ओ सी), अमृतसर में एन डी पी एस एक्ट की धाराओं 21, 25 और 29 के तहत एफ आई आर नंबर 53, दिनांक 28-09-2025 दर्ज की गई है।

अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने शहर के विभिन्न इलाकों का दौरा कर जनता से की सीधी बातचीत

अमृतसर, 28 सितम्बर (साहिल बेरी)

अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने आज शहर के अलग-अलग क्षेत्रों का दौरा कर लोगों से सीधा संवाद किया और उनकी समस्याओं को ध्यान से सुना।

इस अवसर पर कमिश्नरेट अधिकारियों, नगर निगम के अफसरों और संबंधित विभागों के कर्मचारी भी मौजूद थे। मेयर भाटिया ने मौके पर ही कई मुद्दों का जायज़ा लेकर उनमें से कई का तुरंत समाधान करवाया।

मेयर भाटिया ने कहा कि अमृतसर शहर को और अधिक सुंदर, साफ-सुथरा और विकसित बनाने के लिए नगर निगम की टीम दिन-रात मेहनत कर रही है। उन्होंने बताया कि गली-मोहल्लों में निकासी प्रणाली, सड़कों की मरम्मत, सफाई व्यवस्था और सड़क लाइटों से जुड़ी कई लंबित मांगों को प्राथमिकता के आधार पर निपटाया जा रहा है।

मेयर ने शहरवासियों से अपील करते हुए कहा कि हम सभी को मिल-जुलकर अमृतसर की शान बढ़ाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार और नगर निगम की कोशिशों के साथ-साथ नागरिकों की साझी भागीदारी ही शहर को और खूबसूरत और आधुनिक बनाने में सहायक होगी।

श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने यह भी भरोसा दिलाया कि लोगों की हर समस्या को गंभीरता से सुनकर उनके समाधान के लिए लगातार कदम उठाए जाएंगे, ताकि अमृतसर का हर इलाका विकास और सुविधाओं के मामले में एक नया मानक स्थापित कर सके।

द्वारिकाधीश श्री कृष्ण मंदिर का उद्घाटन और मूर्ति स्थापना कार्यक्रम 28 को मनाया गया :सागर मुनि शास्त्री

अमृतसर 28 सितंबर (साहिल बेरी)

मंदिरों की गरिमा अपने आप में सिद्ध है । चौंक पासियाँ स्थित अध्यात्म केंद्र प्राचीन मंदिर श्री जय कृष्णियां के तत्वाधान में नवीन मंदिर का उद्घाटन साबका डिप्टी सीएम ओम प्रकाश सोनी ने किया । जिस का नाम द्वारिकाधीश श्री कृष्ण मंदिर है और यह नगीना इविन्यू मजीठा रोड में स्थित है । पत्रकारों को जानकारी देते हुए मंदिर के संचालक दर्शनाचार्य सागर मुनि शास्त्री जी ने कहा कि दिनांक 28 सितंबर दिन रविवार को जय कृष्णी पंथ के अधिकरणों की अध्यक्षता में मंदिर का उद्घाटन और गर्भ गृह में ठाकुर जी की मूर्ति स्थापित की गई और जय कृष्णी परंपरा के विशेषों की स्थापना की गई, मुख्य अतिथि के रूप में पूज्य महंत श्री यशराज शास्त्री महाराज जी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहें। इस आयोजन में भजन संकीर्तन, मंगल अभिषेक, संत स्वागत, प्रवचन, और अन्नदान आदि कार्यक्रम मुख्य रूप से सम्पन्न किया गया । इस कार्यक्रम में मंदिर की मुख्य प्रधान कार्यकर्ता श्रीमती अंजना लूथरा, कीर्तिका धवन, अमित शिंगारी, सिद्धांत कीमती लाल गुलाटी आदि भक्त मौजूद थे ।

कमीश्नरेट पुलिस अमृतसर ने सक्रिय बी.के.आई. मॉड्यूल का पर्दाफाश किया

अमृतसर 28 सितंबर (साहिल बेरी)

दीवार पर नारे लिखने, एक रेलगाड़ी के डिब्बे पर पेंटिंग करने और गोलीबारी की घटना का पता लगाया गया है।

गिरफ्तार किए गए आरोपी बी.के.आई. के ऑपरेटिव शमशेर शेड़ा, कुख्यात गैंगस्टर प्रभ दासूवाल और अफरीदी तूत के संपर्क में थे और उनके निर्देशों पर सनसनीखेज अपराधों को अंजाम दे रहे थे।

17 अगस्त को, गुरपतवंत सिंह पन्नू ने सोशल मीडिया पर ग्रैफिटी दिखाते हुए एक वीडियो जारी कर इस घटना की जिम्मेदारी ली थी।

इसके बाद कमीश्नरेट पुलिस अमृतसर ने घटनाओं की तुरंत जांच शुरू की और अपराध में शामिल चार आरोपियों को गिरफ्तार किया।

गुरविंदर सिंह उर्फ हरमन और विशाल की गिरफ्तारी से पूरी साजिश का पर्दाफाश हुआ और उनके कब्जे से एक पिस्तौल, स्प्रे पेंट की बोतल और एक मोटरसाइकिल बरामद हुई।

पूछताछ के दौरान गिरफ्तार आरोपियों ने अमृतसर में ग्रैफिटी पेंटिंग में शामिल होने की बात कबूल की।

उनके खुलासों के आधार पर, दो अन्य आरोपी जोबनदीप और विशाल उर्फ कीड़ी को नामजद किया गया और बाद में गिरफ्तार किया गया।

गुरविंदर @ हरमन और विशाल @ कीड़ी इस कार्रवाई में शामिल थे, जबकि विशाल पुत्र रवीदास ने उन्हें लॉजिस्टिक सहयोग और छुपने की जगह उपलब्ध कराई।

जोबनदीप ने इस काम को करने के लिए टोकन राशि अपने बैंक खाते में प्राप्त की।

जांच से पता चला है कि आरोपियों का आपराधिक बैकग्राउंड है, जिसमें हत्या के प्रयास और जबरन वसूली के मामले शामिल हैं।

वे तरनतारन क्षेत्र में एक मेडिकल प्रैक्टिशनर और एक स्कूल के प्रांगण में गोलीबारी की घटनाओं में भी शामिल थे।

सरायकेला की उन सात देवी की मूर्तियां अब भी पटना म्यूजियम में कैद

1928 में राजा को पूजारी ने सपने में देवी ने कहा - नदी गर्भ में हुं उद्धार करवाएं मेरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, सरायकेला स्टेट का राजकीय माइनिंग कार्यालय , पब्लिक दुर्गा पूजा की ऐतिहासिक मंडप अब भव्य मंदिर बना है, निकट खनीज भवन जो जर्जर हो चुका था उसे धराशाई कर मलवे साफ कर नया भवन खड़ा किया गया है ।सरायकेला वासी इतिहास का कहीं कब्र तो नहीं दे रहे हैं ?सरकार ठीक उसी के नक्से पर भवन क्यो नही बनया ? शायद झारखंड एवं सरायकेला के शासक तंत्र व इंजिनियरों को इसकी गौरवशाली इतिहास पर कुछ लेना देना नहीं है । अगर ऐसा नहीं होता तो सरायकेला की उन 7 दुर्गा या उनकी पर्याय उप देवियों की मुर्तियों को म्यूजियम में रखकर बिहार सरकार कमाई नहीं करती ।

कभी इसी माइनिंग ओफिस में सरायकेला स्टेट की उन सात उन दुर्गा की मूर्तियां थीं , जिसे बिहार सरकार उठाकर ले गयी है आजादी के बाद । पटना म्युजियम की बिहार कहीं रखी है ।

हमारे उन धार्मिक ऐतिहासिक धरोहरों को वापस लाना सरकार का परम कर्तव्य बनता है पर आजतक झारखंड में जिस किसी की सरकार रही वे सब बिहार पर मेहरबान रहे नतीजतन सरायकेला की राजनीति, आर्थिक , सामाजिक, भाषाई सांस्कृतिक मामले को लेकर उसे न्याय नहीं मिला ।

मैं बताता चलुं वे सात दुर्गा एवं उप देवियों की थीं , मुर्तियों को किसने बनाया था - उसका कोई अता पता नहीं है । हां, 1928 में खरकराई नदी मे भीषण बाढ़ आई थी ।तब लोग त्राही त्राही कर रहे थे ।वनदुर्गा स्थल से आगे पहुंच चुकी थी नदी ।

वनदुर्गा ,अब यह स्थल पेयजलापूर्ति विभाग हाते के अन्दर है , उसकी प्रोपार्टी बन चुकी है ।उस बाढ़ के बाद निकट रह रहे माली परिवार हे साहुडी चले गये ।

उस बाढ के समय लोग दुर्गा /पाउडी एवं जगन्नाथ जी तथा पंचदेवल मंदिर मांजना घाट महादेव को अनुष्ठान कर मन्नत मांग रहे थे अपने अपने आराध्य के सानिध्य में । तब ये सात दुर्गाओं ने एक पूजारी को सपने में कहा- मैं संत दुर्गा ईटागढ बासुरदा यानी आदित्यपुर तब दिदली, सालडीह वस्ती निकट करखाई के गर्भ में है, राजा को बताईये हमें लेकर जाएं । राजा ने सरायकेला स्टेट माइनिंग विभाग को आदेश देते हैं । नदी के गर्भ से कुछ मुर्तियों का संधान मिलता है । उसे माइनिंग विभाग उठाकर लाती है एवं इसी बिल्डिंग में रखता है ।उधर 1947 में जब देश को आजादी मिलती है , 15 दिसंबर 1947 में सरदार पटेल के सचिव भी पी मेनन द्वारा सरायकेला Priencly State को भारतीय अधिराज्य मे शामिल कर लिया जाता है ।राजा के इच्छा से सरायकेला भारतीय अधिराज्य शामिल कर जन मानस की इच्छा से ओडिशा राज्य का एक जिला बना कर रखावाते है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023